अच्छी चीज़ है और खास कर सर्कारी लेकिन मैं तुम्हें साथ ले चलूंगा, बहुतही उमदा कोठी है यहां से ज्यादा आराम मिलेगा।

बीबी — मगर मैं अम्मांजान को छोड़ कर वहां न जाऊंगी देखो डेढ़ बरस तुमने मेरी खबर न ली अगर तुम्हारे भाई और अम्मांजान न होतीं तो मैं क्या करती ?॥

अमीरहसन — पिछली बातों का अब ज़िक्र न करो गुज़श्तारा सलवात।

अदा से देखलो जाता रहे गिला दिलका। बस एक निगह प ठैरा है फ़ैसला दिलका॥ जो कुछ हुआ सो हुआ बस गुज़श्तः रा सलवात। कहां तलक कोई रोया करे गिला दिलका॥

बीबी — तुमने अब्बाजान को भी कभी कोई खत नहीं लिखा वह भी सख्त् नाराज़ हैं।

अमीरहसन — प्यारी अब मैं सब से खतायें माफ़ करा लूंगा।

अलगर्ज़ मिस्टर अमीरसन ने अपनी बीबी से ऐसी मीठी २ बातें कीं कि वह बेचारी बिलकुल पिघल गई।

अमीरहसन ने अपनी कर्ज़दारी का किस्सा भी मुख्तसर अल्फ़ाज़ में बयान करके यह ख्वाहिश ज़ाहिर की कि कुछ ज़ेवर हमको अपना देदो हम क़र्ज़ अदा करके तुमको फिर नये बनवा देंगे।

बीबी — आह हा! अब मैं समझी तुम बड़े चालिये हो तुम्हारा आज आने का यही मतलब है, उस हरामज़ादी मेम ने शायद यह भी सिखा दिया।

अमीरहसन — नहीं खुदा की कसम, मेमने नहीं सिखाया तुम्हारी भी क्या बातें हैं (गले में बाहें डाल कर बोसा लेलिया)।

बीबी — खैर तुम्हारा कुछही इरादा हो मैं तुम्हारी फर्माबर्दार बीबी हूं जो कुछ मेरे पास है सब तुम्हारा है जो ज़ेवर तुम्हारे भाई और मां का दिया हुआ है वह तो मैं न दूंगी लेकिन जो ज़ेवर मेरे वालिद का दिया हुआ है वह तुम्हारी नज़र है।

नेकबख्त बीबी ने जो ज़ेवर उसके पास था अपने शौहर के हवाले कर दिया, यह ज़ेवर भी कुछ कम न था। मौलवी सैयद महम्मद अकरामखां बहादुर बहुत मोअज्जिज़ और बहुत मुतमौवल शख्स थे, उन्होंने अपनी बेटी

को हज़ारहा रुपये की दौलत दहेज़ में दी थी जो ज़ेवर कलसुमउलन्निसा बेगम ने अपने शौहर को दिये उनकी क़ीमत अन्दाज़न् तीस हज़ार से ज़्यादा थी ।

बीबी — ख़ुदा के लिये इसबात का किसी से ज़िक्र न करना वर्ना सब औरतें मुझपर हँसेंगी ।

अमीरहसन — मेरी प्यारी मैं तुम्हारा बहुतही शुक्रगुज़ार हूं, हर्गिज़ इसका तज़किरा किसी से न करूँगा और तमाम उम्र तुम्हारी इनायत याद रक्खूंगा ।

सुबह होतेही मि: अमीरहसन कुल ज़ेवर लेकर रवाना स्टेशन हुये, मां भाई बीबी किसी से रुख़सत तक न हुये। तमाम घर को एक अचम्भा था कि अमीरहसन कहां आये और कहां चल दिये, । कलसुमउन्निसा बेगम ने भी ज़ेवर का राज़ किसी से जाहिर नहीं किया और दिलही दिल में अपनी हिमाकत पर रञ्जीदा और ग़मगीन थीं ।

हिदायतरसूल और अमीरहसन दोनों रात की कारगुजारी पर बहुत मह़जूज़ और ख़ुश थे, दिन भी न निकलने पाया था कि हमारे दोस्त रेल पर सवार हो गये थे और नौ बजते२ इटावे पहुँचे ।

नज़ीरहसन बेचारे भाई को ढूंढ़ने स्टेशन पर आये वहां यह सुन कर कि रेल चली गई बकमाल मायूसी व हिरमान लौट आये और अपनी मां से कुल किस्सा बयान किया, वह बेचारी जिस क़द्र ख़ुश थीं उससे ज़्यादा रञ्जीदा हो गईं ॥

मैंने राहत भी अगर पाई तो एक आन की आन ॥ अख़्तरे बख़्त जो चमका भी तो जुगनू की तरह ॥

अट्ठाईसवां बाब ।

ज़ेवर की फ़रोख़्त ।

मिस्टर अमीरहसन ने इटावा पहुँचतेही अपने दोस्त हिदायतरसूल को बुलाया ।

हिदायतरसूल — हुज़ूर ने जिस काबलियत से कल अपना काम अंजाम दिया मुझको इसकी उमेद न थी ।

अमीरहसन — मुझे ख़ुद भी उमेद न थी लेकिन असल यह है कि मेरी बीबी निहायत वफ़ादार नेक और मतीय है अगर ख़ुदावन्दकरीम उस

को वैसाही पनेम एल भी बनाता जैसी वह नेक है तो मुझे फिर दुनिया में किसी चीज़ को ज़रूरत न होती, मगर अफ़सोस ! ।

हिदायतरसूल — खुदावन्द ! कहीं गधा भी घोड़ा बन सकता है, यह ख्वाहिश बेकार और तमन्ना फ़ज़ूल है।

अमीरहसन — मुझे एक बड़ा रञ्ज है, अगर प्यारी मिसेज़ हील सुन पायेगी कि मैं आगरे गया और उनसे नहीं मिला तो निहायत रञ्जीदा और नाखुश होंगी।

हिदायतरसूल — उनसे कौन कहने जायगा मैं तो समझता हूं हुज़ूर को किसो ने आगरे में नहीं देखा।

अमीरहसन — हां मैं भी यही ख्याल करता हूं, रेल पर किसी ने देखा नहीं घर में कोई मिलने आया नहीं। मिसेज़ हील को इस बात की इत्तिला का कोई मौक़ा नहीं है।

हिदायतरसूल — हुज़ूर देखूं तो सही आप क्या २ माल लाये।

अमीरहसन — सब ज़ेवर तो उन्हों ने दिया नहीं सिर्फ़ वही दिया जो उन के बाप का दिया हुआ था और जो ब आसानी छिप सक्ता था।

अमीरहसन ने एक छोटे से बक्स को खोला जिस में हसब ज़ैल ज़ेवर निकले। कड़े तलाई एक जोड़ा, चूड़ियां तलाई छ जोड़े, चूड़ियां जड़ाऊ दो जुफ्त। जहांगीरी हीरों की जड़ी हुई, एक जोड़ा। बालियां व पत्ते हीरे व ज़मुर्रद के जड़े हुये दो जोड़े, आर्सी हीरे की एक अंगुश्तरी ज़मुर्रद व याक़ूत व इलमास २५ जंजीर तलाई एक, झूमर मुरसां एक।

हिदायतरसूल — यह चीज़ें कुछ बहुत कीमती नहीं हैं नग झूठे मालूम होते हैं।

अमीरहसन — क्या बकते हो— मेरे घर में झूठे नगों का क्या तज़किरा।

हिदायतरसूल — बहर हाल मैं लाला भगवानदास के पास जाता हूं और वहां क़ीमत मुनासिब पर फ़रोख्त कर डालूंगा।

अमीरहसन — बेहतर है भगवानदास को यहां ही बुलवा लो— मेरे सामने कुल बात चीत ते हो जाय।

हिदायतरसूल — बहुत बेहतर मैं अभी खुद जाता हूं।

अमीरहसन — मगर यह तो बताओ कि इस रुपये से किस किस का

कर्ज़ अदा करना चाहिये।

हिदायतरसूल — मेरे नज़दीक जिनकी डिगरियां हो चुकी हैं थोड़ा २ उन्हें दे दीजिये और जिनका सख़्त तक़ाज़ा हो कुछ उन्हें दे दीजिये, किसी क़दर रुपया अपने पास भी रखिये जो वक़्त बेवक़्त काम आवे ।

अमीरहसन — वाक़ई यह राय मुनासिब है, किसी क़द्र रुपया अपने पास रख लेना ज़रूरी है।

हिदायतरसूल — हुज़ूर के कपड़े भी पुराने हो चले कलकत्ता या बम्बई से चन्द सूट मंगवाना ज़रूर है।

अमीरहसन — हां यह भी ज़रूरी अम्र है अच्छा तुम जाओ और महाजन को बुला लाओ पहिले यह मुझे मालूम हो ले कि क़िसकद्र रुपया मुझे मिलेगा उस वक़्त उसके खर्च करने का इन्तज़ाम करूंगा अभी कबल अज़ मर्ग वाये बेला से क्या फायदा ?।

हिदायतरसूल रुख़सत हुये और चन्द मिनिट में भगवानदास को लिये हुये आ मौजूद हुये ।

भगवानदास इटावा के महाजनों में कोई सरबर आवुर्दा या मुमताज़ न था आम अन्दाज़ा में चालीस पचास हज़ार रुपया उसके पास ज़रूर था मगर उसकी दियानत और रास्तबाज़ी मशकूक थी, उसका जो कुछ लेन देन और व्यवहार था वह ज़्यादातर छोटे दर्जे के आदमियों में और ख़ास कर यूरेशियन और ईस्ट इन्डियन बाशिन्दगान इटावा में था ।

मिस्टर अमीरहसन के पास भी भगवानदास कभी २ आता था और ग़ालिबन् चार पांच सौ रुपया भी उसका अमीरहसन के जिम्मे चाहिये था। हिदायतरसूल भी भगवानदास से बहुत रस्म था, हिदायतरसूल ने भगवानदास को जातेही मुज़्दा दिया कि आज बहुत कुछ उसके हत्थे चढ़नेवाला है।

भगवानदास — क्यों मियांसाहब मैं आपका मतलब नहीं समझा।

हिदायतरसूल — मेरे साथ चलो अभी मतलब समझजाओगे, मगर यारों को न भूल जाना।

भगवानदास — आज मैं इकादशी बर्त हूँ अगर इस वक़्त माफ़ कीजिये तो बेहतर है।

हिदायतरसूल — ऐसा ग़ज़ब करते हो कोई दूसरा महाजन पहुँच

जायगा तो कुछ माल उड़ा ले जायगा फिर तुम्हें फञ्जी कौड़ी भी हाथ न आयेगी।

भगवानदास — मैं इस वक्त तक आपकी बातें कुछ नहीं समझा, जरा तफसील के साथ हाल बतलाइये तब जवाब दूं।

हिदायतरसूल सुख्तिसर बात यह है कि हमारे डिप्टीसाहब बहादुर के पास कुछ जेवर बिकाऊ है बहुतही बेशकीमत जवाहरात है। चलो औने पौने खरीद लो, मुनाफे में दस फी सदी यारों को देना ज्यादा की तमा नहीं।

भगवानदास — शर्तें आपकी बसरो चश्म मंजूर हैं, मगर यह बतलाइये जेवर आया कहांसे, पीछे से कोई फसाद तो न होगा?।

हिदायतरसूल— अजी तोबा करो लालासाहब फसाद कैसा!।

भगवानदास — जहां तक मुझे मालूम है कल तक डिप्टी साहब के पास कुछ न था, छ: महीने हो गये मेरा रुपया भी अदा नहीं किया और मैं सुनता हूँ कि मेरे भाई सौ पचास और भी हैं।

हिदायतरसूल — यह सच है, कल शब को घर से माल आया है कोई तरद्दुद या इन्तशार का मौका नहीं है।

भगवानदास हिदायतरसूल के हमराह साहब बहादुर की कोठी पर पहुंचा, मिस्टर अमीरहसन ने दफ्तर के कमरे में मुलाकात की।

अमीरहसन — वेल भगवानदास अच्छा है?।

भगवानदास — हुजूर की जान व माल को दुआ करता हूं।

अमीरहसन — भगवानदास! हमारे पास कुछ जेवर आया है उसको हम फरोख्त करना चाहता है अगर तुम्हारो पसन्द हो तो इसका कीमत बताओ।

भगवानदास — कहां है खुदावन्द गुलाम लेने को तैयार है।

अमोरहसन ने कुल जेवर भगवानदासको दिखाये। भगवानदासने बग़ौर देखकर किसी कद्र बे-परवाही से मुँह बनाया।

हिदायतरसूल — क्यों साहब आपने जेवर देख लिये कैसे उमदे टिकड़े हैं।

भगवानदास — हां मैंने देख लिये

मगर मुझे ज़रूरत नहीं मालूम होती।

अमीरहसन — वेल भगवानदास! अगर तुम वाजबी क़ीमत पर ख़रीदोगे तो हम तुम्हारे शुक्रगुज़ार होंगे।

भगवानदास — हुज़ूर सब चीज़ों का क्या लेंगे?।

अमीरहसन — मैं नहीं जानता यह सब चीज़ें बहुत क़ीमती हैं लेकिन आप यह बतलाइये कि आप क्या देना चाहते हैं।

भगवानदास — (सब चीज़ों को उठा उठा कर दुबारा देखने के बाद) दस हज़ार रुपये से ज़्यादा मैं नहीं दे सकता।

अमीरहसन — अच्छा आप सब चीज़ें ले जाइये और दस हज़ार रुपया भेज दीजिये आप को मुझसे किस क़द्र पाना है?।

भगवानदास — (जेब में से एक काग़ज़ निकालकर) छः सौ बयालिस।

अमीरहसन — अच्छा उसको मुजरा करके बाक़ी रुपये दे जाइये।

भगवानदास — बहुत बेहतर ख़ुदावन्द।

भगवानदास कुल ज़ेवर रूमाल में बांध कर और हिदायतरसूल को साथ लेकर अमीरहसन से रुख़सत हुये।

अमीरहसन — रुपया इसी वक़्त भेज देना।

भगवानदास — अभी ख़ुदावन्द।

थोड़ी दूर चल कर हिदायतरसूल ने भगवानदास से गुफ़्तगू छेड़ी।

हिदायतरसूल — कहो कैसे रहे, बख़ुदा कम से कम तीस हज़ार का माल है।

भगवानदास — नहीं जनाब आप के फ़र्माने की बात है मुश्किल से सौ पचास रुपये की गुंजाइश होगी।

हिदायतरसूल — सुनिये जनाब यह चकमे किसी और को दीजियेगा अगर आप बनिये हैं तो बन्दा भी मिल्की है। ठठेरे २ बदलाई नहीं हो सकती एक हज़ार रुपया नगद इस जानिब के हवाले कीजिये वर्ना अभी कुल ख़रीद फ़रोख़्त मटियामेट किये देता हूँ।

भगवानदास — ख़फ़ा न हूजिये शेख़जी, वादा जान के साथ है जो कहा है ज़रूर दूंगा।

भगवानदास ने अपनी कोठी में आ कर बहुत से आदमियों को वह ज़ेवर दिखाये सब ने बहुत तारीफ़ करी और

उनकी मजमूई कीमत पचीस तीस हज़ार अन्दाज़ी। मनोहरदास जो भगवानदास का पड़ोसी महाजन था हीरे की आर्सी पर ऐसा रीझा कि उसी वक़्त सिर्फ़ आर्सी के लिये दस हज़ार रुपया देने पर मुस्तैद था।

हिदायतरसूल — क्यों भाई यह आर्सी क्या करोगे जो इस क़द्र क़ीमत पर ख़रीदना चाहते हो?।

मनोहरदास — आज कल हुज़ूर पुरनूर नीज़ाम हैदराबाद को हीरों का शौक़ हुआ है अभी साठ लाख रुपये को एक हीरा ऊकब जौहरी से ख़रीदा है। यह आर्सी वहीं ले जाऊँगा यक़ीनी बादशाह सलामत को पसन्द आयेगी और जो कहीं मियां आबिद से साहब सलामत हो गई तो इस आर्सी के पचीस हज़ार न लाऊँ तो मनोहरदास नहीं।

भगवानदास — यह चीज़ें डिप्टी साहब की निशानी हैं हमेश: अपने पास रक्खूंगा, फ़रोख़्त के लिये नहीं हैं।

भगवानदास ने नौ हज़ार का नोट और तीन सौ अठावन रुपया नक़्द अमीरहसन के पास अपने मुनीब के हाथ भेज दिये और एक हज़ार रुपये की अशर्फ़ियां हमारे दोस्त मौलवी हिदायतरसूल साहब ने दस्तूरी में हासिल कीं।

मिस्टर अमीरहसन रुपया पा कर इस दर्जा ख़ुश हुये कि गोया यह दौलत छप्पर फाड़ कर उन्हें ख़ुदा ने दी हो, उनकी ख़ुशी हक़ ब-जानिब ही थी। वह बीबी जिसकी बरसों से ख़बर न ली हो जिस से बिला वजह लड़ाई लड़ कर मुफ़ारक़त अख़्तियार की हो ख़ुदबख़ुद उससे इस क़दर कसीर रक़म का मिल जाना कोई मामूली बात नहीं। मिस्टर अमीरहसन को रुपया पाने के बाद पहली फ़िक्र यह पैदा हुई कि उसको ख़र्च क्यों कर करना चाहिये, कभी वह क़र्ज़दारों का तक़ाज़ा याद करके चाहते थे कि कुल रुपया क़र्ज़ में देदें, कभी हिदायतरसूल की नसीहत याद कर के यह इरादा करते थे कि कुछ रुपया इस में से वक़्त बे वक़्त के लिये बंक में जमा कर दें और दो चार जोड़े कपड़े भी इसी में बनवा लें और बाक़ी रुपया क़र्ज़ में दे दें।

हिदायतरसूल — मेरी राय यही है आइन्दह जो हज़ूर की मर्ज़ी।

अमीरहसन — मगर मुझे यह भी

तो नहीं मालूम कि किस किस आदमी का कितना कितना देना है ? ।

हिदायतरसूल — हुज़ूर के पास रद्दियों में बिल ज़रूर पड़े होंगे उस में से मुन्तखिब करके थोड़ा २ रुपया सब को दे देना चाहिये, जिसके पांच सौ हैं उसे अगर सौ दे दीजियेगा तो पांच छ: महीने को तकाज़े से नजात रहेगी।

अमीरहसन — और जिनको डिगरियां हैं उन्हें क्या करोगे ?

हिदायतरसूल — थोड़ा २ उन्हें भी दे देंगे ।

अमीरहसन— अच्छा एक कागज़ पर इसका तखमीना कर डालो कि किस किस को कितना २ दोगे और किस कद्र बंक में वक्त बे वक्त के लिये जमा कर देना चाहिये ।

हिदायतरसूल — मेरी राय यह है कि तीन हज़ार रुपया तो हुज़ूर बंक में जमा कर दें और तीन हजार रुपये में हुज़ूर पांच चार जोड़े उमदा कपड़े बनवा लें; दुनियां में कपड़ों ही की आबरू है और बाक़ी रुपया क़र्ज़ख्वाह मर्दूदों को दे देना चाहिये ।

अमीरहसन — मुझको तुम्हारी राय से इत्तफ़ाक़ है अच्छा मैं इसी वक्त इन्तज़ाम किये देता हूं । अमीरहसन ने तीन हज़ार रुपये के नोट अलहदा बक्स में कपड़ों की खरीदारी के लिये बन्द करदिये और होर एण्ड को० सौदागरान बम्बई को चिट्ठी लिख दी कि तीन चार जोड़े उमदा कपड़े जदीद फ़ैशन के मुताबिक वेल्यूपेबिल भेजदो। यह चिट्ठी डांकखाने भी पहुँचने न पाई थी कि इधर शहर में अमीरहसन की खुदादाद दौलत का क़िस्सा मशहूर हो गया , जितने क़र्ज़ख्वाह थे गाड़ी और इक्कों पर सवार हो २ कर अमीरहसन की कोठी पर चढ़ दौड़े। इस कसरत से उस वक्त क़र्ज़ख्वाह जमा हो गये कि जैसे एक अच्छा खासा छोटा सा मेला हो। अमीरहसन उस वक्त सख्त चौंधिया गये उनसे कुछ करते धरते न बन पड़ता था, क़र्ज़ख्वाहों की यूरिश तकाज़ाकुनिन्दों का रेला और उन लोगों के बिगड़े हुये तेवर देख कर मौलवी हिदायतरसूल तो अपनी कोठरी में जा छिपे, अमीरहसन को इन मामलात में न तजरुबा था और न तहम्मुल बेचारा सख्त घबरा गया उसी वक्त जिस कदर रुपया सामने था बांट दिया और इस बेपर्वाही और बेखब-

री से बांटा था कि बाज़ आदमी तो दस २ बीस २ रुपया ज्यादा मुतालबे से भी ले गये और बाज़ जिनकी डिगरियां हो चुकी थीं और जो सख्त बेमुरौव्वती पर आमादा थे खाली हाथ वापस आये, अजीब हुल्लड़ था जिसके जिसके हाथ जितना आया ले भागा अमीरहसन और हिदायतरसूल के सारे तखमीने किनारे धरे रह गये। जब अमीरहसन ने देखा कि यह हुल्लड़ किसी तरह कम नहीं होता जिस तरह ज़मीन से दीमक या मक्खियां भनकती है उसी तरह कर्ज़ख्वाह उबलते चले आते हैं और उसमें भी चश्म बददूर हर वजह हर किता और हर रंग के; कोई दियासलाई का पैसा मांग रहा है कोई चार सेर गोश्त का मुतकाज़ी है और किसी का दो चार हज़ार का बिल है।

अमीरहसन — तुम लोग क्यों हमारा जान खाता है, निकल जाओ।

एक — हुज़ूर छः महीने हो गये एक बोतल सिरका आया था और दाम नहीं मिले।

दूसरा — हुज़ूर मेरे छः सौ रुपये चाहिये आप ने तो दो ही सौ दिये।

तीसरा — साहब ने कहा था कि दो हज़ार पूरा शराब की कीमत का सर्कार के जिम्मे चाहिये, कम दें तो न लेना मैं पाच सौ कैसे ले जाऊं ?।

अमीरहसन – निकल जाओ हमारी कोठी से, चपरासी सब को निकाल दो, हमारे पास जितना रुपया था हम सब बांट चुका अब इस वक्त कुछ नहीं है।

चपरासी ने बहज़ार दिक्कत सब आदमियों को कोठी से निकाला और चन्द मिनट के बाद अमीरहसन की हालते इज़तराब रफ़ा हुई और हिदायतरसूल फिर बुलवाये गये।

अमीरहसन — तुम भी अजब सख्स हो मुझे इस बला में फँसाकर खुदा जाने कहां चल दिये।

हिदायतरसूल — हुज़ूर मैंने बनियों की बटोर बहुत देखी इस वजह से गायब हो गया अपनी आबरू अपने हाथ है।

अमीरहसन — यह तुम्हारा उज्र फज़ूल है- क्या उनको मजाल फौजदारी करने की थी, एक २ को जेलखाने भेजता।

हिदायतरसूल — कहिये हुज़ूर कितना बचा।

अमीरहसन — अरे मियां इसका हाल न पूछो- एक पैसा नहीं बचा, जो तीन हज़ार कपड़ों के लिये मैंने अलग किये थे वह भी खर्च होगये। इन कम्बख़्तों ने मुझे घबड़ा दिया इस पर भी चन्दलोगों का तक़ाज़ा बदस्तूर बाक़ी रह गया।

हिदायतरसूल — और कपड़ों का आर्डर बम्बई जा चुका है?।

अमीरहसन — हां यह दूसरी मुसीबत है।

हिदायतरसूल— बेहतर वहां तार दे दिया जाय वर्ना कोढ़ में खाज और मुफलिसी में आंटा गीला वाली मस्ल सादिक़ हो जायगी।

अमीरहसन — लेकिन आर्डर देने के बाद फिर मुमानियत करना सख्त् ज़िल्लत और ख़िलाफ़् फैशन् हर्कत है।

हिदायतरसूल — वेल्यूपेबिल पार्सल का वापस करना भी तो बुरा है।

अमीरहसन — हां सच कहते हो अच्छा मैं अभी तार दिये देता हूं, चुनांचे मुमानियत का तार होर एन्ड को के नाम भेज दिया गया।

उन्नीसवां बाब।

ज़ेवर की वापसी।

वह दिन भी इटावे में एक अजीब दिन था, तमाम शहर में हुल्लड़ था कि मिस्टर अमीरहसन ख़ुदा जाने कहां से रुपये लाये हैं जो सबका क़र्ज़ अदा कर रहे हैं, आम और ख़ास सभी लोगों में इसका तज़किरा था, अवाम यही कहते थे कि अमीरहसन जल्द इटावे से जानेवाले हैं, कमिश्नर की खफ़गी को भी इस वाक़ा से शामिल करके सब लोगों ने यह नतीजा निकाला था कि अमीरहसन ज़रूर कहीं न कहीं चले जायँगे।

एक—क्या कहें आज डिप्टीसाहब ने सबको रुपया दिया हमीं नामहरूम रहे।

दूसरा — तुम देर को पहुँचे होगे,, मैं लाला भगवानदास की दूकान पर सुन आया था कि आज डिप्टी साहब कुल हिसाब साफ़ कर देंगे उसी दम पहुंचा और कौड़ी २ चुका लाया।

तीसरा — भई तुम्हीं अच्छे रहे मेरे तो चार सौ चौवालिस पन्द्रह आने थे उसमें सिर्फ़ दो नोट सौ २ रुपये के दस्तयाब हुये, बड़ी रक़म मेहर्बान अली पासों ले गया नहीं तो हम सब आज

बेबाक थे।

एक—आख़िर यह रुपया मियां साहब के पास कहां से आया ? भाई ने दिया न होगा, और किसी से ऐसा रस्म नहीं, और कोई देनेवाला था नहीं, फिर एकबारगी इतना रुपया कहां मिल गया ? ।

दूसरा—क्यों जी भला सब कितना रुपया आज डिप्टी साहब ने क़र्ज़ में दिया होगा ? ।

तीसरा—खुदा झूठ न बुलाये कम से कम बीस हज़ार, और उसपर भी बहुत कुछ देना बाक़ी रह गया ।

एक—डिप्टीसाहब ने थोड़ेही दिनों में बड़ा क़र्ज़ा कर लिया ! ।

दूसरा — कर्ज़ा क्या कर लिया बेचारे को उनके मुसाहबों ने उल्लू बना दिया वह अमीर आदमी अपनी आंखों देखते नहीं इसी से मारे पड़े. दो २ रुपये की चीज़ के पार्सों ने बीस २ बिल में दर्ज किये. बेचारे ने आंख बन्द करके रुपया हवाले कर दिया — यह भी न पूछा कि इस क़दर क़ीमत क्यों बढ़गई ।

एक — हां उनके नौकर चाकरों के भी अजब कारखाने देखता हूं, खूब अलै तल्ले कर रहे हैं जिसे देखो नवाबज़ादाही मालूम देता है ।

दूसरा — मालूम होता है डिप्टीसाहब को उनकी वालिदा ने रुपया भेजा मुझ से आज कई रोज़ हुये ख़ानसामां जो कहते थे कि उनकी मां डिप्टीसाहब को बहुत चाहती हैं और बड़ी अमीर शख़्स हैं ।

तीसरा — खुदा जाने क्या असलियत है मगर आज कोठी पर तमाशा खूब रहा ।

एक — आख़िर को बेचारा ऐसा चौंधिया गया कि किवाड़े बन्द कर लिये मुझे उसवक़्त बड़ी हँसी आई —

अवाम में यह ख़बर तरह २ से मशहूर थी — मगर मोअज़्ज़िज़ गरोह में बहुत जल्द असली हालत ज़ाहिर होगई, यह वाक़ा एतवार को पेश आया इटावेमें बहुत दिनों से यह दस्तूर था कि सबजज साहब के मकान पर एतवार को सबलोग जमा होते थे और दो चार घंटा नशिस्त रहती थी उस रोज़ भी हस्ब मामूल सब लोग तशरीफ़ लाये, बाबूदामोदारदास मुंसिफ़, मुंशी शरीफ़ उल्ला, और मौलवी मुकर्रमहुसैन तहसीलदार उस रोज़ ज़रा सवेरे पहुंचे—

और बाबू माधोदास किसी क़द्र देर को आये।

शरीफ़उल्ला — बाबूसाहब आज आपने बहुत देर की, कहां थे?।

माधोदास— मैं आज अजब झमेले में था — डिप्टी अमीरहसन ने भगवा-दास के हाथ बहुत से ज़ेवरात फ़रोख़्त किये हैं उस में एक आर्सी नायाब है मनोहरदास अपनी तरफ़ उसको खीं-चना चाहता है और मैं जुदा कोशिश कर रहा हूं जनाब ऐसी आर्सी मैंने कभी नहीं देखी, एक रुपये बराबर हीरा उसमें है, सिवा रजवाड़ों के और ऐसी चीज़ें कहीं देखने में नहीं आईं।

मुक़र्रमहुसैन तहसीलदार—क्या अमीरहसन ने ज़ेवरात भी बेचे? वल्लाह यह नया लतीफ़ा सुनने में आया, हीरे वाली आर्सी मैंने देखी है, अमीरहसन के ब्याह में उनकी बीबी को मिली थी। वाक़ई नायाब चीज़ है मगर यह बात मेरी अक़ल में नहीं आती कि अमीर हसन यह सब चीज़ें कहां पा गये।

माधोदास — मैंने ब चश्म ख़ुद सब चीज़ें देखी हैं, कम से कम तीस चालीस हज़ार रुपये का माल अमीरहसन ने दस हज़ार पर गँवा दिया, मुझे पहले ख़बर होती तो अमीरहसन का इतना नुक़सान न होने पाता।

शरीफ़उल्ला — आप को कैसे ख़बर होती, साहब लोगों का भगवानदास ही महाजन है।

सब जज — शायद क़र्ज़ अदा क-रने को ज़ेवर बेचा हो, आज कल उन पर ब कसरत नालिशें हो रही थीं और मैंने तहक़ीक़ सुना है कि कलेक्टर साहब ने उन्हें फ़हमाइश की थी कि जल्द क़र्ज़ अदा कर दो।

तहसीलदार — मुझे रह २ कर यह ताज्जुब आता है कि अमीरहसन ने ज़ेवर कहां पाये, उनकी बीबी से उनसे बहुत दिन हुये मुलाक़ात नहीं हुई, भाई से राह रस्म नहीं, फिर ज़े-वर कहां से उड़ा लाये।

सिकन्दरअली — आज सुबह को मैं स्टेशन पर था मैंने ख़ुद अमीरहसन को आगरे की तरफ़ से आते हुये देखा है, हो न हो अमीरहसन कल आगरे गये हों और वहीं से यह बुर्द मार लाये हों।

तहसीलदार — बाबू साहब ज़रा सब चीज़ें मँगवाइये हम भी देखें, मेरे नज़दीक उनके भाई को भी इस हाल

से इत्तला देनी चाहिये शायद इस में कोई भेद हो ।

सिकन्दरअली—मुझे आपकी राय से इत्तफ़ाक है, गो हम लोग अमीरहसन के अतवार व अफ़आल के सबब से उनसे नाराज हैं लेकिन नज़ीरहसन के हम सब ख़ैरख़्वाह हैं ।

सबजज — भाई साहब मैं अमीरहसन का भी ख़ैरख़्वाह हूँ उनके वालिद माजिद से और मुझ से कदीम मरासिम थे, अफ़सोस इस लौंडे ने उन सब बातों पर खाक डाल दी।

तहसीलदार— जनाब उसी दोस्ती के लेहाज़ से मैं अपने ऊपर फ़र्ज़ समझता हूँ कि नज़ीरहसन को तार देकर मुफ़स्सिल हाल दर्याफ्त करूँ । डिप्टी साहब मेहर्बानी कर के तार लिख दीजिये, अभी भेज दूं ।

डिप्टी शरीफ़उल्ला — बहुत बेहतर यह तार भेज दीजिये । "अमीरहसन ने बहुत कीमती ज़ेवर जिसमें हीरे की आर्सी भी शामिल है दस हज़ार को बेच डाला, मुफस्सिल इत्तला दो" ।

सिकन्दरअली — जब तक तार का जवाब आवे तबतक बाबूसाहब चीजें तो मँगवाइये हम लोग भी एक नज़र देखें ।

बाबू माधोदास ने भगवानदास को मैं कुल ज़ेवरात के बुला भेजा ।

सबजज — अजी लाला भगवान दास साहब, आपने यह माल ख़ूब ही खरीद किया ।

डिप्टीशरीफ़उल्ला — वाक़ई कौड़ियों के मोल पाया, देखिये झूमड़ कितना नफ़ीस है और जहांगीरी कैसी बाँकी है ।

दामोदरदास — सब से उमदा चीज़ आर्सी है जो मेरे ख्याल में इस जवार में बे मिस्ल है ।

तहसीलदार — क्यों साहब कितने को खरीदारी हुई ? ।

भगवानदास — हुज़ूर से क्या चोरी, दस हज़ार रुपये को सब चीज़ें मिली हैं और हज़ार रुपया हिदायत रसूल को दस्तूरी में देना पड़ा ।

तहसीलदार — आह हा ! हमारे दोस्त ने भी अपना हिस्सा ले लिया, वाक़ई बड़ा पाजी शख्स है । अमीरहसन पर जो जो बलायें आईं सब उसी मर्दूद के सबब से ।

सबजज — अगर नज़ीरहसन के जवाब से मालूम हो कि किसी नाजा-

यज़ ज़रिये से यह ज़ेवर अमीरहसन साहब पा गये तो बड़ी दिक़्क़त होगी।

तहसीलदार— कोई दिक़्क़त नहीं बाबू भगवानदाससाहब दाग्रतन् माल मसरूक़ा में दो एक बरस की क़ैद हो जायँगी, बस।

भगवानदास — हुज़ूर मेरी कौन ख़ता, मैंने दाम दिये कुछ मुफ्त तो लिया नहीं।

तहसीलदार — जैसे दाम दिये हैं सब पर ज़ाहिर है अगर इस सब माल के दसही हज़ार दाम हों तो बेशक तुम्हारा कोई क़सूर नहीं, लेकिन अगर जौहरियों ने दूने और तिगुने दाम आंके तो भाई साहब फ़ौजदारी मुक़द्दमे से तुम्हारा छुटकारा मुश्किल है।

शरीफ़उल्ला — और कलक्टर साहब इनसे नाराज़ही हैं पार्साल इनकम टेक्स में इन्होंने बहुत गुल गपाड़ा किया था, कलेक्टर साहब जबही से इनको निहायत मुफ़सिद और बदचलन ख़्याल करते हैं।

सबजज — अच्छा भगवानदास अभी तक हम लोगों को वाक़ई यह ख़बर नहीं कि अमीरहसन का बेचना और तुम्हारा ख़रीदना कहां तक जायज़ है अगर उनके भाई ने यह इत्तला दी कि बग़ैर उनकी इजाज़त और मर्ज़ी के अमीरहसन ज़ेवरात उठा लाये तब तो अलबत्ता तुम्हारे लिये बड़ा बुरा दिखता है।

तहसीलदार — मगर एक शर्त से मैं बचा सकता हूँ, अगर नज़ीरहसन यह माल वापस लेना चाहें और दस हज़ार देने को तैयार हों उस वक़्त भगवानदास कोई इनकार न करें और चुपके से जिसका माल है उसके हवाले कर दें, मैं ज़ामिन होता हूँ कि कोई शख़्स ज़रा भी बखेड़ा न उठाने पायेगा, वर्ना मेरे ऊपर कोई इल्ज़ाम न लगाना मैं बरीउलज़िम्मा होता हूँ।

सबजज — हां बात तो माक़ूल है बाबू भगवानदास को क्या उज़्र हो सकता है।

भगवानदास — और वह एक हज़ार जो दस्तूरी में गये कौन देगा?।

तहसीलदार उसी पाजी से मार जूतों ले लेना।

भगवानदास — वह भला काहे को देने लगा।

सबजज — ख़ैर यह सब बातें नज़ीरहसन के जवाब आने पर तय की

जायगी इस वक्त सिर्फ़ आप का यही इक़रार काफ़ी है कि आप ज़ेवरात की वापसी में ताम्मुल न फ़र्मायेंगे बहालत ज़रूरत।

भगवानदास ने कुछ मुरौव्वत और कुछ ख़ौफ़ से हस्ब मर्ज़ी तहसीलदार साहब इक़रार कर लिया उस वक्त देर बहुत होगई और जवाब तार आने की उमेद न रही सब साहब अपने २ घर गये, वह कुल ज़ेवर मय फ़िहरिस्त सबजज साहब ने अपने यहां रखलिया और यह सलाह करार पाई कि दूसरे दिन सुबह को फिर इस बारेमें गुफ्तगू होगी, सब साहबों ने आने का वादा किया।

नाज़रीन थोड़ी देर के लिये इटावे से आगरे को तश्रीफ़ ले चलिये।

नज़ीरहसन अपने दालान में बैठेहुए हुक्का पी रहे थे, शेरख़ां कोतवाल और चन्द मोअज़्ज़िज़ीन शहर उनकी हमसोहबत थे, नज़ीरहसन ने इलावा दौलत किअपनी काबलियत वज़हदारी नेकचलनी के बदौलत आगरे के मुसल्मानों में चन्दही रोज़ में अपने को बहुत मोअज़्ज़िज़ और मुमताज़ बना लिया था। हमेशा शाम के वक्त दो चार मोअज़्ज़िज़ीन् शहर नज़ीरहसन के यहां ज़रूर तशरीफ़ लाते थे, शेरख़ां कोतवाल से नाज़रीन बख़ूबी वाक़िफ़ हो चुके हैं। वह बड़े सैयद साहब मर्हूम के दिली दोस्त और ख़ैरतलब थे और उसी लेहाज़ से नज़ीरहसन के भी हर तरह यही ख़ैरख़्वाह और दर्दशरीक रहते थे। जिस वक्त का यह तज़किरा है इत्तफ़ाक़ से अमीरहसन का ज़िक्र छिड़ा हुआ था।

शेर ख़ां—यह भी एक अजीब दास्तान आपने फ़र्माया, कल शाम को आये और आजही सुबह चल दिये, क्यों अज़ीज़अज़जान इसमें क्या भेद है?

नज़ीरहसन—मैं ख़ुद हैरान हूं कोई बात समझ में नहीं आई।

शेर ख़ां—आपसे मिले ? ।

नज़ीरहसन—हां पहिले हिदायतरसूल ने मुझसे कहा था कि वह कल शब को न मिलेंगे बल्कि आज सुबह को मुझसे मिलेंगे लेकिन वह जैसेही घर में गये मैं भी अन्दर चला गया ख़ूब बगलगीर होकर मिले, साथ खाना खाया, ग्यारह बजे रात तक बातें करते रहे, सुबह को मैं निमाज़ के लिये उठा उस वक्त मालूम हुआ कि

चारही बजे घर में से निकल कर पा प्यादे स्टेशन को चल दिये मैं उसी वक्त रेलघर गया मालूम हुआ कि रेल जा चुकी थी, मायूसाना वापस आया।

शेरखां — कुछ आपसे मांगा ?।

नज़ीरहसन — कुछ नहीं, बल्कि इस किस्म का कोई तज़किरा भी नहीं किया।

शेरखां — और आप के वालिदा माजिदा से या अपनी बीबी से ?।

नज़ीरहसन — जहां तक मुझे मालूम है किसी से भी कुछ नहीं मांगा।

शेरखां— वल्लाह! यह मामला ज़रा भी मेरी समझ में नहीं आता बग़ैर मतलब वह आये न थे।

सलाम याराने बे गर्ज़ नेस्त॥

और बग़ैर कुछ काम निकाले वह गये भी नहीं, चाहे कोई कुछ कहे मैं नहीं मानता मैंने धूप में बाल नहीं सफेद किये खुदा जाने ऐसे २ मार्के कितने देख डाले।

नज़ीरहसन — जनाब खुद भी मेरा यही ख्याल है लेकिन जहां तक मैंने तहक़ीक़ की कोई तसदीक इन ख्यालात की नहीं होती।

शेरखां— मैं कैसे मानूं, दफतन् उन का आना हिदायतरसूल का साथ होना फिर चुपचाप चला जाना यह सब वाक़ात मुझे यकीन दिलाते हैं कि वह किसी काम से आये और उसे पूरा करके चले गये। वल्लाह आलम बिलसवाब वह काम क्या था रस्ता २ आपको मालूम हो जायगा।

इतने में तारघर के चपरासी ने एक लाल लिफ़ाफ़ा दिया। नज़ीरहसन ने रसीद पर दस्तखत करने के बाद लिफ़ाफ़ा खोला और उसको पढ़तेही एक सकते की हालत में हो गये।

शेरखां — खैरियत, किसका तार है ?।

नज़ीरहसन — तहसीलदारसाहब इटावे का। भाई अमीरहसन यहां से कुछ ज़ेवर ले गये वह दस हज़ार को फ़रोख्त किये और उसमें मशहूर हीरे वाली आर्सी भी शामिल है।

शेरखां — क्यों मैं कहता था न आखिर वही बात ज़ाहिर हुई इसीलिये तशरीफ़ लाये थे।

नज़ीरहसन — मगर घर में किसी को इत्तिला नहीं।

शेरखां — मालूम होता है तुम्हारी

भावज ने दे दिये बिचारी नेकबख्त और सीधी औरत है चकमा खा गई।

नज़ीरहसन — फिर अब क्या सलाह है ज़ेवर बहुत कीमती थे सिर्फ़ दस हज़ार को बिक गये।

शेरखां — मेरी राय है कि घर में अब किसी से इसका तज़किरा भी न कीजिये जब आपकी भावज ने आपसे छिपाया तो अफशां करने में बेचारी को सख्त रंज होगा। चलिये मैं भी आपके साथ चलता हूँ इटावा पहुंचकर हज़ार पांचसौ रुपये ज्यादा देने से भी अगर सब चीज़ें वापस मिल सकें तो वापस ले लीजिये ऐसे कीमती जवाहरात इस तरह ज़ाया होने देना मुनासिब नहीं।

नज़ीरहसन — मैं आपकी राय से मुत्तफ़िक हूँ देखिये अमीरहसन किस२ तरह हम लोगों को तबाह कर रहे हैं।

शेरखां — खुदा का शुक्र कीजिये आप ऐसी हालत में हैं कि अमीरहसन के तबाह किये तबाह नहीं हो सकते लेकिन तहसीलदार बेचारा वाक़ई बड़ा भला मानस है अगर वह इत्तलाय न देता तो कुल जवाहरात कौड़ियों के मोल जा चुके थे।

नज़ीरहसन – मुझे यह ख़ौफ है कि इसकी इत्तला घरमें न पहुंचे वर्ना वालदा और भावज पर सख्त रंजीदा होंगी।

शेरखां — हरगिज़ २ इसकी इत्तला घर में न दीजियेगा वरना आप के खानदान में आजही तफरका पड़ जायगा और इसका नतीजा बहुतही खराब होगा यह सब जेवर वापस लाइये और कहीं अलहदा रखदीजिये जब खुदा मौका मुनासिब दे अपनी भावज को वापस कर देना।

नज़ीरहसन — मगर यह किसको मालूम है कि वह महाजन देही देगा।

शेरखां — तहसीलदार साहब का पूरा दबाव उस पर होगा और यकीनन् पूरा माल वापस मिल जायगा।

नज़ीरहसन ने फौरन् घर में जाकर अपनी मां से एक मुकद्दमे का बहाना करके बाहर जाने की इजाज़त हासिल की और नौ बजे रातको रेलमें मय शेरखां कोतवाल के रवाना इटावा हुये, एक बजे शब को इटावा में पहुँच गये।

शेरखां — कहां ठहरने का इरादा है ?।

नज़ीरहसन — तहसीलदारसाहब

के यहां चलना चाहिये वालिद मर्हूम भी हमेशा वहीं ठहरा करते थे ।

शेरखां — (हँसकर) अमीरहसन के यहां चलो न ।

नज़ीरहसन— अभी नहा, याद तै हो जाने कुल मामलात के मैं उनसे मिलने ज़रूर जाऊँगा और कलेक्टर साहब से भी मिलूंगा ।

नज़ीरहसन ने किराये की गाड़ी पर असबाब रक्खा और गाड़ीवाले को तहसीलदार साहब के मकान पर ले चलने का हुकुम दिया, चन्द मिनिट में तहसीलदार साहब का मकान भी आगया । गो रात ज्यादा गई थी और तमाम सोता पड़ गया था लेकिन नज़ीरहसन को ज्यादा तकलीफ़ नहीं हुई तहसीलदारसाहब के आदमी निहायत खुशसलीका और तमीज़दार थे, उन्हों ने बग़ैर तहसीलदारसाहब को जगाये हुये सब इन्तज़ाम कर दिया मसहरियों पर बिछौने बिछा दिये, लम्प रोशन कर दिया, पेचवान भी तैयार करके सामने रख दिया ।

नज़ीरहसन — अच्छा अब हम सोयेंगे तुम लोग भी सो रहो सबेरे तहसीलदारसाहब से खबर करना और मुझे जगा देना ।

नज़ीरहसन उस रोज़ बिलकुल सोये न थे इस वजहसे लेटतेही नींद आगई कोतवाल भी सो रहे सुबह तड़के तहसीलदारसाहब ज़नानखाने से बरआमद हुये, कमरे में दो आदमियों को सोते देख कर आदमियों से दर्याफ्त किया । मालूम हुआ कि आगरे से कोई साहब तशरीफ़ लाये हैं । तहसीलदार साहब फ़ौरन् समझ गये और नज़ीरहसन को जगाया नज़ीरहसन उठ कर आदाब बजा लाये और निहायत तपाक से बग़लगीर हुये; शेरखां भी बेदार हुये ।

तहसीलदार — क्या अर्ज़ करूँ आप के भाईसाहब ने ऐसे हाथ पैर निकाले हैं कि कुछ कहा नहीं जाता तमाम शहर में थू थू हो रही है ।

नज़ीरहसन — यह भी तक़दीरी मामलात है अफ़सोस, अब्बाजान की रूह को किस क़द्र सदमा होगा ।

तहसीलदार—बुरी सोहबत के येही नतीजे होते हैं अब उनका सँभलना मुश्किल है । हुक्काम उनसे नाराज़, उम्माल उनसे नाख़ुश,. रिआया उनकी ना देहन्दी के हाथों नालां; अहबाब ऐसे अ-

इस से क्या उमेद हो सकती है, देखिये उन्होंने ऐसी अच्छी तालीम पाई और उसका यह असर!।

शेरखां — चारपाये बरो किताबे चन्द। पढ़े से क्या होता है।

नज़ीरहसन— यह ज़ेवर का किस्सा भी अजीब व ग़रीब है आपके तार पहुँचने से पेश्तर हम लोगों को ज़रा खबर न थी मालूम होता है भावज को चकमा देकर उड़ा लाये मगर भावज ने भी किसी से ज़िक्र नहीं किया।

तहसीलदार—वह नेकबख्त शौहरपरस्त खान्दानी औरत क्योंकर यह किस्सा ज़बान पर लाती, सद रहमत उस बीबी को। देखिये आप भी इशारतन् या किनायतन् इसका तज़किरा न कीजियेगा वर्ना उस बिचारी को बहुत रंज होगा एक तो योंही आमाजगाह मुसायब हो रही है उस पर यह सद्मा और भी उसको हलाक कर देगा।

नज़ीरहसन — यह फर्माइये वह ज़ेवरात कहां है और उन के मिलने की क्या शकल है?।

तहसीलदार— वह सब ज़ेवर अब तक महफूज़ हैं कलही सुबह को तो फरोख्त हुये थे अगर आप खरीदना चाहें तो दस हज़ार रुपया दे कर ले लीजिये।

नज़ीरहसन— मैं आपकी शफ़कत का दिल व जान से शुक्रिया अदा करता हूँ वह ज़ेवर बहुत कीमती और नायाब हैं मैं उनको किसी तरह ज़ाया न होने दूंगा मेहर्बानी फ़र्मा कर महाजन को बुलवाइये मैं अभी दस हज़ार रुपया दे कर ज़ेवरात वापस ले लूंगा।

तहसीलदार — एक हज़ार रुपया हिदायतरसूल ने महाजन से कमीशन लिया है उसकी बाबत शायद तकरार पड़ेगी।

इन्सपेक्टर — उससे ज़रूर वापस कराना चाहिये, हिदायतरसूल एकही मर्दूद है खुदा उसको मौत भी नहीं देता।

तहसीलदार — मुझे उम्मेद नहीं कि हिदायतरसूल से रुपया वसूल हो सके अगर महाजन ज़िद करेगा तो यह रुपया भी ज़रूर देना पड़ेगा।

नज़ीरहसन — बर सरे फ़र्ज़न्द आदम हरचे आयद बगुज़र्द — यह भी सही, अगर खरीदार ज़ेवर की वापसी से इनकार करे तब भी हम

लोग कुछ नहीं कर सकते यह फ़क्त आपकी इनायत है कि ज़ेवर वापस मिलने की उम्मैद है।

तहसीलदार — भाई मैंने तुम्हारे अब्बाजान मर्हूम के ख्याल से हर तरह अमीरहसन की खैरख्वाही की और उनकी नेकनामी व इज़्ज़त अफ़ज़ाई के लिये कोई दकीक़ा उठा नहीं रक्खा मगर वह किसी तरह अपने अफ़आल से बाज़ नहीं आते, न अच्छी तरह अपना काम करते हैं। कमिश्नरसाहब इस मर्तबा बहुत नाराज़ गये देखिये इन सब बातों का क्या नतीजा निकले।

नज़ीरहसन — "ब आब जमज़म व कौसर सफ़ेद न तवां कर्द ॥ गलीम बख़्त कसे रा कि बाफ़तन्द सियाह"॥

तहसीलदार — यह सब बुरी सोहबतों के नतीजे हैं। अफ़सोस बाप के मरतेही बदमाशों ने अमीरहसन को घेर लिया!!

नज़ीरहसन और तहसीलदारसाहब मय शेरखां उसी वक़्त सबजज साहब के मकान पर तशरीफ़ लेगये और भगवान दास भी बुलवाया गया। तहसीलदार साहबके दबावसे भगवानदास ने जेवर की वापसी में कुछ भी पसोपेश नहीं किया सिर्फ़ एक हज़ार रुपया कमीशन का झगड़ा था, तहसीलदार साहब को इनकार था और महाजन को इसरार। भगवानदास कहता था कि उसका इसमें क्या कसूर, उसे क्या खबर थी कि ज़ेवर किसका है और क्योंकर आया है। सबजजसाहब भी इस बारे में भगवानदास के सिफ़ारशी थे।

नज़ीरहसन— लेकिन इसका आपके पास क्या सबूत है कि वाक़ई एक हज़ार रुपया कमीशन दिया गया।

भगवानदास — मेरे पास कोई रसीद नहीं है लेकिन हिदायतरसूल से आप दर्याफ़्त कर सकते हैं मुझे यक़ीन है कि वह इनकार न करेंगे।

तहसीलदारसाहब ने उसी वक़्त हिदायतरसूल के पास भगवानदास के तरफ़ से एक आदमी भेजा हिदायतरसूल उस वक़्त इत्तफ़ाक़िया शहरही में मौजूद थे फ़ौरन् चले आये।

भगवानदास — क्यों जनाब मौलवीसाहब! जो ज़ेवर डिप्टीसाहब ने आपके ज़रिये से मेरे पास फ़रोख़्त किये उसमें आप ने मुझ से कमीशन लिया या नहीं? और लिया तो किस क़द्र?

हिदायतरसूल—लालासाहब कुछ आप भंग खा गये हैं खैरियत तो है कमीशन कैसा ?।

भगवानदास — मियांसाहब ऐसा गुस्सा न कीजिये एक हजार रुपया नक्द आपने मुझसे लिया है।

हिदायतरसूल — लानत अल्ला अ-लल काज़बीन अस्तगफुर अल्ला ! मुझ से ऐसी निमकहरामी मुमकिन न थी मेरे आका तो अपनी बीबी का ज़ेवर बेचें और मैं उसमें दस्तूरी खाऊं तोबा तोबा।

नज़ीरहसन — देखिये तहसीलदार साहब मियां हिदायतरसूल तो इन्-कार कर रहे हैं अब आप क्या कहते हैं ?।

भगवानदास— कहना क्या है मेरे पास सबूत मौजूद है।

हिदायतरसूल — क्या सबूत है आपके पास ?।

भगवानदास — मेरे दोनों मुनीब उस वक्त मौजूद थे और इलावा इसके बही खाते में भी यह रकम दर्ज है।

हिदायतरसूल— आप ज़रा समझ बूझ के बात कीजिये मैं इसी वक्त आप के ऊपर अज़ीलह हैसियत उर्फी की नालिश दायर करता हूँ सब शेखसीयत धरी रह जायगी हम इस वज़ा के आ-दमी हैं कि दस्तूरी लेते फिरे ? एक तो आपने हमारे अल्हड़ और नादान दो-स्त को ठग लिया और उस पर तुर्रा यह कि मुझ पर झूठा इलज़ाम लगाते हो, खैर दीदा ख्वाहद शुद। याद र-खना मुझ पर इत्तिहाम लगाने से कुछ आप को फायदा न होगा। नंगी तल-वार और मैं लागर। क्या निचोड़ेगी क्या नहायगी।

भगवानदास— जनाब अब दुनियां में ईमान नहीं रह गया, सच है इस कलजुग में जो न हो सो थोड़ा है। तहसीलदारसाहब मैं बेटे की कसम खाकर कहता हूं देखिये बेटे से ज्यादा कोई प्यारा नहीं होता। इस शख्स ने मुझसे एक हजार रुपये की अशर्फियां लीं।

हिदायतरसूल — यह देखिये "द-रोग़ गोरा हाफ़िज़ नबाशद" अभी रु-पया था अब अशर्फी हो गई, वाह २ और देखिये लालासाहब ज़रा ज़बान सँभाल कर बातें कीजिये तो मकार का बन्दा आदी नहीं। हिदायत-रसूल ने इस कद्र बर आफरोख्ता बेह-

रा बनाया कि सब लोग डर गये रफ़ा ग्रर के ख्याल से हिदायतरसूल को वहां से रुखसत कर दिया नज़ीरहसन और तमाम हाज़रीन जलसा को भगवानदास के बयान का कामिल यक़ीन था सिर्फ़ तहसीलदारसाहब रुपया कम करने की ग़र्ज़ से कुछ शुबहात पैदा कर रहे थे ।

सबजज — लालासाहब मेरी यह राय है कि 'जाता धन देखिये तो आधा दीजै बांट' यह एकहज़ार रुपया गिर गया, आप बतौर खुद यह ज़ेवरात सैयद नज़ीरहसन साहब को न देंगे तो वह बज़रिये अदालत ले सकते हैं उसवक्त भी आप को दस हज़ार मिलेंगे और नज़ीरहसन साहब अब भी आप को दस हज़ार देते हैं, रहा दस्तूरी वाला झगड़ा मेरी राय है कि पांच सौ रुपया आप छोड़ें और पांचसौ नज़ीरहसन दें हिदायतरसूल से एक कौड़ी वसूल नहीं हो सकती बक़ौल उसी के नंगी तलवार और वह लागर क्या निचोड़ेगी क्या नहायगी ।

नज़ीरहसन—मुझे आप के तामील इर्शाद में ज़रा भी उज्र नहीं मैं पांच सौ रुपया और देने को तयार हूं ।

भगवानदास — सर्कार मेरा बड़ा नुकसान हो रहा है कुछ और ज्यादा दीजिये ।

सबजज अब और एक पैसा ज्यादा नहीं मिल सकता ।

अलगर्ज़ दस हज़ार पांच सौ देकर सैयद नज़ीरहसन ने अपनी भावज का खोया हुआ ज़ेवर वापस पाया ।

तहसीलदार — अज़ीज अज़जान मेरी यह राय है कि ज़ेवर आप अपनी भावज को वापस देदें वर्ना इसमें आपकी बड़ी बदनामी है ।

नज़ीरहसन — आप मुतमैयन रहें मैं अपनी भावज पर दस हज़ार क्या चीज़ है दस लाख निसार करने को तयार हूं ।

शेरखां — चलिये ज़रा भाई साहब से तो मिल लीजिये ।

नज़ीरहसन — बहुत बेहतर, मगर इन ज़ेवरात का तज़किरा न कीजियेगा ।

तहसीलदार — हर्गिज़ नहीं ।

तहसीलदार और सैयद नज़ीरहसन मय इन्स्पेक्टर शेरखां के अमीरहसन की कोठी पर पहुंचे बाग़ की आरास्तगी और नोकरों की कसरत और कोठी

की शान व शौकत ने दूरही से नज़ीरहसन को बतला दिया कि उन के भाई किस ठाट से बसर कर रहे हैं उस वक्त तहसीलदार साहब और नज़ीरहसन किराये की गाड़ी पर सवार थे फाटक ही पर कोचवान ने गाड़ी रोकी।

नज़ीरहसन — अन्दर क्यों नहीं चलता ?।

कोचवान — हजूर अन्दर गाड़ी ले जाने का यहां हुक्म नहीं, एक मर्तबा मैं एक रईस को ले गया था साहब ने मुझे मारते २ कोड़ा और रईस की जो गत हुई बयान के लायक नहीं।

नज़ीरहसन — खैर भाई यहीं गाड़ी रोक ले और जाकर खबर कर कि आप के भाई आगरे से आये हैं।

नज़ीरहसन से पेश्तर मियां हिदायतरसूल पहुँच गये थे उन्होंने नज़ीरहसन की आमद और शेवरात का किस्सा बखूबी बयान कर दिया था, हां अपनी दस्तूरी का मज़मून ग़ायब कर दिया था चपरासी ने खबर दी कि आगरे से सैयद नज़ीरहसन आये हैं।

अमीरहसन — क्यों भाई हिदायतरसूल क्या राय है मिलना चाहिये या नहीं।

हिदायतरसूल — मेरी यह मजाल है कि हुजूर को मना करूं कि अपने भाई से न मिलें, मगर मुझे तहकीक मालूम हुआ है कि सैयद नज़ीरहसन का इरादा दो तीन महीने जम कर यहां रहने का है अगर इस बीच में मिसेज़ होल आईं तो अलबत्ता हुजूर को दिक़्क़त होगी।

अमीरहसन — दिक़्क़त, ! सख्त तकलीफ होगी बेहतर यही है कि मैं मुलाकात से इनकार करूं वर्ना हज़ारों बखेड़े पैदा होंगे।

हिदायतरसूल — 'मर्ज़ी मौले, अज़ हमा औले'।

अमीरहसन — चपरासी कह दो हमको इस वक्त फुर्सत नहीं।

चपरासी — हुजूर के भाईसाहब तशरीफ लाये हैं।

अमीरहसन — क्या बकता ! है जो हम हुक्म देता है कह दो।

चपरासी ने बाहर निकल कर खुद गाड़ी के करीब जाकर मोअद्दब सलाम किया और अपने आक़ा का हुक्म सुनाया।

नज़ीरहसन — (हँस कर) फुर्सत

नहीं, खैर हमारा सलाम कह देना और यह कह देना कि मैं खुदानख्वास्ता कोई नौकरी माँगने नहीं आया था।

चपरासी — हुजूर चल कर हम लोगों के मकान में ठहरें।

नज़ीरहसन — मुझे यहां मकान की कमी नहीं, मैं कल शब ही से तहसीलदारसाहब का मेहमान हूं।

तहसीलदार — देखा आपने, यह हालत हो रही है।

शेरखां — अल्ला रहम करे, और कुल आफ़ात से महफ़ूज़ रक्खे।

नज़ीरहसन — मैं इस वक्त आगरे वापस जाऊँगा क्योंकि वाल्दह को सख्त इन्तज़ार होगा।

तहसीलदार — हमारे कलक्टर साहब से जरूर आप को मिल लेना चाहिये वह आपके वालिद माजिद के बहुत कदीम दोस्त हैं।

नज़ीरहसन — मुझे खुद उनसे मिलने का इश्तियाक है मगर इस वक्त शायद मुलाकात मुमकिन न हो क्योंकि देर हो गई है।

तहसीलदार— यही उनकी मुलाकात का वक्त है और बँगला भी नज़दीक है चलिये मिल लें।

थोड़ी देर में कलक्टरसाहब के बँगले में गाड़ी पहुंची इत्तलाय होतेही कलक्टरसाहब निकल आये और निहायत इखलाक से सैयद नज़ीरहसन साहब को अन्दर ले गये।

कलक्टरसाहब— आप अपने भाई से मिले ? ।

नज़ीरहसन — जी नहीं।

तहसीलदार — वहीं से हम लोग लौटे हुये आरहे हैं। साहब बहादुर ने काले भाई से मिलना गवारा नहीं किया।

कलक्टरसाहब— आपसे मुलाकात नहीं की बड़े ताज्जुब की बात है !।

नज़ीरहसन — मुझे कुछ भी ताज्जुब नहीं उनको इस क़द्र हम लोगों से नफ़रत हो गई है कि सूरत देखना भी नागवार है।

तहसीलदारसाहब ने बावजूद नज़ीरहसन को मुमानियत के ज़ेवरात की खरीद फ़रोख्त का किस्सा भी कलक्टर साहब से कह दिया।

कलक्टर — मुझे ये हालात सुन कर निहायत रंज हुआ मैं अमीरहसन को बवजह आपके वालिद के बहुत अ-

ज़ीज़ रखता हूं । मैं खुश हूं कि वह किसी तरह शराबी या बदचलन नहीं हैं मगर उनकी किब्र खुदपसन्दी और बदइख़लाकी की आम शिकायत है आपके साथ उनका बर्ताव बहुत ही बुरा हुआ और मैं इसको हर्गिज़ माफ़ नहीं कर सकता । मैं अमीरहसन से उस वक़्त तक हर्गिज़ न मिलूंगा जब तक वह आप से माफ़ी न हासिल कर लें ।

नज़ीरहसन — मेरी मँशाय उन्हें किसी तरह रंजीदा करने की नहीं है आप माफ़ करें और मेरी वजह से उन को नाशाद न करें ।

कलक्टर — नहीं सैयदसाहब यह बहुत सख़्त बात है इसमें सिर्फ़ उन्हीं की नहीं बल्कि मेरी भी बदनामी है, मेरे मुतवस्सिल को इस दर्जा फरज़न बेसामान नहीं होना चाहिये ।

नज़ीरहसन रुख़सत हुये और मिस्टर माबिल ने अमीरहसन को हस्ब ज़ैल चिट्ठी लिखी ।

माइ डीयर सर :—

आपने आज अपने भाईसे बहुत बुरा बर्ताव किया । यह ज़िल्लत सिर्फ़ उनकी न थी बल्कि तुम्हारे नामवर बाप की भी थी और जो तुमको कभी गवारा नहीं करनी चाहिये थी । मैं आज की तारीख़ से कोई सोशल तालुक आप से नहीं रखना चाहता जब तक आप अपने भाई से माफ़ी न हासिल कर लें, मैं शुक्रगुज़ार हूंगा अगर आप मेरी मुलाकात से एहतराज़ करें ।

आपका सादिक माबिल ।

सैयद अमीरहसन ने इस ख़त को पाकर हिदायतरसूल से फिर मशविरा किया ।

हिदायतरसूल — हुज़ूर "जान जाये कि रहे अपनी मगर बात रहे ॥ ग़ैर से रस्म हो या हमसे मुलाकात रहे" । कलेक्टर हो या कमिश्नर ख़ानगी मामलात में किसी का कुछ अख़्तियार नहीं और हुज़ूर किस कलेक्टर से काम हैं ।

अमीरहसन — बेशक मिस्टर माबिल की यह हरकत मुझे सख़्त नापसन्द हुई, उन्होंने मुझे नौकरी दिलाई है कुछ मोल नहीं ले लिया ।

हिदायतरसूल — हुज़ूर इसका साफ़ जवाब लिख दें कि मैं ऐसी दस्तअन्दाजियों का आदी नहीं हूं 'गुर्बा कुश्तन रोज़ औव्वल ।'

अमीरहसन — बेशक बहुत होगा तबदीली हो जायगी और कलक्टर साहब करही क्या सकते हैं ।

अमीरहसन ने हस्ब ज़ैल जवाब लिखा ।

माइ डीयर सर :—

मैं आपके खत पर इज़हार इस्तेजाब करता हूं खानगी मामलात में आपको दस्तअन्दाज़ी का कुछ हक नहीं, मेरे भाई ने मेरे साथ जो बदसलूकियां की हैं उनके हालात यहां दर्ज़ करना ज़रूर नहीं । आप ख्वाह मुझसे मिलें या न मिलें मैं अपने भाई से कोई तालुक नहीं पैदा कर सकता, मेरे भाई की निस्बत एक उर्दू शायर का यह शैर निहायत मौज़ूं है कि—

भाग इन बुर्दों फरोशों से कहां के भाई ॥ बेचही डालें जो यूसफ सा बिरादर पायें ॥

आपका वफादार अमीरहसन ।

———o———

तीसवां बाब ।

शादी या खाना बर्बादी ।

दुनियां दो चार महीने और बूढ़ी हो गई; मिस्टर अमीरहसन अपने कलक्टर से भी मायूस होगये और क़तई मिलना तर्क कर दिया, हिदायतरसूल अलबत्ता बदस्तूर मुसाहबत में मौजूद थे और मिस्टर टामी वग़ैरह से रस्म व राह में रोज़ बरोज़ तरक्की थी । मिसेज़ होल से भी अमीरहसन की मोहब्बत बढ़ती जाती थी, । "और उलफ़त बढ़ गई अब उस सितम ईजाद से । एक नई लज़्ज़त जो पाई दिल ने अब बेदाद से ॥ ग़ैर को अन्दोह फुर्क़त अब मुबारक हो कि यां । ध्यान जाताही नहीं उसका दिले नाशाद से ॥ इश्क में यह मरहला भी पेश आता है ज़रूर । किसको उम्मेदे असर है नाला ओ फ़र्याद से ॥ हैं वह काबू में अदू के बस यही तदबीर है । जायें उसके पास नालां यार की बेदाद से ॥ वह कतले तेग़ा है मैं कुश्ता अबरूये यार । यार बेजा मुझको निस्बत देते हैं फर्हाद से॥ छेड़ते क्यों हो मुझे जाने दो इन बातों को बस । तुम भला जाते रहोगे शेफ़ता की याद से " ॥

उस रोज़ अमीरहसन को मिसेज़ होल की याद सख्त बेचैन कर रही थी कभी वहशत में पुरानी चिट्ठियां बक्स से निकाल २ पढ़ते थे कभी तनहाई में मिसेज़ होल की याद कर

की रो देते थे ।

हिदायतरसूल — आज हुजूर के दुश्मन बहुत मग़मूम हैं हो न हो कोई बात ऐसी पेश आई है जिससे सर्कार उदास हैं ।

अमीरहसन — क्या कहूँ कुछ कहा नहीं जाता। बेकहे भी रहा नहीं जाता॥ कुछ इन्तज़ार मुझको न मैं कान सार का । नाचार हूं कि हुक्म नहीं कश्फ़ राज़ का ॥ फँसने के बाद भी है वही दिल शिगुफ्तगी। क्या खूब चाल है निगहे जांनिवाज़ का ॥ तकूये मीर आशार है अस्मत सरिश्त दोस्त। फिर मुझसे कौनसा है सबब एहतराज़ का ॥

हिदायतरसूल — खुदावन्द नयामत, अब मैं हुज़ूर की परेशानी का सबब समझ गया; हुजूर इस क़द्र परेशान न हों, मेमसाहब खुद दिलो जान से आप पर शैदा हैं इस वक्त तक आपही ने देर की वर्ना अब तक कब की मेमसाहब आप के घर में होतीं ।

अमीरहसन— "हाये उस बर्क़ जहां सनौव्वर प आना दिलका। समझे जो गर्मीय हँगामां जलाना दिलका ॥ हम से पूछे कि इसी खेल में खोई है उमर। खेल जो लोग समझते हैं लगाना दिल का ॥ किस्तरह दर्द मोहब्बत मैं जताऊँ उसको । भेद लड़कों से नहीं कहते हैं दाना दिल का ॥ हम भी क्या सादा हैं क्या २ हैं तवक्का उस से । आज तक जिसने ज़रा हाल न जाना दिल का ॥ शैफ़ीता ज़ब्त करो ऐसी है क्या बेताबी । जो कोई हो तुम्हें अहवाल सुनाना दिल का " ॥

हिदायतरसूल — मेरे नज़दीक हुजूर का शिकवयेयार महज़ फज़ूल है जब खुदा के फज़ल व कर्म से आपके ऊपर खुद आपका माशूक फ़िदा है तो फिर यह इज़तराब किस लिये ? बकौल शख्से —

बहम्दुल्ला मोहब्बत दोनो जानिब से बराबर है । वह हमपर जान देते हैं जो अपना दम निकलता है ॥

उस रोज खुद बखुद मिस्टर अमीरहसन मिसेज़ होल के लिये बेचैन थे । उनका मज़बूत इरादा था कि कचहरी से लौट कर आगरे जायें और मिसेज़ होल से मिल कर अपना दर्द दिल कह सुनायें । इतने में तारघर के चपरासी ने वह पैगाम दिया जिससे नाज़रीन वाकि-

फ़ होचुकी हैं, अमीरहसन उसको पढ़ते ही फर्त मसर्रत से उछल पड़े और जवाब लिखने के बादही सामान आमद में मसरूफ़ हुये। हिदायतरसूल पर सख्त ताकीद थी कि तमाम बँगला हाता और बाग साफ शफ़ाफ़ और आरास्ता व पैरास्ता किया जाय, नौकरों पर भी तकाज़ा था कि नई उर्दियां पहन कर ज़र्क वर्क हो रहें।

अमीरहसन ने उसी वक्त समझा दिया कि मिसेज़ह्वील की आमद इस मर्तबा मामूली नहीं है बल्कि हमेशा के लिये इनके जान व माल की मालिक बने को आ रही हैं। अमीरहसन ने अपने खास एहतमाम से मिसेज़ह्वील के लिये एक कमरा आरास्ता कराया, निहायत नफ़ीस और दिलफ़रेब तस्वीरें कीमती लम्प व खुशरंग पर्दे और तमाम ज़रूरी सामानों से वह कमरा आरास्ता कियागया। अमीरहसन जानते थे कि मिसेज़ह्वील खुद किस दर्जा बासलीका और शौकीन है इस वास्ते उन्हों ने उन्हीं के मज़ाक़ के मुताबिक कमरे को सजवा दिया, वह दिन अमीरहसन को ज़िन्दगी में अजब मसर्रत इश्तियाक और इज़तराब का था उस रोज़ कचहरी जाना उन्हें सख्त नागवार था मगर खज़ाने के काम से मजबूरी थी, डिप्टीकलेक्टरों को अगर कोई काम पाबन्दी की जञ्जीर में जकड़नेवाला है तो खज़ाना। तातील इसमें नहीं मिलती वक्त मुकर्रर पर कचहरी जाने को उसमें पाबन्दो, वक्त से पहले कचहरी से उठ नहीं सकते। अलगर्ज़ हरतरह पाबन्दी के सिवा आज़ादी नसीब नहीं होती और उस पर तुर्रा यह कि इमतिहान अलग देना पड़ता है। मिस्टर अमीरहसन को खज़ाने का काम सख्त नापसन्द था उस रोज़ और भी उनको तनफ़्फ़ुर हुआ। हां एक फ़ायदा ज़रूर था, अंगरेज़ी सौदागरान व मनेजरान बंक मोहतमिमखज़ाना का बमुकाबला दूसरे डिप्टीकलेक्टरों के किसी क़दर ज्यादा एतबार करते हैं, इस वजह से अमीरहसन को कर्ज़ में थोड़ी आसानी थी और खज़ांची से भी कर्ज़ मिलने में बहालत चार्ज खज़ाना दिक्कत नहीं होती उसी बाइस से अमीरहसन ने खज़ाने के बोझ को अपने सिर से नहीं हटाया। उस रोज़ हमारे दोस्त मामूली काम को ब कमाल उजलत अंजाम देकर तीनही बजे भागआये। ग्यारह बजे

रात को आगरे से पैसेञ्जर ट्रेन आने वाली थी उसी में मिसेज़ जैन की आमद थी, अमीरहसन ने बहुतही पुर तकल्लुफ़ डिनर का हुक्म दिया, खानसामां खिदमतगार गो दिल में मेमसाहबा की तशरीफ़ आवरी से सख्त नाखुश थे मगर बज़ाहिर निहायत हंसी खुशी इन्तजाम व एहतमाम में मसरूफ़ थे।

अमीरहसन—खानसामा! कल से सब हुक्म मेमसाहब का हो जायगा हमारा कुछ हुकुम नहीं रहेगा।

खानसामा—हुज़ूर को मेमसाहबा का आना खुदा मुबारक रक्खे, मगर अभी तक हुज़ूर की तनखाह नहीं बढ़ी।

अमीरहसन — तुमको इस बेहूदा बात से क्या मतलब है?।

खानसामा — मतलब यही है कि हुज़ूर का खर्च बढ़ जायगा अभी सर्कार तनहा है तब तो खर्च चलता नहीं मेमाना घर का बार कैसे उठेगा।

अमीरहसन — चुप रहो, ऐसी बेहूदा बात मत बको।

हिदायतरसूल — आज तो हुज़ूर के मिज़ाजही नहीं मिलते, खुदा मुबारक करे।

अमीरहसन — भई मुझे बेहद मसर्रत है देखो आज सुबह को मैं किस कदर बेचैन था, ऐन वक्त पर जज़्ब दिल काम कर गया।

हिदायतरसूल — हुज़ूर खुशनसीब है, जब तकदीर दुरुस्त हुई सब काम सुधर जाते हे बकौल शख्से —

हमनशीं जब मेरे ऐयाम भले आयेंगे। वे बुलाये हुये वह आप चले आयेंगे॥

अमीरहसन — तकदीर वकदीर का तो मै कायल नहीं मगर बात यह है कि—

यां के आने में जो उनको नहीं तमकीं का खयाल। गालिबन् कुछ तो हुआ है मेरी तस्कीन का ख्याल॥

हिदायरसूल — फिर तो कल आमिनत बिल्लाह तकिया हो जायगा।

अमीरहसन — हां उन्होंने लिखा तो यही है और मैने मंजूर भी कर लिया है मगर यह तरद्दुद है कि निकाह क्योंकर होगा।

हिदायतरसूल— हस्ब कायदा अहल इसलाम। मैं काज़ीसाहब को बुला लाऊंगा निकाह हो जायगा।

अमीरहसन — हां यही मेरी भी

राय है क्योंकि निकाह शरीयत इस्लाम के मुताबिक होना चाहिये। इसीतरह लीवरपूल में मिस्टर महम्मद अहमद का हुआ था।

हिदायतरसूल — मेरे नज़दीक हुज़ूर को साहब कलक्टर व दीगर यूरोपियन हुक्काम को भी नवेद भेजकर बुलाना चाहिये और इस मौके पर हिन्दुस्तानी रईसों का भी बुलाना खिलाफ़ मसलहत नहीं आइन्दा जो आप की राय हो।

अमीरहसन — अजी नहीं, भीड़ करने से क्या हासिल ? चुपके से निकाह हो जायगा फिर देखा जायगा।

खुदा २ कर के वह वक्त भी आगया और स्टेशन रेल पर मिस्टर अमीरहसन अपनी माशूका को लेने गये। थोड़ी देर में रेल आई औव्वल दर्जा की गाड़ी में निहायत कीमती रेशमी पोशाक पहने हुये मिसेज़ होल रौनक अफरोज़ थीं। अमीरहसन ने बहुत ही खलूस दिल और जोश इश्तियाक़ से मिसेज़ होल को गाड़ी से उतारा, हाथ के एवज़ दिल मिलाया।

मिसेज़ होल हर्चन्द अपनी को मसरूर व शिगुफ्ता बनाने की कोशिश कर रही थीं, लेकिन अन्दर ही अन्दर दिल मग़मूम और रंजीदा होरहा था। होंठ गो मिसेज़ होल के ख्याल में तरो ताज़ा हों लेकिन दर अस्ल खुश्क हो रहे थे। जिसने उनको दो रोज़ पहले देखा होगा वह कह सकता है कि दो-ही दिन में मिसेज़ होल में इस कदर इनकिलाब हो गया कि जैसे वर्सों की बीमारी ने परेशान कर रक्खा हो।

अमीरहसन देखते ही भांप गये, उसवक्त इस बारे में कोई गुफ्तगू नहीं हुई। किराये की गाड़ियों पर असबाब रक्खा गया और मिस्टर अमीरहसन अपनी माशूका को टम २ में बैठा कर घर लाये, आते ही खाने का हुक्म दिया।

मिसेज़ होल — आह हा तुमने इस दर्जा तकलीफ़ किया मैं तुम्हारे घर मेहमान नहीं आई हूं।

अमीरहसन — प्यारी ! तुम मेरी जानोमाल की मालिक बनने आई हो मैंने सब नौकरों को आज सुबह ही से यह खुशखबरी सुना दी है।

मिसेज़ होल — फिर तुमने क्या इन्तज़ाम किया, किसके रूबरू शादी होगी ?।

अमीरहसन — दो तदबीरें हैं एक

यह कि काज़ीसाहब को बुला कर खुफिया निकाह हो जाय दूसरे यह कि मैं अपने सब दोस्तों को इत्तला दूं और धूम धाम से अक्द हो।

मिसेज़ होल—देखो यह अक़द तुम्हारा भी पहला नहीं और मेरा भी पहला नहीं, ऐसी धूमधाम लड़कपन ही के ब्याह में ज़ेबा होती है मेरे नज़दीक ख़ुफ़ीया तौर पर अक्द होना चाहिये।

अमीरहसन — बहुत बेहतर हिदायतरसूल कल सवेरे जाकर काज़ी साहब को बुला लायेंगे। प्यारी तुम उदास बहुत हो क्या कुछ बीमार हो? मैं स्टेशनही से तुम्हें देख कर मुतरद्दुद हो रहा हूं।

मिसेज होल — हां चन्द रोज़ से तुम्हारे फ़िराक़ में सख्त रंजीदा थी, खाना पीना बिल्कुल छूट गया था, शर्म अफशाय राज़ की माना थी दर्द दिल इज़हार का मुनकाज़ी। आख़िर शर्मकी एकभी न चली और बेहया होकर कल मुझे तार भेजना पड़ा। प्यारे जो तुम्हें चाहिये था मैंने किया।

अमीरहसन — गुज़श्तारा सलवात, अब जब तक हयात मुस्तार बाक़ी है हम तुम जुदा न होंगे।

हिदायतरसूल को काज़ीसाहब के बुलाने की हिदायत की गई। काज़ी कर्ममौला साहब एक सिन्रसीदा मुत्तक़ी परहेज़गार और साहब जायदाद आदमी थे तमाम इटावा उनके एज़ाज़ ख़ान्दानी और फज़ायल ज़ाती का सना ख्वां था। गवर्मेण्ट ने भी मुताबिक़ क़ानून ज़दीद सनद-क़ज़ा उन्हें अता कर दी थी।

हिदायतरसूल को बहुतही कम तवक्क़ह थी कि ऐसे अजीब व ग़रीब अक़द के लिये काज़ीसाहब तशरीफ़ लावेंगे मगर ब तामील इर्शाद अपने आका के सुबह होते ही काज़ीसाहब के घर गये, काज़ीसाहब वज़ीफ़ा में मसरूफ़ थे।

हिदायतरसूल— सलाम अलेकुम।

काज़ी — वालेकुम अस्सलाम, वरहमतउल्ला व बरकातहू।

हिदायतरसूल — इस वक्त जनाब सैयद अमीरहसन खां साहब बहादुर मोहतमिम ख़ज़ाना का अक़्द है, तशरीफ़ ले चलिये और सुन्नत नबवी के मुताबिक यह रस्म अदा फ़र्माइये।

काज़ी — (इशारे से हांथ उठा कर) हूँ हूँ।

हिदायतरसूल — यह किस्सा तूल है आप वज़ीफे से फ़ारिग़ हों तब मुफ़स्सिल हालात बयान करूंगा।

क़ाज़ीसाहब ने चन्द मिनिट में वज़ीफा खतम किया और जानिमाज तह करके हिदायतरसूल की तरफ मुखातिब हुये।

क़ाज़ी — किसका अक़्द है? सैयद अमीरहसन का? क्या उनकी शादी अब तक नहीं हुई थी?।

हिदायतरसूल — क्या शरह इसलाम में चार निकाह जायज़ नहीं?।

क़ाज़ी — जायज़ क्यों नहीं, अच्छा यह फ़र्माइये बरात कहां जायगी?।

हिदायतरसूल — कहीं नहीं बँगलेही पर निकाह हो जायगा।

क़ाज़ी — खुदा के लिये मुफ़स्सल हालात इर्शाद फर्माइये किस के साथ अक्द होगा?।

हिदायतरसूल — मिसेज़ हील के साथ।

क़ाज़ी — जनाब मेरी उमर और मेरी दाढ़ी को देखिये और मुझसे मज़ाक न फ़र्माइये।

हिदायतरसूल— मैं बखुदा मज़ाक नहीं करता। मिसेज़ हील एक मेमसाहब हैं, मज़हब उनका ईसाई है उन्हीं के साथ अक्द होनेवाला है।

क़ाज़ी — लाहौल विलाक़ूवत इल्ला बिल्ला, ज़न् ग़ैरमुसल्लमा के साथ अक्द किसी तरह जायज़ नहीं मैं हर्गिज़ इस निकाह में कोई इम्दाद शरई नहीं दे सकता आप बराह मेहर्बानी वापस जा कर मेरी तरफ से माज़रत कर दीजिये।

हिदायतरसूल — हज़रत अहल किताब के साथ शादी जायज़ है देखिये अभी लीवरपुल में कई अक्द इसी तरह हुये।

क़ाज़ी — हुये हों दुनियां में खुदा जाने क्या २ हो रहा है मुझे इन बातों से कोई वास्ता व ग़र्ज़ नहीं। शरह इसलाम का मंशा यही है कि मर्दोज़न दोनों मुसल्लिम हों तब निकाह हो सकता है।

हिदायतरसूल मायूस होकर वापस आये और अमीरहसन से कुल किस्सा बयान किया।

अमीरहसन — मालूम होता है तहसीलदार ने क़ाज़ी को मुमानियत कर दी वर्ना कोई वजह इनकार की न थी।

हिदायतरसूल — काज़ी की ज़रूरतही क्या है "मियां बीबी राज़ी तो क्या करेगी काज़ी" आप दोनों बैठें मैं निकाह पढ़े देता हूँ खानसामा और कोचवान दोनों गवाह हो जायेंगे।

अमीरहसन — वाक़ई निहायतही उमदा राय है मैं अभी मिसेज़ हील से कहता हूँ।

चन्द मिनट में मिसेज़ हील मिसेज़ अमीरहसन हो गईं तमाम बँगले में शोर था नौकर चाकर सभी इनाम के मुतक़ाज़ी थे अमीरहसन के पास तो कुछ था नहीं मगर मिसेज़ अमीरहसन ने बहुत फ़ैयाज़ी से सब नौकरों को इनाम दिया। मियां बीबी दोनों निहायत मसर्रत व शौक से रहने सहने लगे।

बीबी — प्यारे मैं अभी चन्दे सुसाइटी में शरीक नहीं होना चाहती बिल्कुल तनहाई में बसर करूँगी मैं चाहती हूँ कि तुम सिवा मेरे किसी और को न देखो और मैं सिवा तुम्हारे और किसी को न देखूं।

अमीरहसन — "राज़ी हूँ मैं उसी में जिस्में तेरी रज़ा हो"।

उसी रोज़ तमाम शहर में मिसेज़ अमीरहसन की शादी का शोहरा हो गया हर शख्स की ज़बान पर यही लतीफ़ा था, सब से पहिले मिस्टर मावेल से उनके अर्दली ने हांक देते वक़्त यह किस्सा बयान किया जिसको उन्होंने पहिले यक़ीन नहीं किया मगर चन्द मिनट बाद तहसीलदार ने इसकी तसदीक़ की मिस्टर मावेल और तमाम हिन्दुस्तानी शुर्फ़ा को इस ना-माक़ूल शादी पर सख्त तअस्सुफ़ था, यह तअस्सुफ़ इस वजह से न था कि मिसेज़ हील के पिछले हालात से लोग आगाह थे बल्कि यह तअस्सुफ़ अमीरहसन की बर्बादी पर था।

शादी के तीसरे रोज़ पायोनियर व मार्निंग पोस्ट ने तमाम दुनियां में मिस्टर अमीरहसन एम० ए० ट्रेज़री अफ़सर इटावा व मिसेज़ एलिस हील के ब्याह को मुश्तहर कर दिया उस से अँगरेज़ी सुसाइटी को और तनफ़्फ़ुज़ हुआ।

मेमसाहबा भी इस पायनियरबाज़ी से नाराज़ हुईं उनका इरादा यह था कि यह खबर मुश्तहर न की जाय मगर मिस्टर अमीरहसन ने फ़ैशन के ख्याल से बिला इत्तला अपनी बीबी के अखबारात में

यह ख़बर भेज दी थी। अमीरहसन पहिलेही चन्द रोज से अँगरेजी सुसाइटी से शहर बदर हो चुके थे इस शादी के बाद वह और भी गोशानशीन हो गये। अदने दर्जे के अँगरेजों ने भी इस शादी को पसन्द नहीं किया क्योंकि व्याह के बाद अमीरहसन ने उनकी आमद व रफ्त बन्द कर दी थी। सिवा अपनी बीबी के उन्हें और किसी की पर्वाह न थी, हिदायतरसूल व्याह के बाद भी बदस्तूर मुसाहबत में थे और जरूरी मामलात में हमेशा इन्हीं से मशविरा लिया जाता था। हिदायतरसूल को अपने आका की मौजूदा हालत पसन्द न थी वह कैसाही ना आकबत अन्देश और ज़रपरस्त हो लेकिन अपने आका के एजाज औ वकार का दिली ख़ैरख़्वाह था, वह सच्चे दिलसे इस बात का आर्ज़ूमन्द था कि अमीरहसन अँगरेजी सुसाइटी में मुमताज व मोअज़िज़ रहें। इनका इसीतरह गोशानशीन रहना उसके ख़्याल में अमीरहसन की रुसवाई और ज़िल्लत थी, एक दिन हिदायतरसूल ने अपने आका से चन्द मिनट की तख़लीये की दरख़्वास्त की।

हिदायतरसूल — हुज़ूर वाकिफ़ हैं कि मैं जानो दिल से आपका जां निसार हूं। आपकी हालत मौजूदा बिलकुल मेरी समझ में नहीं आती अंगरेजों से मिलना आपने क़तई तर्क कर दिया आख़िर इसका क्या नतीजा होगा?।

अमीरहसन— मैने ख़ुद तर्क नहीं किया लेकिन बाज वजूह ने मुझे तारकुल मुलाकात होने पर मजबूर किया।

हिदायतरसूल — हुज़ूर के ख़्यालात महज़ ग़लत हैं इस शादी से अँगरेजी सोहबत में हुज़ूर का वकार बढ़ना चाहिये अगर इससे कोई मुफ़ीद नतीजा न पैदा हो तो मेरे नज़दीक इस शादी से ज्यादा कोई बदनसीबी नहीं हो सकती।

अमीरहसन — मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझता।

हिदायतरसूल — मेरी मंशा यह है कि आप मेमसाहब को लेकर तमाम स्टेशन की लेडियों से मिलिये। सबको अपने यहां खाने पर बुलाइये और रब्त मोहब्बत बढ़ाइये देखिये ज़माने की निगाह कलक्टर की आंख पर रहती है, जिससे कलक्टर रज़ामन्द उससे स-

भी दबते हैं जहां कलक्टर की आंख फिरी सभी बरहम हो जाते हैं आपको चाहिये कि कलक्टर को अपनी मुट्ठी में रखिये ।

अमीरहसन — अच्छा मैं मेमसाहबा से इसका तज़किरा करूँगा ।

हिदायतरसूल — तज़किरा नहीं बल्कि उन्हें बुलवा लीजिये ।

अमीरहसन ने मेमसाहब को हिदायतरसूल का नसीहतनामा सुनाया और यह ख्वाहिश ज़ाहिर की कि वह स्टेशन में सब से मिलें । इससे मिसेज़ अमीरहसन ने सख्त मुखालफ़त की, यहां तक कहा कि तुम्हारी ग़ैरत और हमैयत कहां चली गई । क्या तुमको गवारा है कि तुम्हारी मेम और अंगरेजों के साथ घूमे ? और तुम देख २ कर जलो, क्या तुम को यह पसन्द है, कि तुम्हारी बीबी बाहर निकले और सब की हँसी और निज़ारा का बाइस हो ? अमीरहसन ने बावजूद क़ायल हो जाने के अपनी बीबी को मोअज़्ज़िज़ अँगरेज़ों के घर जाने पर मजबूर किया और दूसरे दिन सिपहर को इस दौरा के लिये वक्त मुक़र्रर कर दिया । मिसेज़ अमीरहसन इससे ज़रा भी नहीं खुश थीं वह तो इस दर्जा सिनाख्वां हो रही थीं कि जैसे तमाम उम्र किसी मुसल्मान शरीफ़ के घर में पर्वरिश पाई हो । इसके असबाब औरही कुछ थे जिससे नाज़रीन किसी कद्र वाकिफ़ हैं और मुफ़स्सल आइन्दा चल कर वाकिफ़ होंगे मगर उनके शौहर को अपनी बीबी की अस्मत और पर्दादारी बेहद नापसन्द हुई । दूसरे दिन सिपहर को गाड़ी तयार हुई और मिस्टर व मिसेज़ अमीरहसन दोनों अँगरेज़ों और मेमों से मिलने चले । सब से पहिले मिस्टर मावेल की कोठी पर पहुँचे; चपरासी ने जाकर टिकट दिया ।

मिसेज़ मावेल — हलो ! मिस्टर व मिसेज़ अमीरहसन मिलने आये हैं ।

मावेल — मैं कभी नहीं इजाज़त दे सकता कि तुम मिसेज़ अमीरहसन से मिलो, मालूम नहीं कौन औरत है और उसके पिछले हालात क्या हैं ।

मिसेज़ मावेल — मगर सूरत से बहुत अच्छी मालूम होती है ।

मावेल — चाहे कुछ हो लेकिन मैं इस बात को जायज़ नहीं रख सकता मैंने इस औरत के बहुत बुरे २ हा

बात सुने हैं, अफ़सोस अमीरहसन अपने को ख़राब कर दिया।

मिसेज़ मावेल — मुझे भी इस बात का निहायत अफ़सोस है अगर यही हालत है और इस लेडी के पिछले हालात काबिल इतमीनान नहीं हैं तो जवाब दे दो।

चपरासी ने आकर जवाब दिया कि साहब और मेमसाहब दोनों बहुत २ सलाम देते हैं इस वक्त फ़ुर्सत नहीं।

बीबी — देखा प्यारे मैं कहती थी कि मुझे इसतरह अँगरेज़ों के यहां ले चल कर ज़लील न करो।

औहर — मुझे ख़ुद निहायत रंज है मिसेज़ मावेल मालूम नहीं क्यों इस दर्जा बदइख़लाक हो गई हैं।

बीबी — मैं जानती थी कि यूरोपियन सुसाइटी तुम्हारी शादी मेरे साथ पसन्द न करेगी क्योंकि मेरे ख़ान्दानी इज़्ज़त से सब लोग वाकिफ़ हैं। उनके ख्याल में एक हिन्दुस्तानी से शादी करके मैंने अपनी इज़्ज़त खो दी मगर प्यारे मैं तुम्हारे मुकाबले में दुनियां की इज़्ज़त या दौलत की पर्वाह नहीं करती।

औहर — हां यही बाइस मालूम होता है, अफ़सोस मेरे सबब से तुमने सुसाइटी में अपना दर्जा खो दिया, ऐ काश ख़ुदा मुझे इस लायक करता कि तुम अपना खोया हुआ रुतबा फिर हासिल कर सकतीं।

बीबी — मुझे किसी रुतबे या सुसाइटी की ख्वाहिश या हवस नहीं है लड़कपन में सिवा क्वीन के ड्राइङ्ग रूम और प्रिंस आफ़ वेल्स की पार्टियों के दूसरी जगह जाना मैं अपनी हतक समझती थी अब यह हिन्दुस्तान में लोग जिस क़द्र चाहें शेख़ी कर लें विलायत में इनकी मजाल थी कि मुझसे ऐसी बेरुख़ी करते!।

औहर — ख़ैर कुछ मुज़ायका नहीं रफ्ता २ सब ठीक हो जायेंगे अब चलो पादरीसाहब के यहां चलें वह बहुत अच्छे आदमी हैं।

बीबी — प्यारे मैं किसी के यहां न जाऊँगी और न किसी से मिलूंगी मुझे सिर्फ़ तुम्हारी ख्वाहिश है और तुम्हारी ज़रूरत है और बस।

औहर — मिसेज़ टामी और दूसरी लेडियां जो रेलवे अहलकारों की बीबियां और बेटियां हैं वह तुम्हारे जी बहलाने को काफ़ी हैं।

बीबी — हर्गिज़ नहीं, हर्गिज़ नहीं जब सुसाइटी में मुझे शरीक नहीं करते तो मैं अदने दर्जे के अंगरेजों से मिल कर अपने को ज़लील न करूंगी। प्यारे तुमको भी उन लोगों से नहीं मिलना चाहिये यह बहुत बुरी बात है शायद इस वजह से अफ़सरों ने तुमसे मिलना छोड़ दिया है।

शौहर — मगर मुझसे और उन सब से बहुत दोस्ती है, मुझे सब ने रेलवे इन्स्टीट्यूट का मीर मजलिस मुन्तखिब किया है।

बीबी — तुम जेण्टिलमैन हो सब से मिल सकते हो मगर लेडियों के लिये दर्जा के खिलाफ़ रस्म ज़ेबा नहीं है।

शौहर— जैसी तुम्हारी मर्ज़ी हो।

मियां बीबी दोनों अपने बंगले पर वापस आये, हिदायतरसूल ने चेहरे की उदासी और जल्द वापसी से समझ लिया कि उनके आका साहब कहीं घुसने नहीं पाये इस वजह से उसने यह भी नहीं पूछा कि कहां गये थे और क्या कर आये।

———o———

इकतीसवां बाब।

शादी के खमियाज़ह।

इस शादी ने इटावे में सच है कि एक अजीब गड़बड़ मचादी। हिन्दुस्तानी जो अमीरहसन के भी खैरख्वाह थे सख्त नाराज़ और रंजीदा थे और जो लोग सिर्फ़ हंसी और तमाशा देखने वाले थे वह कहकहा लगाते थे और खुश थे लेकिन उन दिनों सिवा इस तज़किरे के और कोई बातही न थी जो कानों को भली मालूम होती हो, हिन्दुस्तानी सुसाइटी में तरह २ के तज़किरे मशहूर थे, कोई कहता था कि अमीरहसन को हज़ारहा रुपया हाथ लगा और इस वजह से अमीरहसन ने अच्छा किया एक रुपयेवाली लेडी ब्याह ली, कोई कहता था कि अमीरहसन ने यह शादी अंगरेज़ों से दोस्ती बढ़ाने को किया, अलकिस्सा "हर कसे बख्याल ख्वेश खबती दारद" मगर जो लोग फ़हमीदा और वाकिफ़कार थे वह इस हर्कत पर सख्त मलामत करते थे। अंगरेज़ी सुसाइटी में भी इस अजीब व ग़रीब शादी पर सख्त इस्तजाब था, मर्द तो कम मगर लेडियां ज़्यादा मुतजस्सिस और मुतअज्जिब थीं

जब तक शादी की ख़बर पायोनियर में मुश्तहिर नहीं हुई थी किसी को अच्छी तरह इस खबर की तस्दीक भी नही हुई थी । जब बाज़ाबता शादी का एलान हो गया तब अलबत्ता सब ने यक़ीन किया। अदने दर्जे के अँगरेज़ अमीरहसन की इस शादी से नाराज़ थे, उनको ख़ास शिकायत यह थी कि अमीरहसन ने न किसी को नेवता दिया, न कोई डिनर दिया न नाच हुआ न जलसा हुआ वह सब कहते थे कि अमीरहसन ने हमलोगों को ज़लील समझ कर नहीं बुलाया. और सब ने इरादा कर लिया कि अब उन से कोई तालुक या आमद रफ्त नहीं रखना चाहिये और आले दर्जे के अँगरेज़ों में भी इस शादी को हैरत अंगेज़ वाका से ज्यादा दिलचस्पी ज़ाहिर की गई, एक रोज़ उन्हीं दिनों क्लब में इसकी निसबत ख़ूबही गप शप रही।

सुपेरिण्टेण्डेण्ट पुलिस — मिस्टर माबेल! हमने सुना तुम्हारे दोस्त की शादी हो गई अफ़सोस हम सब को नेवता नहीं दिया।

मिष्टर माबेल — हां मैंने भी सुना और मुझको इसका निहायत रंज है, मालूम नहीं यह लेडी कौन है; लोग कहते हैं कि आगरे में मिसेज़ ग्रील के नाम से मशहूर थी और वहां दूकान करती थी।

सुपेरिण्टेण्डेण्ट पुलिस— हां आगरे में मैंने भी देखा था लेकिन यह नहीं मालूम कि ग्रील कौन था जिसकी वह बेवा है और उसके पिछले हालात क्या हैं।

पादरीसाहब — मालूम नहीं शादी क्यों कर हुई मैं नहीं बुलाया गया और न गिर्जे में अक़्द हुआ।

मिष्टर माबेल — मैंने सुना कि काज़ीसाहब को निकाह के लिये बुलाया था उन्हों ने इनकार किया और नहीं गये फिर नहीं मालूम किसने यह ख़िदमत अंजाम दी। अख़बारात में अलबत्ता बड़ी शान व शौकत से शादी का एलान हुआ।

मिष्टर फोर्बस — मुझे सूरत से यह औरत कोई यूरेशियन मालूम होती है यूरोपियन हरगिज़ नहीं और मैंने आगरे में इसके हालात भी बहुत ख़राब सुने थे इसकी चालचलन भी अच्छी नहीं थी।

मिसेज़ मावेल — निहायत जिगर ख़राश यह वाक़ात हैं चाहे और लोग इसको सुन कर हंसते हों लेकिन मैं दिल से रंज करता हूं मिस्टर अमीरहसन निहायत होशियार और लायक आदमी हैं मेरे शौहर की उन पर ख़ास इनायत थी अफ़सोस उनकी हिमाकत ने उनकी कुल उम्मेदों पर ख़ाक डाल दी।

मिस्टर फोबर्स — मुझे एक और डर है कहीं कल मियां बीबी दोनों हमारी लेडियों से मिलने तशरीफ़ न लायें।

पादरीसाहब— किस्तरह वह हम लोगों के घर में आ सकते हैं ? तनहा अमीरहसन आयें तो जेण्टिलमेनों को मिलने में कोई उज्र नहीं जिस्तरह और हिन्दुस्तानी शुर्फा आते हैं लेकिन हमारी लेडियां किसी तरह मिसेज़ अमीरहसन से नहीं मिल सकतीं मिस्टर मावेल बेहतर है कि तुम अमीरहसन को समझा देना।

मिस्टर मावेल — मुझे क्या गर्ज़ पड़ी है हां अगर मेरे यहां आयेंगे तो मैं ज़रूर मिलने से इनकार करूंगा।

इस गुफ्तगू में वह रकीक बातें मिसेज़ शील के पिछली जिन्दगी के मुताल्लिक लेडियों से छिपा २ कर सुपरेण्टेण्डेण्ट पुलिस ने बयान कीं जो बिलकस्द तर्क कर दी गई है मगर मुख़्तसर यह है कि मिसेज़ शील के करीब असली हालत से स्टेशन के सब अङ्गरेज़ आगाह हो चुके थे इन दिनों जितने हिन्दुस्तानी लोग अङ्गरेज़ों से मिलने जाते थे वह भी यही बातें करते थे; चुनांचे तहसीलदारसाहब इटावा एक रोज़ सुपरेंटेंडेण्ट पुलिस के यहां मिलने गये।

सुपरेंटेंडेण्ट — वेल तहसीलदार साहब ! आपने सुना अमीरहसन साहब ने नया ब्याह किया।

तहसीलदार—जी हां ख़ुदावन्द मैंने क्या आम ज़माना ने सुना।

सुपरेंटेंडेण्ट — आप जानता है वह कौन औरत है ?

तहसीलदार—जी मैं वाकिफ नहीं सुनता हूँ आगरे में सौदागरी करती थी।

सुपरेंटेंडेण्ट — हां आगरे में ख़राब औरत की मोआफिक रहती थी, हम उसकी और भी बुरी २ बात सुना है जो कहने के लायक नहीं। अमीरहसन बड़ा बेवकूफी किया हम समझता

है साहब लोग इससे नाराज़ होगा।

तहसीलदार — हुज़ूर मेरा यह ख़्याल था कि साहब लोगोंहीं के ख़ुश करने को उन्होंने यह हरकत की है।

सुपरेंटेण्डेण्ट — हर्गिज़ नहीं सब साहब लोग और मेम लोग नाराज़ हैं वह कम्पनीबाग़ में टमटम पर उस औरत को बिठला कर निकलता है हम लोग सख़्त नफ़रत करता है आपलोग उससे मिला ?।

तहसीलदार — ख़ुदावन्द हम लोग तो पहिलेही से नहीं मिलते थे अब क्या मिलेंगे।

सुपरेंटेण्डेण्ट — बड़ा तमाशा का बात है। हिन्दुस्तानी लोग उससे नहीं मिलता अंगरेज़ उस से नहीं मिलता फिर उसको क्या फ़ायदा इस ब्याह से हुआ ? हम समझता है अमीरहसन जल्द यहां से तबदील हो जायगा उस का बहुत बदनामी हो गया।

तहसीलदार बेचारे अपने दोस्तज़ादे की निस्बत ये हालात सुन कर बहुतही रंजीदा हुये, गो उन को उमेद न थी कि अमीरहसन उन की नसीहत मानेंगे या कुछ भी उनकी बातों का ख़्याल करेंगे मगर अब तक उस ख़ुलूस के सबब से जो सैयद साहब मर्हूम के साथ उनको था तहसीलदार साहब एक मर्तबा अमीरहसन से और मिलने गये इस मर्तबा इतनी ख़ैरियत हुई कि मुलाक़ात से इनकार नहीं किया गया बलकि इत्तला होने पर दफ्तर के कमरे में बैठने की इजाज़त हुई मामूली साहब सलामत के बाद तहसीलदार साहब ने बकमाल मोहब्बत व अख़्तसास यों नसीहत शुरू की।

तहसीलदार — सैयद साहब मेरी बातें आपको चाहे कितनी ही कड़वी लगें मगर मैं महज़ ख़ुलूसे दिल के सबब से आज फिर मिलने आया हूं। जो हालात अब तमाम शहर में मशहूर हैं और जिसतरह आप बदनाम हैं सुन्ते २ मेरे कान बहरे हो गये।

अमीरहसन — तहसीलदार साहब मैं आपकी इनायत का मशकूर हूं लेकिन मैं आज तक वाक़िफ़ नहीं कि मैंने कौन ऐसी हर्कत की जिससे मैं बदनाम हुआ। रिश्वत मैंने नहीं ली चोरी मैंने नहीं की फिर कोई सबब मेरी बदनामी का नहीं है अगर हसद और रश्क से लोग बदनाम करते हैं

करने दो मुझे कोई पर्वाह नहीं।

है नूर फिशांनद व सगवाग मेजनद।

तहसीलदारसाहब — यह जो शादी आपने हाल में की है इससे आप की बदनामी बहुत बढ़ा दी है। खुदा के फज़ल से आप के घर में सलीकाशार तालीमयाफ्ता हसीन और नेकबख्त बीबी मौजूद थी भला आप को बागरे से यह बला अपने पीछे लगाने की क्या ज़रूरत थी?।

अमीरहसन — तहसीलदारसाहब इसके मुताल्लिक मुझे आपसे ज्यादा गुफ्तगू करना ज़रूर नहीं। सिर्फ हिन्दुस्तान के शेक्सपीयर सैयद अकबर हुसेन साहब बहादुर का वह किता जो उन्होंने एक इसी किस्म की शादी की मुताल्लिक हाल में तसनीफ फर्माया है आपको सुनाना चाहता हूं:— वह कहता है —

एक मिस सीमीबदन से कर लिया लन्दन में अक्द ॥ सुन रहा हूँ इस खता पर तानहाए दिलखराश ॥ कोई कहता है कि बस उसने बिगाड़ी नस्ल कौम ॥ कोई कहता है कि यह है बदखिसाल व बदमाश ॥ दिल में कुछ इन्साफ करता है नहीं कोई बुजुर्ग ॥ होके अब मजबूर खुद इस राज़ को करता हूँ फ़ाश ॥ होती थी ताकीद लन्दन जाओ अँगरेज़ी पढ़ो ॥ कौम इङ्गलिश से लो सीखो वही वज़ह व लबास ॥ जगमगाते होटलों का जाके नि‌ज़ारा करो ॥ सोपकारी की तर्क रक़ाब हो छोड़ो दाल माश ॥ लेडियों से मिलके देखो उनके अन्दाज़ो तरीक ॥ बाल में नाचो क्लब में जाके खेलो उनसे ताश ॥ बादए तहज़ीब यूरप की चढ़ाओ खुम के खुम ॥ ऐशिया के सीशये तक़वी को कर दो पाश पाश ॥ जब अमल इसपर किया परियों का साया हो गया ॥ जिससे था दिल की हरारत को सरासर इल्तिबाश ॥ सामने थीं लेडियां ज़ुहरवश जादूनज़र ॥ थी जवानी की उमंग और उनको आशिक की तलाश ॥ उसकी चितवन सहर आगे उसकी बातें दिलरुबा ॥ चाल उस की फितनाखेज उसकी निगाहें बर्क पाश ॥ वह फरूय आतिशेरूख जिसके आगे आफताब ॥ इसतरह जैसे के पेशे शमा पर्वाने की लाश ॥ अब यह सूरत है तो मुमकिन था कि हां एक बर्क जा ॥ दस्त सीमें को बढ़ाते और मैं कहता दूर बाश ॥ दोनों जानिब था रवां

में औग्रये खूं फ़ितनरा ॥ द्रिलही या आख़िर नहीं थी बर्फ़ की यह कोह काश ॥ बार २ आता है अकबर मेरे दिल में यह ख़याल ॥ हज़रते नासह से जाकर अर्ज़ करता कोई काश ॥ दरमियांने कहर दरया तख्त: बन्दम करदये ॥ बाज़ में गोये कि दामन् तर मकुन् होशयार बाश ॥

तहसीलदार — मगर यह क़िता भी आपको कुछ फ़ायदा नहीं पहुँचाता। न आप विलायत गये न आप को सैयदसाहब मर्हूम की कभी यह ताकीद थी कि अँगरेज़ी तर्ज़ माशरत् अख्तयार करो बलकि हमेशा इसके ख़िलाफ़ मर्हूम व मनफ़ूर की ताकीद रही।

अमीरहसन — हां मगर ज़माने की रफ्तार को कोई कैसे रोक सकता है! बीस वर्ष में आप देखेंगे कि कितने नौजवान मुसलमान अँगरेज़ी लेडियों से शादियां करते हैं।

तहसीलदार — मगर आप से मैंने सुना कुल अँगरेज़ नाराज़ हो गये हैं, ख़ुदा ख़ैर करे।

अमीरहसन — मुझे किसी को नाराज़ी की कुछ पर्वाह नहीं, निज के मामलात में कोई मेरा कुछ नहीं कर सकता।

तहसीलदार — यह तो फर्माइये कि यह मेमसाहब हैं कौन? उनके पिछले हालात क्या हैं?।

अमीरहसन — बहुत मोअज्ज़िज़ लेडी हैं कोई ऐसी वैसी नहीं हैं सरजान गार्डन उनके वालिद माजिद लण्डन में बड़े अमीर कबीर शख्स हैं।

मिसेज़ अमीरहसन उस वक्त गोल कमरे में बैठी रहीं, गोल कमरा दफ्तर के कमरे से मिला हुआ था, सिर्फ एक कपड़े का पर्दा दरमियान में था वह कुल गुफ्तगू अच्छी तरह सुन रही थीं।

तहसीलदार — मगर मैंने बहुत बुरे २ हालात सुने हैं।

यह सुन्ते ही मिसेज़ अमीरहसन ख़फ़ा हो कर दफ्तर के कमरे में आ मौजूद हुई।

मिसेज़ अमीरहसन — प्यारे यह कौन बेहूदा शख्स है जिससे तुम बातें कर रहे हो, जो मुझे ऐसे कमीने अलफ़ाज़ में याद कर रहा है।

अमीरहसन — आप तहसीलदार

साहब इटावा हैं ।

मिसेज़ अमीरहसन — तहसीलदार साहब आप इस वक्त मेरे बँगले से निकल जावें आपको किसी लेडी की निस्बत ऐसे तहक्कुक आमेज़ अलफाज़ कहने का कुछ हक नहीं है और न आपको इस्तहकाक है कि मेरे शौहर को इस तरह मेरी तर्फ से भड़काये ।

अमीरहसन — प्यारी तुम नाराज़ न हो, भला मैं तुमसे फिर सकता हूँ । "मैं वह नहीं हूँ कि तुझ बुत से दिल मेरा फिर जाए ॥ फिरूँ जो तुझसे तो मुझसे मेरा खुदा फिर जाए" ।

तहसीलदार — मेमसाहब ज़रा ज़बान सँभाल के गुफ्तगू कीजिये, मैं ऐसी बातें सुने का आदी नहीं हूँ ! मुझे क्या गर्ज़ पड़ी है कि आपके शौहर को भड़काऊँ ।

मिसेज़ अमीरहसन — तुमने क्या समझ कर मेरी निस्बत बुरे अलफाज़ इस्तेमाल किये ।

तहसीलदार — मैंने कोई बुरे अलफाज़ नहीं इस्तेमाल किये मैंने वही कहा जो तमाम दुनियां कह रही है, बल्कि मैंने बहुत बातें नहीं कहीं जिनका ज़िक्र करना खिलाफतहज़ीब था। बीबी साहब होश की दवा कीजिये मैं इन नखरों को बर्दाश्त नहीं कर सकता बकौल शख्से "मज़दूर ढूंडो नाज़ उठाने के वास्ते" ।

मिसेज़ अमीरहसन— प्यारे देखो देखो यह काला आदमी मुझे इन्सल्ट (तौहीन) कर रहा है मैं कभी इस को बर्दाश्त नहीं कर सकती । यह निहायत सख्त बात है निहायत सर हम यात है अगर मैं यह जान्ती कि तुम ऐसे ज़लील आदमियों को अपने यहां आने देते हो तो मैं तुमसे शादी न करती ।

अमीरहसन — जनाब अब इस वक्त आप तशरीफ ले जायें, मेमसाहब को निहायत गुस्सा है और वह आप पर इस वक्त निहायत नाराज़ हैं ।

तहसीलदार — बहुत अच्छा मैं जाता हूँ मगर याद रखना यही बातें एक रोज़ आपका हाल तबाह न दिखायें तो मेरी नाक काट डालना । यह औरत इस दर्जा गुस्ताख है कि इलाही तेरी पनाह ! "इलाही तेरी पनाह" हमको क्या "जो आग खायेगा अँगारे हगेगा" ।

मिसेज़ अमीरहसन — मैं फिर कहती हूँ तुम बेहूदा ज़बान को रोको वर्ना मैं इस वक्त तुमको पुलिस के हवाले करूंगी और तुम्हारे ऊपर अज़ालह हैसियत उर्फी की नालिश करूँगी।

तहसीलदार— अच्छाजी पुलिस के एकही हुई। मेमसाहब मैं पुलीस की धमकी से या नालिश की धमकी से डरनेवाला नहीं।

अमीरहसन — मैं आपसे ख्वाहिश करता हूँ कि आप बग़ैर कोई दूसरी बात कहे कमरे से बाहर तशरीफ़ ले जायें। आपको इतनी तहज़ीब नहीं कि मेमसाहब के सामने खिलाफ़शान बातें कह कर ख्वाहम ख्वाह उन्हें रंजीदा कर रहे हैं (बीबी की तर्फ़ मुखातिब होकर) प्यारी इस हिन्दुस्तानी की बातों का बुरा न मानो, और न इसकी बात का कुछ ख्याल करो, यह बड़ाही बेवकूफ़ है। इन लोगों को तहज़ीब और शाइस्तगी से कोई सरोकार नहीं और न इन्हें सुसाइटी में जानें का इत्तफ़ाक पड़ा है इस वजह से जो जी में आता है बक डालते हैं तुम इन बातों पर ज़रा तवज्जह न करो।

तहसीलदार बेचारे तो बज़िल्लत ब ख्वारी रुखसत हुये लेकिन मिसेज़ अमीरहसन का गुस्सा और रंज हनोज़ रुखसत नहीं हुआ। चेहरा गुस्से से अँगारों से ज्यादा सुर्ख़ हो रहा था आंखों में आंसू भरे हुये थे, सर्द आहों की रेल जारी थी अमीरहसन और उनके मुसाहब हिदायतरसूल (हिदायतरसूल भी गड़बड़ सुन कर कमरे में आ गये) हज़ार तरह समझाते थे लेकिन मिसेज़ अमीरहसन किसी के संभाले नहीं सम्हलती थीं।

मिसेज़ अमीरहसन — प्यारे क्या तुम मुझसे शादी कर के पछताते हो?। हाय मैं तुमको मामूली हिन्दुस्तानी नहीं समझती थी और न वाकिफ़ थी कि तुम पर इतने आदमियों की निगाह है।

अमीरहसन — यह कैसी बातें कर रही हो कौन ऐसी बात मैंने की जिससे तुम इस दर्जा मुझसे बदगुमान हो रही हो? प्यारी दुनियां में मुझको सिवा तुम्हारे और किसी की पर्वाह नहीं।

"खुदा शाहद किसी को और उलफत हो तो काफ़िर हो॥ तुम्हीं पर

उनसे मिल आयें।

अमीरहसन — मगर कायदे की रू से कमिश्नर साहब को पहले मुझ से मिलने आना चाहिये था — अंगरेजी आदाब के मुताबिक़ जो शख्स किसी स्टेशन में जाता है वह पहले सब के यहां मिलने जाता है चुनान्चे मैंने तहक़ीक़ सुना कि कमिश्नर साहब कल सेहपर को बहुत लोगों के यहां गये, हमारे यहां नहीं आये पस मुझको भी उनके यहां जाने की जरूरत नहीं।

मिसेज़ अमीरहसन — बेशक तुम्हारी राय सहीह है, जब वह हमारे यहां नहीं आये तो हम क्यों जायें।

अमीरहसन — मैं खिलाफ़ क़ायदा और खिलाफ़ फैशन के हर्गिज़ उन से मिलने में तक़दीम न करूंगा।

हिदायतरसूल— बहुत मुनासिब, मगर न हर जाये मर्कब तवां ताख़्तन। कि जाहा सपर बायद अन्दाख़्तन॥

अमीरहसन — यह पुराने ख्यालात की बातें हैं हम उनकी कुछ पर्वाह नहीं करते।

यहां मसला ज़ेर बहस ही था और वहां कमिश्नर साहब फ़िल अस्ल अमीरहसन की गैरहाज़िरी पर सख्त नाराज़ हो चुके थे। कमिश्नर साहब ने चन्द मर्तबा दर्याफ़्त किया कि अमीरहसन क्यों नहीं आये सब लोग उन से नाराज़ तो थे ही सब ने ऐसे जवाबात दिये कि कमिश्नर साहब बहादुर और भी बरहम हो गये।

एक— हुजूर वह जेन्टिलमैन हैं इस्तरह मुलाकात को जाना कसर शान समझते हैं।

दूसरा — ख़ुदावन्द माबेल साहब ने उनका मिज़ाज बिगाड़ रक्खा है वह इसके मुन्तज़िर होंगे कि पहले हुजूर जायें तब वह बाज़दीद करने आवें।

तीसरा — हुज़ूर कहते डर मालूम होता है उनका यह क़ौल है कि कमिश्नर की हस्ती क्या है जिस गवर्मेन्ट के वह नौकर उसी के कमिश्नर; फिर ख़ुशामद की क्या जरूरत।

इन सब बातों ने कमिश्नर साहब को सख्त बरहम करदिया। उन्हें पहला क़िस्सा और कुंजियों का लतीफा याद था इस ग़ैरहाज़िरी ने और भी सोने में सोहागा कर दिया। कमिश्नरसाहब ने फ़ौरन् एक चिट्ठी कलेक्टर साहब के

नाम अमीरहसन के तलबी के लिये लिखी।

माइ डियर मावेल!

मुझको ताज्जुब है कि मैंने इस मर्तबा अमीरहसन, ओवेशनरी डिप्टीकलेक्टर को नहीं देखा, उसका फ़र्ज़ था कि बगर्ज़ आदाय मरासिम अदब व ताज़ीम मेरे पास आता जिस तरह और हिन्दुस्तानी शुर्फ़ा व हुक्काम मुझ से मिलने आये। आप उसको हुकुम दीजिये कि कल सुबह को मेरे कम्प में हाज़िर हो।

तुम्हारा मुखलिस सादिक

कमिश्नर।

मिस्टर मावेल को यह ख़त पा कर बहुत अफ़सोस हुआ उन्हें जिसका डर था आखिर वह आफ़त नाज़िल हो गई उन्हें जिस अमर का अंदेशा था वह वाका पेश आ गया। उन्होंने एक निहायत हमायत व नसीहतआमेज़ ख़त में अमीरहसन को फ़हमाइश की कि हस्ब इर्शाद साहबकमिश्नर बहादुर उनसे मिलने जायँ। ये ख़तूत इत्तिफ़ाकन् उस वक्त पहुँचे जब हिदायतरसूल और अमीरहसन से इसी मामले में गुफ़्तगू हो रही थी।

अमीरहसन को साहब कमिश्नर की चिट्ठी से जिस कदर गुस्सा और रंज हुआ था- उसी कदर मिस्टर मावेल की तहरीर से तसल्ली और तस्कीन हुई।

अमीरहसन — वाकई मावेल मेरा दिली दोस्त है।

हिदायतरसूल — मावेल साहब की इनायत बुजुर्गाना में कोई कलाम नहीं मगर यह दूसरी चिट्ठी किसकी लिखी है।

अमीरहसन—कमिश्नर ने मुझे कल सुबह को अपने कम्प में बुलाया है कहो अब क्या सलाह है?

हिदायतरसूल—सलाह कुछ नहीं "दर्कार खैर हाजत हेच इस्तखारा नेस्त"। हुज़ूर ज़रूर तशरीफ़ ले जायँ अंगरेजी नौकरी में मुलाकात और मेल मिलाप अजब चीज़ है, बग़ैर इसके हर्गिज़ काम नहीं चलता।

मिसेज़ अमीरहसन—मगर कमिश्नर की यह हर्कत खिलाफ़तहज़ीब और खिलाफ़ एटिकेट है, मैं हर्गिज़ पसन्द नहीं करती कि तुम आम हिन्दुस्तानियों की तरह दौड़ते फिरो। अगर तुमसे मिलने की ग़र्ज़ है तो खुद क्यों नहीं आये?।

मैं बदी पाओं में नहीं आपके बसीत नहीं। दिन को आ सकते नहीं आप तो क्या रात नहीं ॥ बेनेयाज़ी के सिवा और कोई बात नहीं। सच तो यह है उन्हें मंज़ूर मुलाक़ात नहीं॥

हिदायतरसूल—दोस्ताना मुलाकात और बराबरी की मुलाकात दूसरी होती है और सर्कारी मुलाकात दूसरी। दोस्ताना मुलाकात में कवायद और एटिकेट का बर्ताव हो सकता है सर्कारी मुलाकात में यह बातें नही चल सकतीं। यह मुलाकात काहेको झूटी है हुज़ूर को सिवा जाने के और कोई चारा नहीं।

अमीरहसन — हां मैं ज़रूर जाऊंगा मेरा इसमें कोई नुकसान नहीं।

मिसेज़ अमीरहसन ने बहुतही भारी दिल से अपने शौहर को इस ज़िल्लत माब मुलाकात को इजाज़त दी और वक्त मोऐय्यन पर हमारे दोस्त कमिश्नर साहब के लश्कर में मौजूद हुये।

जिसवक्त अमीरहसन लश्कर में पहुँचे उससे पेश्तर पांच और मुलाकती पहुँच चुके थे और शामियाने के बाहर कुर्सियों पर रौनक अफरोज़ थे। वह कौन लोग थे, लाला मुरारीलाल मेम्बर म्यूनिसिपल बोर्ड, लाला बद्रीनाथ मोहाफिज़ दफ्तर, शेख मनसबअली अहलमद इजलास मिस्टर अमीरहसन, बाबू त्रिलोकी नाथजी असिस्टेंट ट्रेज़री क्लार्क व तहसीलदार साहब इटावा।

अमीरहसन ने टमटमही पर से अपना कार्ड चपरासी के हाथ कमिश्नर साहब के पास भेजा।

कमिश्नर — ठीक आठ बजे हम मिलेगा, अभी बिठलाओ और नम्बर वार मुलाकात होगा जो पहिले आता है उससे पहिले बुलाना और जो पीछे आता है उससे पीछे मुलाकात होगी।

चपरासी ने बाहर आकर अमीरहसन से निहायत गुस्ताख़ तरीके से कहा कि कमिश्नर साहब बहादुर आठ बजे मुलाकात शुरू करेंगे आप अभी ठहरें।

अमीरहसन — मगर मुझको कमिश्नर साहब ने ख़ुद बुलाया है।

चपरासी साहब हम नहीं जानते कि किस को बुलाया और किस को नहीं बुलाया जो हुक्म था हमने आप को बतला दिया।

अमीरहसन टमटम पर से नहीं उतरे और हिन्दुस्तानियों के साथ जो

बाहर बैठे हुये थे कुर्सी पर बैठना गवारा नहीं किया। उन्हें उस वक़्त का इन्तज़ार सख़्त नागवार था और बार बार अपने दिल से मश्विरा करते थे कि ठहरें या लौट जायं मगर ख़ुशनसीबी से उसवक़्त इस क़दर अक़ल ने साथ दिया कि वापस नहीं गये, वर्ना ग़ज़ब ही होजाता। ख़ुदा २ करके मुलाक़ात शुरू हुई कमिश्नर साहब ने नम्बरवार मुलाक़ातियों को बुलाया। अमीरहसन को उसवक़्त सख़्त रंज था और हर शख़्स समझ सकता है कि उनका रंज हक़ बजानिब था। इन मुलाक़ातियों में तीन आदमी ख़ास अमीरहसन के मातहत हैं और वह लोग भी जिनसे अमीरहसन ने अबतक कभी सीधे बात भी नहीं की, ग़ज़ब ख़ुदा इन लोगों से कमिश्नर साहब पहले मिलें और उन से पीछे; इन ख़्यालात ने हमारे दोस्त को मग़मूम नहीं बल्कि बदहवास कर रक्खा था।

ख़ैर साहब बहज़ार इन्तज़ार अमीरहसन की बारी आई और वह भी बुलाये गये, अमीरहसन की आदत थी कि वह अंगरेज़ों के यहां कभी कभी लाल टोपी पहन कर जाया करते थे और जब वह लाल टोपी पहने होते थे जूता और टोपी दोनों पहनकर आया करते थे और जब अंगरेज़ी टोपी पहने होते थे तब नंगे सर अन्दर जाते थे। उस रोज़ लाल टोपी सर पर थी कमिश्नर साहब बहादुर को जूती से सख़्त चिढ़ थी अमीरहसन को जूता और टोपी दोनों पहने देखकर सख़्त नाराज़ हुये।

अमीरहसन — गुड्मार्निङ्ग टु यू।

कमिश्नर — साहब हम हिन्दुस्तानी समझता है हम से अंगरेज़ी मत बोलिये आप जूता और टोपी दोनों पहनकर हमारे सामने आया, सख़्त गुस्ताख़ी का बात है।

अमीरहसन — यह तुर्की टोपी है जो कहीं नहीं उतारी जा सकती।

कमिश्नर — मगर यह जूता तुर्की नहीं है और हर जगह उतारा जा सकता है।

अमीरहसन — अंगरेज़ी बूट भी क़वायद के मुताबिक़ उतारा नहीं जा सकता, मुझे अफ़सोस है कि आप का तर्ज़ गुफ़्तगू मेरे साथ अजीब व ग़रीब है, आपने मुझे घण्टा भर बाहर बिठला रक्खा और फिर नम्बरवार मुलाक़ात

को जो मेरी सख्त तौहीन का बाइस हुआ, नम्बर का सिलसिला उन आदमियों में जायज़ हो सकता है जो एक ही दर्जे के हों लेकिन मोअज़्ज़िज़ शुर्फा के लिये नम्बर निहायत नाज़ेबा है और खिलाफ़ तहज़ीब है और जिस से मेरी सख्त दिलशिकनी हुई।

कमिश्नर — हा हा हा हा हा हा हा हा आपका बहुत दिलशिकनी हुआ, आप जूता उतारे तब बात करे।

अमीरहसन — मैं अदब के साथ जूता उतारने से इन्कार करता हूं और न मैं ऐसी ज़िल्लत गवारा कर सकता हूं।

कमिश्नर — आपको याद है आप का बाप किसतरह हम से मिलता था, आप जानता है आपका भाई जो हर तरह आप से लायक मोअज़्ज़िज़ और ज़ीआबरू है किस तरह से मिलता है? आप सौ रुपये का उमेदवार डिप्टी कलेक्टर और आपको इसकदर ग़रूर?।

अमीरहसन—आप भूलते हैं, मैं बेशक तीन सौ रुपये तनख़ाह पाता हूं लेकिन जेन्टिलमैन हूं।

कमिश्नर — और आप का बाप और आपका भाई जेन्टिलमैन नहीं, कमीना है? हा हा हा हा हा हा हा हा हा।

अमीरहसन — मैं आपकी इर्शाद के मुताबिक यहां हाज़िर हुआ हूं ऐसे अलफाज़ और ऐसा तरीका गुफ्तगू गवारा नहीं कर सकता अगर आपने मुझे ज़लील करने को बुलाया हो तो मुझे रुखसत फ़र्माइये।

कमिश्नर — आप हम से मिलने क्यों नहीं आया था?।

अमीरहसन — आपने औव्वल तो सनीचर का दिन मुलाकात के लिये मुकर्रर फ़र्माया दूसरे सुबह का वक्त मैं इसको आदाब मुआशरत के खिलाफ समझा और मुकर्रर दिन पर मिलने जाना भी मेरे नज़दीक ज़लील बात है, तीसरे आपको मेरे यहां पहले काल (Call) करना चाहिये था।

कमिश्नर — ओ हम से बड़ा कसूर हुआ कि हम योर हाइनेस के यहां आस्तानाबोसी को हाज़िर नहीं हुआ और हर मजेस्टी मिसेज़ अमीरहसन को ख़िदमत में हाज़री नहीं दिया, अब आप खुश है?।

अमीरहसन — मैं अब रुखसत होता हूं।

कमिश्नर— अच्छा साहब रुखसत, मगर इम्तिहान की फिक्र रखिये। यह आख़िरी चांस है और हम यह भी सुन चुका है कि सैयद नज़ीरहसन अब आपको एक कौड़ी नहीं देनेवाला है खासकर ज़ेवर के किस्से के बाद"।

कमिश्नर साहब ने अमीरहसन से न हाथ मिलाया और न कोई दूसरी बात जो उनके लिबास और फैशन के लिये शायां थी की उसपर तुर्रा जूते और टोपी का किस्सा। यह सच है कि अमीरहसन ने इसवक्त बड़ी बहादुरी और जुर्रत से सवाल व जवाब किये लेकिन इसमें भी शक नहीं कि कमिश्नर साहब अज़हद आज़ुर्दह होगये। गो बज़ाहिर वह हँसते थे और ख़ूब अमीरहसन को बनारहे थे मगर असल में सख्त कबीदा व नाराज़ थे।

कमिश्नर ने मिस्टर माबेल से अमीरहसन की बदमिज़ाजी की शिकायत की, मगर मिस्टर माबेल की नेकमिज़ाजी और तहम्मुल फिर अमीरहसन के काम आया और उन्हीं ने कमिश्नर साहब को सँभाला।

अमीरहसन ने जो जो ज़िल्लतें पेश आई थीं अपनी बीबी से नहीं बतलाईं और इसलिहाज़ उनको पोशीदा रक्खा मगर थोड़ेही घंटे में तमाम बाज़ार में तरह २ की रवायतें इस मुलाक़ात के मुताल्लिक मशहूर होगईं और अर्दली के चपरासी जो बवजह न पाने इनाम के अर्सा से मिस्टर अमीरहसन के दुश्मन जानी हो रहे थे इन रिवायत के मुसन्निफ थे। कोई कहता था कमिश्नर साहब ने अमीरहसन को पिटवा कर निकलवा दिया कोई कहता था आज सब साहबबहादुरी धरी रह गई वह धक्के खाये कि मियां को छट्ठी का दुध याद आगया। हिदायतरसूल ने भी बाज़ार में यह सब किस्से सुने मगर अपनी मालिक की अफसुर्दगी के ख्याल से इसका कुछ तज़किरा नहीं किया।

बाब तेतीसवां।

बदनसीब जान्स।

बहुत रोज़ से हमारे यार वफ़ा शआर मिस्टर जान्स गायब हैं। नाज़रीन जान्स को इतना जल्द न भूलगये होंगे। मेरी मंशा मिस्टर जांस असिस्टेन्ट मैजिस्ट्रेट से नहीं बल्कि मिसेज़ अमीरहसन साबिक मिसेज़होल साबिक मिसेज़ जांस के शौहर शिकस्ताख़ातिर से है। बावरी के

वापस आतेहो उसने और उसके दोस्त मिस्टर ऐटकिन्स ने इस्तीफा ले कर आजादी हासिल करली, बकौल शायर कि—

जब मलक न रहा मर्द तुरुक दोश है फिर। नौकरी छोड़ दी उनसे हुई पापोश है फिर॥

जांस अपनी जोरू की बदसलूकी और बदचलनी से इस दर्जा मगमूम और परेशान हो रहा था कि जिसकी इन्तिहा नहीं। थोड़े दिन में इतना दुबला और हकीर होगया कि जैसे बर्सों का बीमार हो; ऐटकिन्स हर तरह जांस की दिलदेही और खिदमत में मुस्तैद था और यह इसी की कोशिश का नतीजा था कि जान्स ने इस ग़मे आलम में खुदकुशी कर के अब तक कुल किस्सा तमाम नहीं कर दिया, लेकिन उसका दर्द दिल रोज़ बरोज़ बढ़ता जाता था, उसका. जुनूं हर मिनिट और हर घंटा तरक्कीपजीर था। कभी वह ग़लबयेग़म में खुद बेताब हो जाता और कभी अपनी प्यारी प्यारी और भोली २ जोरू के फिक्र में बेअख्तियार रोने लगता। जब ज़रा दिल सम्हलता तो दाग़ की ग़ज़ल जो खुदा जाने कहां और क्यों कर उसे याद हो गई थी। हारमोनियम बजा कर गाता रोता और जब रोते रोते हिचकियां बंद हो जातीं मुँह लपेटकर पड़ रहता और बेहोश हो जाता।

गज़ल।

सितम है करना खफा है करना निगाह उलफत कभी न करना। तुम्हें कसम है हमारे सर की, हमारे हक में कमी न करना॥ हमारी मैय्यत पर तुम जो आना, तो चार आंसू गिरा के जाना। ज़रा रहे पास आबरू भी, कहीं हमारी हँसी न करना॥ कहां का आना कहां का जानावह जानता है नहीं य रस्में। वहां है वादा की भी य सूरत कभी तो करना कभी न करना॥ लिये तो चलते हैं हज़रते दिल् हमें भी इस अंजुमन में लेकिन। हमारे पहलू में बैठ कर तुम हमी से पहलूतिही न करना॥ नहीं है कुछ कत्ल उसका आसाँ यह सख्त जां है मेरी बलाकी। कज़ा को पहले शरीक करना यह काम अपनी खुशी न करना॥ मेरी तो है बात ज़हर

उनको वह उनके मतलबही न क्यों हो। कि उन्से जो इल्तजा से कहना गज़ब है उनको वही न करना ॥ वही हमारा तरीक उल्फ़त कि दुश्मनों से भी मिल के चलना। यह एक शेवा तेरा सितमगर कि दोस्त से दोस्ती न करना ॥ बयान दर्दे फ़िराक कहना कि है वहा अपनी यह हकीकत। जो बात करनी तो साफ करना नहीं तो वह भी कभी न करना॥ मदार है नासिहो तुम्हीं पर तमाम अब उसकी मुन्सफ़ी का। ज़रा तो कहना खुदा लगी भी फकत सखुनपर्वरी न करना ॥ बुरी है ऐ दाग राह उल्फ़त खुदा न लेजाये ऐसे रस्ते। जो अपनी तुम खैर चाहते हो तो भूल कर दिल्लगी न करना ॥

ऐटकिन्स — मिस्टर जान्स तुम्हारा क्या हाल है ज़रा आईना ले कर अपनी सूरत देखो और खुदा के लिये अपनी जवानी पर रहम करो।

चन्दही रोज़ में ऐ शख्स यह हालत तेरी। रोना आता है मुझे देख के सूरत तेरी ॥

जान्स — मेरी हालत बहुत खराब हो रही है और मैं जहां तक समझता हूं मेरी जिन्दगी अब बहुत दिन कायम नहीं रह सकती, तुम जानते हो मुझे अपनी जिन्दगी की कोई पर्वाह नहीं और न कोई ऐसी मसर्रत बाकी है जिसके लिये मुझे जिन्दगी की तमन्ना हो। सिर्फ एक बात है जो मुझे मरने नहीं देती, मैं यह नहीं चाहता कि वह कम्बख्त रूसियाह आज़ाद हो जाय और यह बात मेरे मर जाने से उसको हासिल हो जायगी।

ऐटकिन्स—तुम्हीं समझो और अपन को सँभालो, देखो अभी दुनियां में तुम्हें क्या २ काम करने हैं, वह बदज़ात जिसने तुमसे इस तरह बेवफ़ाई की जिसने कुल तुम्हारी उल्फत और मुहब्बत बर्बाद कर दी अगर उसको बग़ैर बदला लिये छोड़ दिया तो हम पर और तुम पर दोनों पर तुफ़ है।

जान्स—मगर खुदा की मर्ज़ी में किसी को कुछ अख्तियार नहीं, अगर यही हालत मेरी तबीयत की रही तो शायद कोई कार्रवाई मुमकिन न हो।

ऐटकिन्स—तुम कुछ बीमार नहीं हो सिर्फ इसी सदमें से तुम्हारी हालत

रही हो गई मगर ज़रा दिल मज़बूत रक्खोगी तो बहुत जल्द संभल जाओगी।

जान्स - मुझे रह २ कर ताज्जुब होता है कि एलिस इतनी हसीन इतनी खूबसूरत और इस क़दर दग़ाबाज़ व बेवफ़ा!।

ऐटकिन्स—अब ख़ुदा के लिये चन्द रोज़ तुम इन बातों का ख्याल जाने दो सिर्फ़ अपनी तन्दुरुस्ती की तरफ़ मुतवज्जह रहो तुम्हारी ज़िन्दगी के बग़ैर कोई काम नहीं हो सकता।

जान्स—हां मैं यह ख़ूब जानता हूं अब यहां से चलने का इन्तज़ाम करना चाहिये तबदील आब हवा से मेरी तबियत ज़रूर दुरुस्त हो जायगी पहले कहां चलने का तुम्हारा इरादा है? वह बदज़ात यक़ीनन् आगरे से कहीं चली गई होगी।

ऐटकिन्स—शायद उसी हिन्दुस्तानी डिप्टीकलेक्टर के यहां है जिसका क़िस्सा हम लोगों ने रेल में सुना था।

जान्स—मुमकिन है, मगर इससे बेहतर यह है कि पहले आगरे चलें वहां मुफ़स्सिल हालात दर्याफ़्त करके जहां मुनासिब हो चल कर क़याम करें। यह काम एक दो रोज़ का नहीं है, बग़ैर मुस्तक़िल कोशिश के कामयाबी दुश्वार है।

ऐटकिन्स—हां यही मेरी भी राय है बुड्ढा गर्नर किसी तरह राह पर आजाय और हम लोगों का साथ दे तो बड़ी मदद मिल सकती है।

जान्स—मगर उससे क्या उमेद है जब उस रोज़ जान बूझ कर उसने मुतलक़ नावाक़िफ़ियत का इज़्हार किया और एक कलमा भी ईमानदारी से नहीं कहा तो अब उससे कोई तवक़्क़ह रास्तबाज़ी या सचाई का रखना महज़ फ़ज़ूल है।

ऐटकिन्स — ख़ैर दीदह ख़्वाहद शुद—अभी से मंसूबा करना वाहियात है जैसा मौक़ा होगा किया जायगा पहले यहां से चलकर उन पादरीसाहब से मिलो जिन्होंने तुम्हारा अक़्द पढ़ा था। रजिस्टर शादी की नक़ल हासिल करो और चुनार में दस पांच इज़्ज़तदार शख़्स जो शादी में शरीक रहे हों उनकी शहादत इकट्ठा करके तब आगे बढ़ना होगा ग़ालिबन् चुनार में अभी बहुत लोग ऐसे मौजूद होंगे जिनको तुमारे ब्याह का वाक़ा याद होगा।

जान्स — एक नहीं सौ दो सौ आ-

हमो शुमार में ऐसे मौजूद हैं जो मुझे बखूबी पहचानते हैं और मुझ से निहायत मेहरबानी से पेश आये, जब मैं पिछली दफ़ा वहां गया था।

ऐटकिन्स — अब इस क़दर सामान इकट्ठा हो सकता है तो अब लेडी साहबा कुछ नहीं कर सकतीं उनको चार नाचार कबूल करना पड़ेगा कि तुम उनके शौहर हो और वह तुम्हारी संगदिल बेवफ़ा जोरू।

जान्स — आज का पायोनियर कहां है, मैंने सिर्फ़ तारबर्की की ख़बरें पढ़ कर फेंक दिया था। लाओ उसी से दिल बहलाऊं।

ऐटकिन्स — मैंने भी नहीं पढ़ा वह देखो खाने वाले मेज़ पर पड़ा है।

जान्स ने पायोनियर उठाकर पढ़ना शुरू किया पढ़ते २ दफ़्तन् एक आह सर्द भरी और पायोनियर उठाकर ज़मीन पर फेंक दिया और आंखों से ज़ार २ आंसू बहने लगे।

ऐटकिन्स — जान्स क्या है क्या है, फिर वही वहशत फिर वही परेशानी, आख़िर अभी तो अच्छे खासे थे दमभर में क्यों रोने लगे।

जान्स — यह देखो उस कम्बख़्त ने आख़िर उस हिन्दुस्तानी जानवर से ब्याह करही लिया।

ऐटकिन्स — ब्याह कर लिया? क्या बकते हो भला ऐसा मुमकिन है और फिर उस पर तुर्रा यह कि पायोनियर में छपवाती। अजी किसी और की शादी का नोटिस शायद हुआ होगा तुमने ग़लती से कुछ का कुछ पढ़ लिया।

जान्स — मैं कैसाही रंजीदा या परेशान हूँ मगर मजनूँ नहीं देखो तुम खुद पढ़ो साफ़ लिखा है।

शादी — ब मुकाम इटावा व तारीख़ सन सैयद अमीरहसन अफ़सर ख़ज़ाना इटावा और मिसेज़ एलिस होल का, अक्द काज़ी हिदायतरसूल ने पढ़ा अहबाब इसी को बतौर इत्तला कबूल करें।

ऐटकिन्स — अज़ारे शरारत अज़ारे बेहयाई। चे दिला वरस्त दुज़्दे कि बकफ़ चिराग़ दारद।

जान्स — पायोनियर में यह शादी फ़क़्त मेरे जलाने को छपाई गई। अरे मैं इस बदज़ात की बातें खूब समझता हूँ।

मेरे जलाने की खातिर से नक़्शा खत भेजा। लिखा रक़ीब को बेवजह इसने

काई नहीं ॥

ऐटकिन्स — आखिर उन रेलवाले मुसाफिरों की बात सही हुई।

जान्स — अब मुझे ज्यादा तलाश की दिक्कत भी न उठानी पड़ेगी सिर्फ चुनार पहुंच कर वह सब शहादतें इकट्ठा करनी है जो मैंने बतलाई और बुड्ढे गर्नर को भी ढूंढ़ना चाहिये मुझे खूब यकीन है कि इस शादीकी इजाजत गर्नर ने न दी होगी, वह चाहे कैसाही बे मुरौव्वत और लालची हो मगर फिर भी सच्चा इसाई है और मजहब का पक्का है वह कभी इस बात को जायज न रक्खेगा कि उसकी लड़की किसी मुसलमान की बेगम बने । बहरहाल अब यहां से पर्सों रवाना होना चाहिये ज्यादा इन्तज़ार की ज़रूरत नहीं।

दरीं दर्याये बेपायां दरीं तूफान मौज अफज़ा ॥ दिल अफगन्देम बिसमिल्ला मुजर यहा व मर्सहा ।

जान्स — मैं इस वक्त जाता हूँ कलकत्ते के जितने नामी बैरिष्टर हैं मिष्टर लालमोहन घोस - मिष्टर ज्येकसन, मिष्टर डबलू सी बेनरजी वगैरह से इस मुकद्दमे में मश्विरा ले कर सिपहर तक वापस आजङ्गा तुम इस दर्मियान में सब सामान ठीक कर रक्खो ताकि किसी ट्रेन में यहां से रवाना हो जायंगे।

मिस्टर ऐटकिन्स दिल से जांस का खैरतलब और शिष्ट ख्वाह था उस ने तमाम कलकत्ते में चक्कर लगाया और एक भी वकील या बेरिष्टर जहां इसकी रसाई मुमकिन थी बगैर मश्विरा नहीं छोड़ा, सब ने कहा कि मुकद्दमा बहुत साफ है अगर शादी साबित हो सकती है और पादरी व गवाह औरत को शनाख्त कर सकते हैं तो उसका इनकार महज़ बे असर और लचर है । ऐटकिन्स की ज़बानी कानूनदां अशखास की राय सुन कर जांस को किसी कद्र तकवीयत हुई और उसने अपनी तबियत के नढाल होने का बिलकुल ख्याल छोड़ दिया और एक बारगी मैदान कारज़ार के लिये मुस्तैद हो गया। दोनों दोस्तों ने मुख़तसर असबाब साथ लिया और दूसरे सुबह को पसेञ्जर ट्रेन में कलकत्ते से एक बार फिर रवाना हुये; चलते २ पटना पहुँचे स्टेशन पर क्या देखते हैं कि मिष्टर गर्नर खरामा २ तशरीफ ला रहे हैं।

जान्स — ऐटकिन्स वह देखो बुड्ढा

गर्नर खड़ा है।

ऐटकिन्स — हां है तो वही, चलो मिलें देखें अब इस शादी के बाद उस के क्या ख्यालात हैं।

जांस — बेहतर है आज यहीं उतर पड़ें दूसरे ट्रेन में यहां से चलेंगे।

जान्स और एटकिन्स ने जल्दी २ अपना असबाब उतार कर कुली के सपुर्द किया इस सफर ने किसी क़द्र जांस की तबीयत भी बश्शाश करदी थी।

जान्स — गुडमार्निंग पापा!।

गर्नर — गुडमार्निंग जांस।

ऐटकिन्स — खुदा का शुक्र है आज तुमने बेचारे मुसीबतज़दह को पहिचाना तो।

गर्नर — मैं और कुछ नहीं जान्ता उस रोज़ आगरे में तुमने जा कर अपने को जांस बतलाया था, वही मुझे याद था।

जान्स — खुदा के लिये अब ज्यादा तजाहुल आर्फाना न कीजिये मेरे हाल ज़ार पर रहम कीजिये, देखिये मेरी सूरत से आप पर ज़ाहिर होगया होगा कि मैं इस दुनियां नापायेदार में मेहमान चन्दरोज़ा हूँ मेरे साथ अब बेरहमी और सख्ती सख्त गुनाह है, आप इससे इनकार नहीं कर सकते कि मैं आपका फर्माबर्दार दामाद जांस हूँ, आप की बेटी ने मुझे बर्मा जाने पर मजबूर किया वहां खुदा ने मेरी हौस और मेरी तमन्ना से ज्यादा मुझे रुपए दिये जब मेरे पास इस क़द्र रुपए हो गये कि मेरी दो तीन पुश्तों के बा-आराम जिन्दगी बसर करने को काफी हो मैं अपनी प्यारी बीबी के ढूंढ़ने को बर्मा से हिन्दुस्तान आया। यहां दुनियाही पलट गई कोई मुझे पहचानता नहीं कोई मेरी सुन्ताही नहीं खैर मैं इसमें भी खुश हूँ।

कोई अब तुझसे आर्ज़ूही नहीं॥
अब जो देखा तुझे वह तूही नहीं॥
इस क़द्र नाज़ है तुम्हें गोया॥
कोई दुनियां में खूबरूही नहीं॥
जो तेरे लुक्त से निकल जाये॥
वह मेरे दिल की आर्ज़ूही नहीं॥
इश्क़ में वज़ा क्या रही ऐ दाग़॥
कि मुझे पास आबरूही नहीं॥

गर्नर — मगर अब क्या हो सकता है अब जो कुछ होना था हो गया॥

जान्स — जो हो गया वह मुझे मालूम है और मैं सुन चुका हूं मगर मैं

अब आप से पूछता हूँ कि यही शेवा वफ़ाशारी थी यही शराफ़त का तकाज़ा था यही एक ईसाई के लिये ज़ेबा था, क्या तमाशा है।

उड़ गई यों वफ़ा ज़माने से ॥
कभी गोया किसी में थीही नहीं ॥
हम तेरे आर्ज़ू प जाते हैं ॥
यह नहीं है तो ज़िन्दगीही नहीं ॥

गर्नर — जांस तुम रंज न करो जो कुछ होना था हो चुका अब उसकी तलाफ़ी मुम्किन नहीं, मुझको तुम्हारे साथ दिली हमदर्दी है और मोहब्बत है, बेशक मैं तुमको पहिचान्ता हूँ मगर क्या करूँ उस ज़िद्दी छोकरी से मैं भी मजबूर हूँ और तुम भी मजबूर हो।

जान्स — मगर मैं मजबूर नहीं, जब तक मैं ज़िन्दा हूं और जब तक मैं ख़ुद उसको आज़ादी न दूं वह आज़ाद नहीं हो सकती। मिस्टर गर्नर आप ने भी न समझाया कि कैसे ग़लत रास्ते पर वह चल रही है।

गर्नर—मैंने बख़ूबी समझाया मगर भला वह मेरे मान की थी। अफ़सोस इस बुढ़ापे में यह दाग़ भी देखना बदा था मैंने जिस रोज़ से यह ख़बर अख़बार में पढ़ी सब से मिलना तर्क कर दिया और मुँह लपेटे पड़ा रहता हूँ; जो मिलता है यही सवाल करता है कि तुम्हारी बेटी एक मुसलमान के घर पड़ गई अब मैं इसका क्या जवाब देता फिरूँ।

जान्स — आपका कयाम कहां है और आपने एलिस को किसे सौंपा ?।

गर्नर — जिस रोज़ तुम आगरे से वापस आये उसी रोज़ से मैं भी चला आया मुझे यह भी नहीं मालूम कि एलिस अब कहां है, फ़िलहाल मैं पटने में मुक़ीम हूँ।

जान्स — ख़ैर एलिस ने जो बदसलूकी की ख़ुदा और ख़ुदा का कानून उसका बदला देगा।

कोई बदला हमारा यह लेगा ॥
इस जफ़ा की उसे सज़ा देगा ॥

मगर आप मुझ पर अपना साया मेहर्बानी कायम रखिये।

गर्नर — मैं तुम्हारे साथ मोहब्बत और हमदर्दी को तैयार हूँ।

जान्स — सिर्फ़ हमदर्दी नहीं बल्कि मुझे अपना बेटा समझिये, एलिस को आपने खो दिया मुझे अब उसका जानशीं बनाइये मेरे पास कसीर दौलत मौजूद है अगर आप सहारा दें तो मैं

अभी बहुत कुछ कर सकता हूँ और अदालत के ज़रिये से एलिस को वापस ले सकता हूँ।

गर्नर — मैं ख़ुशी से तुम्हारे साथ हूँ और अगर तुम्हारा इरादा मज़बूत है तो ख़ुदा तुम्हारा मददगार होगा।

जान्स—आज हमलोग चुनार चलते हैं और वहां पहिले इसका इतमीनान कर लें कि बहालत ज़रूरत गवाह मिल सकते हैं या नहीं। उसके बाद इटावा पहुँच कर यह किस्सा तै कर लेंगे, आप भी मेरे हमराह चलिये और इस मुसीबत में मेरे शरीक हूजिये ख़ुदा चाहेगा तो एलिस को ज़रूर उस हिन्दुस्तानी के पञ्जे से निकालूंगा और अगर मेरी मोहब्बत में कुछ भी असर है तो वह नादान अपनी हर्कत पर नादिम होगी और मुझे अपनी जांनिसारी में तसलीम करेगी।

इधर हुआ जज़्ब इसको पैदा।
उधर वह सीने से आके लिपटी॥
मैं बारहा आज़मा चुका हूँ।
यह कश्फ़ दिलका कमाल दिल का॥

अगर इस पर भी वह मेरी ना-कद्री करेगी और मुझसे मिलने पर राज़ी न होगी तो ख़ैर।

फिरें हैं वह हमसे ख़ैर बेहतर।
हम उनसे एकद्र हैं मकद्र॥
हमें जहां में न कहत दिलबर।
न उनको दुनिया में काल दिल का॥

गर्नर—मैं तुम्हारा हमराह हूँ और हर तरह मदद को तैयार। मिस्टर गर्नर भी इस पार्टी में शरीक हुये और तीनों मुसाफिर दूसरे वक्त की रेल में फिर रवाना हुये।

बाब चौंतीसवां॥

गवाहों की तलाश।

मिस्टर गर्नर को चुनार जाना सख्त नागवार था। अौवल तो वह जगह जहां पर वह बरसों ख़ुशी से रहा और अफलास व तंगदस्ती ने जिसको छोड़ने पर मजबूर किया वहीं लौटकर जाना कुदरती तौर पर कोई ख़ुशआयन्द बात न थी दूसरे अब तक चुनार में ब कसरत ऐसे लोग मौजूद थे जिनका सदहा रुपया मिस्टर गर्नर के ज़िम्मे बाकी था उनका सामना भी हमारे दोस्त को नागवार था, जब मुग़लसरायँ के स्टेशन पर रेल पहुंची और चुनार नज़दीक रह गया मिस्टर गर्नर बग़लें झांकने लगे।

गर्नर — जान्स चुनार चलना म-हज़ फ़ज़ूल है वहां एक भी ऐसा शख्स न मिलेगा जो तुम्हारे काम का हो।

जान्स — वहां अभी बहुत लोग मौजूद हैं जो मुझे पहचानते हैं और जिनकी आंखों के सामने मेरी शादी का वाका ऐसा ताज़ा है कि गोया कलही हुआ था मैं चन्द रोज़ हुये चुनार गया था मिस्टर मार्टन, मिस्टर मार्गन सार्जन डिलन, डाक्टर टामस सब लोग निहायत इखलाक से मिले और वहां के तहसीलदार साहब ने भी निहायत मेहर्बानी की।

गर्नर — मगर अब तहसीलदार से उमेद रखना फज़ूल है क्योंकि वह भी मुसलमान और वह शख्स भी मुसलमान जिस से इसने शादी करली है कौन कह सकता है कि इस तहसीलदार के पास उनके खुतूत न आये हों और यह उनकी मदद न करें।

जान्स — मगर यह तहसीलदार निहायत आलीखान्दान तालीमयाफ्ता और मुतदैय्यन शख्स है मैंने चुनार में हरशख्स से उसकी तारीफ सुनी और मैं हरगिज़ यकीन नहीं कर सकता कि कोई काम जो खिलाफ दियानत व इन्सानियत हो वह करेंगे।

गर्नर — मगर चन्द और वजूह हैं जिन के सबब से मैं अपना चलना मुनासिब नहीं समझता।

जान्स — और क्या वजूह हैं साफ साफ फर्माइये।

गर्नर — भैया मैं चुनार का बहुत कर्ज़दार हूं और पीछे साल उलफत्तू से ग़ानी मेरे साथ गो बड़े २ सलूक किये और आठ दस आदमी जिनका मैं कर्ज़दार था मर चुके लेकिन बदनसीबी से पांच शख्स अब तक बाकी हैं और डिगरियां हासिल कर चुके हैं।

जान्स — आखिर आप को किस कद्र कर्ज़ देना है।

गर्नर — पांच छ सौ रुपये से कम न होगा।

जान्स — आप घबरायें नहीं मैं आपका कर्जा भी अदा कर दूंगा मगर इस वक्त आपका चलना जरूरयात से है।

गर्नर — अगर तुम इस दर्जा इनायत करने पर आमादा हो तो मैं निहायत खुशी से तुम्हारे हमराह हूं। चन्द मिन्ट में दूर से किला दिखलाई दिया जान्स को खुदा जाने कितने पुरानी

लिखे और कितनी प्यारी२ बातें याद आगईं और एक बार्गी वह फिर चन्द्र मिन्ट के लिये बेचैन हो गया, ज्यों त्यों कर अपना दिल सँभाला इतने में स्टेशन पहुँच गया। और मिस्टर जान्स, गर्नर, और ऐटकिन्स तीनों साहब रेल से उतरे। अब वहां यह सवाल पैदा हुआ कि कयाम कहां करना होगा। चुनार गो निहायत पुरफिज़ा और पुराना शहर है और पेनशन याफ्ता अंगरेज़ों और मिसों का वहां बहुत बड़ा मजमा रहता है मगर कोई डांक बँगला या होटल नहीं इस वजह से मुसाफ़िरों को बहुत तकलीफ होती थी अब सैयाहों किला में कोई डांक बँगला खोल दिया गया है और इसी के लिये मिर्ज़ापूर के बेदार मग़ज़ साहब कलक्टर और चुनार के हरो तहरीर तहसीलदार बहुत शुक्रिया के मुस्तहक हैं।

ऐटकिन्स — मगर बड़ी मुशकिल है यहां ठहरने की कोई जगह नहीं।

जान्स — हां कोई डांक बँगला नहीं, होटल नहीं चुनार में कोई ऐसा मेहमाननिवाज़ दोस्त नहीं जिसके यहां कयाम की जगह मिले।

गर्नर—मिसेज़ ओगलवे मेरे एक मुलाकाती चुनार में थी चलो वहीं ठहरें।

जान्स — मालूम नहीं वह जिन्दा हैं या मर गईं।

ऐटकिन्स — बेहतर है गाड़ीवाले से दर्याफ्त कीजिये।

जान्स— (गाड़ीवाले से) क्यों जी तुम्हें मालूम है मिसेज़ ओगलवे साहबा किस जगह रहती हैं और मौजूद हैं या नहीं ?

गाड़ीवाला — आप कितने रोज़ बाद चुनार तशरीफ लाये है बुढ़ी मेम साहबा और उनके ख़ाविन्द मुद्दत हुई मरगये अब चुनार में कोईनहीं रहगया हर साल दो चार साहब लोग छोड़कर दूसरी जगह चले जाते है। फौज के भी जाने की खबर है अगर कम्पू टूट गया तो चुनार में दिन दिहारे गीदड़ बोलेंगे।

जान्स — फिर कोई ऐसी जगह बतला सकते हो जहां दो एक रोज़ हम लोग ठहर सकें।

गाड़ीवाला — हुज़ूर यहां हिन्दू मुसलमान के ठहरने को तो बहुत जगहें हैं चाहे दर्गाह हज़रत शाह कासिम सुलेमानी में ठहरे चाहे बाबू हनुमानप्रसादजी की कोठी में या बाबू सी-

तलग्राधाई के बाग़में। मगर आपलोगों के लिये सिवा सरा के दूसरी जगह नहीं और वह सरा भी बहुत मैली और ज़लील है आपके कयाम के काबिल नहीं अलबत्ता यहां एक नये पेशकार साहब आये हैं उनको स हब लोगों की दावत का बड़ा शौक है। अभी पर्सों चार किरानी साहब लोग उनके मेहमान थे लैन इन्सपेक्टर साहब तारवाले साहब और गोरा बारिक के किरानी सब उनके यहां आया जाया करते है और खूब दावतें चखते है अगर आप चलिये तो मैं वहां ले चलूं।

जान्स — मुझसे उनसे मुलाकात नहीं, बे जान पहिचान हम लोग कैसे वहां जा सकते हैं।

गाड़ी वाला — हुजूर जान पहिचान की ज़रूरत नहीं हिन्दू मुसलमान चाहे कोई कैसाही बड़ा आदमी हो पेशकार साहब ख्याल नहीं करते। मगर किरानी लोग की बड़ी इज्जत करते है आपको कुछ तकलीफ न होगी मकान भी अच्छा है सिर्फ चलते वक्त एक सर्टिफिकेट देना पड़ेगा और हर महीने में दस बारह खत उनको लिखना पड़ेगा।

जान्स — यह पेशकार अजब आदमी मालूम होता है।

ऐटकिन्स — यह मैं नहीं समझा कि खत क्यों लिखने पड़ेंगे।

गाड़ीवाला — जब वह आप लोगों को खत लिखेंगे तो क्या आप जवाब न देंगे जहां उनसे एक मर्तबा भी किसी साहब लोग से मुलाकात हो जाय मारे खतों के उसका नाक में दम कर देते हैं।

जान्स — वेल अगर एक खत से उनके दिल को मसर्रत और तसकीन हो जाती है तो हमको इसमें कुछ तामुल नहीं करना चाहिये चलो उन्हींके मेहमान हों।

ऐटकिन्स — पहिले गाड़ी वाले को भेज कर दर्यांफ्त कराओ कि वह हम लोगों को ठहरायेंगे या नहीं उस वक्त इसका फैसला किया जायगा।

गर्नर — क्या लड़कों कीसी बातें करते हो मान न मान मैं तेरा मेहमान। भला यह भी कोई बात है चलो सरांय में ठहरें फिर कोई न कोई मुलाकाती निकलही आवेगा।

जान्स — सफ़र के शर्त मुसाफ़िर निवाज़ बेहतर है [illegible]-

शादार राह में है।

तीनों मुसाफिर सराय में आ कर बी मैना भठियारी के यहां मुकीम हुये अ-सबाब कोठरी में बन्द करके जान्स और गर्नर दोनों लोअरलाइन गये, वहां मि-स्टर मार्गन पेनशन याफ्ता से मुलाकात हुई वह बहुत ही इनायत से पेश आये और सब को अपने घर उठा लाये।

चुनार में जान्स को उनकी उमेद से ज्यादा मदद मिली। पादरी इवेन्ससाहब जिन्हों ने एलिस और जान्स का अक्द पढ़ा था अब तक वहीं मौजूद थे, उन्हों ने फौरन् जान्स को पहिचाना और रजिस्टर से ज़रूरी सार्टिफिकेट शादी का मुरत्तब करके दे दिया।

पादरी — मिस्टर जांस! तुम्हारी शादी अब तक हम लोगों को बखूबी याद है क्योंकि जहां तक मुझे याद है उससे ज्यादा फ़ैशनएबुल शादी चुनार में अर्से से नहीं हुई।

जान्स — ठीक बोला, ग़ालिबन आप को मिस एलिस की सूरत भी याद हो और आप देखें तो पहिचान सकें?।

पादरी — बेशक मैं मिसेज़ जान्स को पहचान सकता हूँ गो बहुत रोज़ हुये मैंने उन्हें नहीं देखा।

मिस्टर जान्स को अलावा पादरी साहब के और बहुत से इज़्ज़तदार ग-वाह मिले और एक कापी उस तस-वीर की भी मिल गई जो ऐन शादी के रोज़ खींची गई थी और जिस में मिस्टर व मिसेज़ जान्स ब्याह के लिबास में खड़े हो मिस्टर गर्नर से हाथ मिला रहे हैं। यह तसवीर मिस जार्ज की अ-लबम में मिली उसकी पुश्त पर खास उसके हाथ के लिखे हुए यह अल-फ़ाज़ थे। "बहुत २ इनायत के साथ अज़ जानिब मिसेज़ जान्स"।

ऐटकिन्स — इस से ज्यादा और क्या शहादत हो सकती है।

जान्स — ज़रूरत से ज्यादा शहा-दत मिल गई। अब बीबी का इनकार नहीं चल सकता।

ऐटकिन्स — मिस्टर गर्नर भी तो अब हम लोगों की तर्फ़ हैं उनकी श-हादत सब से ज्यादा मोतबिर होगी।

गर्नर को चुनार से जल्द भाग जाने की ज़रूरत हुई क्योंकि अभी तक उनके अहबाब क़र्ज़ख़ाह उनकी तश-रीफ़आवरी से मुत्तला नहीं हुये थे और इस लिये वह बार २ तकाज़ा करते थे

कि अब ज़ियादा कयाम की चुनार में एहतियाज नहीं इस राय से जान्स और ऐटकिन्स को भी इत्तफ़ाक़ था चुनांचे दूसरे रोज़ डेढ़ बजे दिन की गाड़ी में यह काफ़िला फिर रवाना हुआ। इस मर्तबा ऐसी उजलत में सब लोग थे कि वहां के किसी रईस या दोस्त से बजुज़ उन लोगों के जिन्हें गवाह बनाने की ज़रूरत थी नहीं मिले जान्स का चुनार में पचास साठ रुपये तोफह तहायफ में खर्च हुआ इस के सिवा और किसी सर्फ़ की ज़रूरत नहीं पेश आई और न गर्नर साहब का क़र्ज़ा अदा करना पड़ा।

गर्नर — जान्स तुम खुशनसीब हो देखो चुनार में कैसी अच्छी तरह सब काम ठीक हो गये।

ऐटकिन्स — मुझे वाक़ई ऐसी उमेद न थी यह तसवीर बड़े काम की चीज़ हाथ आई।

गर्नर — भाई साहब अभी कोई सौ पचास बर्स तो इस शादी को गुज़रे नहीं दो चार बर्स में भला ऐसे वाक़ात कहीं भूले जा सकते हैं और सच्ची बात यह है कि सच २ है, कहीं दरोग़ को फ़रोग़ हुआ है ?

जान्स — मुझे एक खुशी है कि आप के क़र्ज़ख़्वाह भी नहीं आये मालूम होता है उन्हें खबर नहीं हुई।

गर्नर — मैं बिलक़स्द चुनार में घर से बाहर नहीं निकला हर वक्त अन्दर बैठा रहा इसी से किसी को इत्तला नहीं हुई।

अलकिस्सा हमारे अहबाब चुनार से रवाना होकर दूसरे रोज़ इटावा में दाखिल हुये और रेल से उतर कर पहिले डांकबँगले में मुकीम हुये।

ऐटकिन्स — डांक बँगले में हम लोग बहुत रोज़ नहीं रह सकते कोई और जगह कयाम के लिये तलाश करना चाहिये।

गर्नर — डांक बँगले में यह भी एक अन्देशा है कि जिस वक्त कोई मुसाफिर आयेगा हमको बँगला खाली करना पड़ेगा।

जान्स — मेरे नज़दीक एक बँगला ले लेना चाहिये क्योंकि मालूम नहीं यहां कितने दिन रहना पड़े।

गर्नर — मेरी राय में अभी हम लोगों को अपने आने का इज़हार भी नहीं करना चाहिये वर्ना एलिस यकीनन् कहीं भाग जायेगी और फिर हा-

ह न आयेगी।

जान्स — बेशक यह राय आपकी निहायत उमदा है।

ऐटकिन्स — मगर बँगला लेने में अफ़शा का बहुत खौफ़ है।

जान्स — ऐटकिन्स तुमको कोई नहीं पहिचान्ता तुम आज से अपना नाम तबदील कर दो जो कोई दर्याफ्त करे अपना नाम डिकरूज़ बतलाओ और लोगों से ज़ाहिर करो कि तुम यहां अनकरीब अँगरेज़ी असबाब की दुकान खोलनेवाले हो, तुम्हीं अपने नाम से बँगला लो और तुम्हीं अन्दर बाहर निकलो बैठो हम लोग जब तक वक्त न आवे बँगले के अन्दर बन्द रहें और किसी को कानों कान खबर न होने दें।

ऐटकिन्स — मगर मैं यहां किसी को नहीं जानता बँगला क्यों कर मिलेगा।

गर्नर — डांक बँगले के खानसामे बड़े होशियार हुआ करते हैं उनसे इस किस्म के कामों में बहुत मदद मिलती है उसको बुलाओ उसके ज़रिये से बङ्गला ठहर जायेगा एक खिदमतगार और बावर्ची की भी ज़रूरत होगी।

जान्स— खानसामा मियां ज़रा इधर तो आवो।

मदारबख्स डांक बङ्गले का खानसामा भी एक अजीब शख्स था। मिस्टर ह्यूमसाहब बहादुर जब उस ज़िले में कलक्टर थे वह उनका खानसामा था साहब के तबदील होते ही उसने भी अङ्गरेज़ों की नौकरी करनी तर्क कर दी और जब कोई उससे पूछता कि तुम अब कहीं नौकरी क्यों नहीं कर लेते वह यही जवाब देता था कि अब अगले ज़माने के से रईस फिरंगी कहां जो हम लोगों की पर्वरिश और कद्रदानी करते नये झोल के साहब लोगों से अपनी मीज़ां नहीं पट सकती जब दो चार बर्स में उसकी हालत तबाह हुई और जो कुछ अन्दोख्ता था सब सर्फ हो गया तब फिर नौकरी की तलाश हुई उसकी खुशनसीबी से उन्हीं दिनों डांक बङ्गला का खानसामा मर गया। मदारबख्स ने दर्खास्त की और साहब कलेक्टर ने फौरन् मुकर्रर कर दिया मदारबख्स आदमी नेकबख्त और सेरचश्म था मगर बातूनी बहुत, इसमें शुबहा नहीं कि उसने अपने इन्तज़ाम

और खातिर्दारी से डांकबङ्गला को बहुत चमका दिया था खाना बहुत लज़ीज़ साफ और वक्त पर मिलता था और वह दाम भी ना-वाजिब नहीं चार्ज करता था मगर बक २ और किस्सगोई से कभी २ मुसाफिर परेशान हो जाते थे। हां वह लोग जो बूढ़े आदमियों से पुरानी कहानियां सुनने के शायक होते थे वह अलबत्ता मियां मदारबख्स की बातें बड़े मज़े से सुन्ते थे और खुश होते थे।

जान्स — वेल खानसामा एक बङ्गला हमारे वास्ते किराया पर ते कर दो!

खानसामा — हुज़ूर यहां तो कोई बङ्गला खाली नहीं, एक में कलेक्टरसाहब रहते हैं एक में जजसाहब एक में डाक्टरसाहब एक में पुलिसवाले कप्तान एक में बङ्कवाला साहब रहता है। इसी तरह जितने साहब लोग हैं उतनेही यहां बँगले हैं। दो बङ्गले फालतू थे उस में से एक में तो मेमवाले डिप्टी. साहब रहते हैं और दूसरा भूतवाला बङ्गला है वह खाली है।

जान्स — तुम्हारी बातें बड़े मज़े की हैं मेमवाले डिप्टी और भूतवाला बङ्गला दोनों का किस्सा सुनाओ।

खानसामा — मेम वाले डिप्टीसाहब एक बड़े रईस के लड़के हैं मगर उन्हों ने मेम से शादी करली है इससे बहुत साहब लोग नाराज़ हैं। मेम है तो बहुत अच्छी मगर सुनते हैं बड़ी खसीस है तमाम नौकर चाकर सब निकाल दिये हैं सिर्फ़ एक मशालची और एक बावर्ची रख लिया है और सब बेचारे रोते फिरते हैं किसी की तनखाह भी नहीं दी।

जान्स — हमको एक बावर्ची और खानसामा की भी ज़रूरत है तुम उन्हीं आदमियों को हमें नौकर रखदो।

खानसामा — बहुत बेहतर।

जान्स — और उस भूतवाले बङ्गले का क्या हाल है।

खानसामा — हुज़ूर उसका हाल यह है कि बेगीन साहब एक गोदाम वाला साहब था, सख्त बदज़बान और बदएतवार था उसके नौकर चाकर सख्त परेशान रहा करते थे मार पीट और गाली गलोज के सिवा सीधी तरह बात करना साहब ने मदरसा में पढ़ाही नहीं था। एक दिन अपने बेरा को साहब ने गाली दी और बहुत मा-

रा उसको निहायत रंज हुआ उसने रात को जैसेही साहब खाना खाकर पलङ्ग पर गये कमरे में घुसकर साहब को मार डाला और खुद थाने में जा कर अपने को गिरफ्तार करा दिया। बेरा को फांसी हुई तब से हमारे शहर में मशहूर था कि साहब और बेरा दोनों भूत हो गये और बङ्गला में बराबर मुकीम रहते हैं। इस खौफ से बङ्गले में रहना तो दूसरी बात है कोई उसके नज़दीक भी नहीं जाता था। बेगीन साहब की मेम बङ्गला को लाला शिवचरनलाल के सपुर्द करके विलायत चली गईं भूतों के डर से सात बर्स उस बङ्गला में कोई नहीं ठहरा और मकान भी बेमरम्मत होगया पार साल एक जयट साहब तबदील होकर आये और बङ्गले की उनको निहायत तकलीफ हुई उनका इरादा बेगन साहब की कोठी में जाने का हुआ मगर सब ने मना किया और खुद लाला शिवचरनलाल ने डराया कि वह मकान आसेबज़दह है हुजूर के रहने लायक नहीं, साहब बहादुर भी डर कर खामोश हो रहे। एक रोज़ मालूम नहीं साहब को क्या सूझी दस बजे रात को तनहा उस बँगले पर गये वहां देखा कि भूत प्रेत तो कोई नहीं बहुतसे ज्वारी बैठे नक्की मुठ खेल रहे हैं, खुद लाला शिवचरनलाल भी वहां मौजूद थे और खेल में शरीक थे, साहब उसी वक्त दबे पांव वापस आये और पुलिस लैन से पचास जवान लेकर दौड़ मारी सब को गिरफ्तार कर लिया और दूसरे दिन छ छ महीने को लाल घर भेज दिया और फिर जब तक जयट साहब इस ज़िले में रहे उसी बङ्गले में मुकीम रहे अल्ला के करम से उन्हें कुछ नुकसान नहीं हुआ उसी बङ्गले में मेमसाहब को लड़का पैदा हुआ और उसी बङ्गले से साहब की तरक्की हुई कलेक्टर होकर बलिया चले गये वह बङ्गला खाली है अगर हुक्म हो तो मैं जा कर ते कर लाऊँ।

जान्स — वेल हम भूत परेत से बिलकुल नहीं डरता तुम ज़रूर वह बङ्गला हमारे लिये ठहराओ।

खानसामा — खुदावन्द उस में कोई आसेब नहीं है जुआरियों ने उसको बदनाम कर रक्खा था और जहां चिराग़ जलता है वहां आसेब कहीं ठहर सकता है?।

जान्स — अच्छा खानसामा तुम हाज़री खिलाकर बङ्गला तै कर लाओ और डिप्टी साहब के नौकर लोग जो बर्ख़ास्त हुये हैं उन्हें बुला लाओ हम सब को नौकर रख लेंगे।

———०००———

बाब पैंतीसवां ॥

मिसेज़ अमीरहसन की किफ़ायतशआरी।

मिसेज़ अमीरहसन ने ब्याह के थोड़े ही दिनों बाद अपने शौहर के फ़िनेनशल हालत की तर्फ़ तवज्जह की और यह दर्याफ़्त करके कि मिस्टर अमीरहसन पर बहुत बड़ा बार क़र्ज़ का है और उनकी तनख़ाह उनके मसारफ़ के लिये काफ़ी नहीं सख़्त रञ्जीदा हुईं शादी से जो उनकी बड़ी गर्ज़ थी वह पूरी होते नज़र नहीं आती। याने फ़ारिग़ उलबाली और आराम।

मगर जान्स की बर्ख़ा से वापसी ने उस पर ऐसा असर किया था कि वह अब ऐश व इशरत की चन्दा ख़्वाहिशमन्द न थी उसे अब जो कुछ ज़रूरत थी एक ताक़तवर और साहब अख़्तयार शख़्स की जो बहालत मुसीबत उसके काम आवे और जान्स से उसको महफ़ूज़ रख सके।

मिसेज़ अमीरहसन ने उस वक़्त तक अपने शौहर से जान्स का मुतलक़ तज़किरा नहीं किया था और अमीरहसन बेचारा ज़रा भी आगाह न था कि उनकी प्यारी बीबी के पीछे इतनी आफ़तें लगी हुई हैं। यह बात कभी२ ज़रूर अमीरहसन के दिल में असर पैदा करती थी कि उनकी बीबी आज कल उदास और मग़मूम रहा करती है और जैसी शिगुफ़्ता और ख़न्दा पेशानी आगरे में थी वह बात बाक़ी नहीं है लेकिन ख़ुद इसी की निसबत कोई इस्तफ़सार करना ख़िलाफ़ मसलहत समझ के अब तक क़ुफ़्ल बरदहां थे। एक दिन वह कचहरी से ज़रा सबेरे आये और हस्ब मामूल अपनी बीबी के कमरे में गये देखा कि मेमसाहबा की आंखों से आंसू जारी हैं और वह मुंह लपेटे पलङ्ग पर पड़ी हैं।

शौहर — प्यारी तुम्हारी क्या हालत है मैं बराबर देखता हूँ कि तुम निहायत मग़मूम और उदास रहती हो इसका क्या सबब है?।

बीबी — कुछ नहीं मैं रञ्जीदा नहीं हूँ भला तुम्हारे पास रह कर रञ्ज मेरे पास आ सकता है।

औहर — मगर तुम आइना लेकर अपनी सूरत देखो मालूम होता है कि तुम घण्टों से रो रही थीं तुमको मेरे सर की कसम है अपना हाले दिल मुझ से साफ २ बतलाओ मैं हर तरह तुम्हें खुश करने की और तुम्हारा अन्दूह दफा करने की कोशिश करूंगा।

बीबी — प्यारे मैं आज यह ग़ौर कर रही थी कि हमारे तुम्हारे बसर कैसे होगी। मैं सुन्ती हूँ कि तुम्हारे ऊपर कर्ज़ का बहुत बड़ा भार है और तनखाह अभी तक तुम्हारी बहुत कम है जो मुश्किल से बसर औकात को भी काफ़ी है फिर क्या होगा। तुम्हारी जो जायदाद थी सब तल्फ हो चुकी भाई तुम्हारे बिलकुल बेपर्वाह हैं उन्हें तुम्हारी कुछ फिक्र नहीं फिर आखिर यह किश्ती कैसे पार लगेगी जब तुम अकेले थे उसकी बात दूसरी थी मगर अब हम तुम दो आदमी हैं और मुमकिन है कि जल्द कोई मेहमान खुदा भेजे ऐसी हालत में सौ रुपये में कैसे बसर होगी देखो खुदा के फ़ज़ल से दर्जे में तुम किसी से कम नहीं अफ़सर हो जेण्टिलमेन हो इस वास्ते मामूली रेलवे गार्डों की तरह आलू और बोफ पर रह भी नहीं सकते इज़्ज़त के लायक रहना भी चाहिये तनखाह तुम्हारी क्लर्कों से भी कम, मैं यही सोचती हूं कि क्या इन्तज़ाम किया जाये जो इज़्ज़त आबरू से हमारी बसर हो सके।

औहर — मैंने कभी इसका ख्याल भी नहीं किया और न मैं ऐसी बेहूदा बातों के लिये कभी अपना दिमाग़ फिराता हूं खुदा मालिक है कहो तो मैं अपनी ज़िन्दगी का बीमा करा दूं।

बीबी — कहीं खुदा के लिये ऐसा काम भी न करना अभी तो पूरे सौ रुपये घर में आ जाते हैं बीमे के बाद उनकी भी उम्मेद न रहेगी क्योंकि जिस कद्र कम्पनी से माहवार देने का इकरार होगा हर महीने खज़ानेही से कट जाया करेगा।

औहर — अजी घबराओ नहीं बहुत जल्द मेरी तनखाह बढ़ जायगी।

बीबी मुझे शक है। मैं सुन्ती हूं कलेक्टर और कमिश्नर दोनों तुमसे खफ़ा है।

औहर — कौन तुमसे कहता है यह महज़ ग़लत बात है कलक्टर साहब मेरे बड़े दोस्त हैं अलबत्ता कमि-

अर किसी कद्र नाराज़ हैं मगर उनका कुछ अख़्तियार नहीं वह क्या कर सकते हैं ।

बीबी — मेरी राय यह है कि ख़र्च में तख़फ़ीफ़ करना चाहिये ।

औहर — लेकिन मैं फ़ज़ूल ख़र्च नहीं हूं, तुम्हीं बतलाओ कि मेरे यहां बेज़रूरत कौन ख़र्च है ख़ानसामा ख़िदमतगार बेरा बावर्ची मशलची साईस कोचवान घोड़े गाड़ी इस में कौन चीज़ फ़ज़ूल है मैं खाने पीने में भी ज़्यादा ख़र्च नहीं करता एक बोतल ह्विसकी दूसरे रोज़ मँगवाता हूँ यह भी कुछ ज़्यादा नहीं ।

बीबी— तुम बुरा न मानना मैं इन सब चीज़ों को फ़ज़ूल समझती हूँ बेशक अगर तुम पांच सौ रुपये के नौकर होते तो मैं उन सब सामानों को कायम रखती लेकिन बहालत मौजूदा यह सब मसारफ़ ग़ैर ज़रूरी हैं और किसी तरह कायम नहीं रह सकते तुमको अलावा तनख़ाह के और भी कोई आमदनी नहीं मैं देखती हूं तुम्हारे यहां कोई डाली तक नहीं आता।

औहर — और आमदनी से तुम्हारा क्या मतलब है ?।

बीबी — क्या तुम्हारे यहां ऐसे मुकदमे नहीं होते जिसमें कुछ रिशवत मिल सके ।

औहर — मैं रिशवत नहीं लेता और न रिशवत को जायज़ समझता हूं, प्यारी यह बहुत बुरी बात है इसमें आदमी का इतबार जाता रहता है और हुक्काम में उसकी कुछ इज़्ज़त नहीं होती कोई अङ्गरेज़ रिश्वत नहीं लेता जब मैंने सब बातों में नई तहज़ीब के मुताबिक अपनी जिन्दगी को बाकायदा कर दिया तो मुझे रिशवत से भी वैसाही परहेज़ करना चाहिये जैसा अङ्गरेज़ करते हैं ।

बीबी — मगर तुम्हारी उतनी तनख़ाह नहीं ।

औहर — तनख़ाह रफ़्ता २ बढ़ जायगी अब अङ्गरेज़ी नौकरी में तरक्की वैसी ख़राब नहीं है जैसी पहिले थी ।

बीबी — फिर तुम्हारी तरक्की क्यों नहीं हुई ?।

औहर — सच यह कि मैंने अब तक इम्तिहान नहीं पास किया ।

बीबी — तुम ऐसा लायक आदमी कलकत्ता यूनीवर्सिटी का ग्राजूएट और

इम्तिहान न पास कर सके ।

शौहर — प्यारी मेरा क़ानून में जो नहीं लगता यही सबब था कि मैंने वकालत की तरफ तवज्जह नहीं की और यही सबब है कि आज तक इम्तिहान न पास कर सका मगर अब मेरा इरादा मेहनत करने का है और जिस तरह बनेगा इस साल इम्तिहान पास कर लूंगा ।

बीबी — इम्तिहान पास होतेही तनख्वाह बढ़ जायगी ? ।

अमीरहसन — फौरन् ।

बीबी — उस वक्त तक अगर ऊपर से कुछ मिल जाया करे तो ज़रूर ले लिया करो जब तनख्वाह बढ़ जाय रिश्वत लेना भी तर्क कर देना ।

शौहर — प्यारी यह हर्कत मुझसे नहीं हो सकती तुमको नहीं मालूम तमाम हिन्दुस्तानी मेरे दुश्मन हो रहे हैं और सब मुझसे नाराज़ हैं लेकिन मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचा सका इसका सबब यही है कि मैं बेलौस हूँ और मुतदैय्यन हूँ वर्ना अब तक खुदा जाने कितने मुकद्दमें मेरे ऊपर ये लोग दायर करा के मुझे जेलखाने भिजवा चुकते । बहरहाल मैं मिस्टर मावेल से मिलूंगा और उनसे दर्ख्वास्त करूंगा कि मेरी तरक्की तनख्वाह की फिक्र करें शायद वह मदद करें ।

बीबी — मगर बिलफेल जब तक तरक्की न हो खर्च कम करना चाहिये ।

शौहर — क्योंकर ? जो तुम सलाह दो मैं क़बूल करने को तैयार हूँ ।

ले चल जिधर को चाहे मुझे मिस्ल बूये गुल ॥ मैंने तो अख्तियार तुझे दे सबा दिया ॥

बीबी — प्यारे अव्वल तुम शराब पीना तर्क करो, देखो यह निहायत बुरी चीज़ है और किस कद्र मुज़िर सेहत है ।

शौहर — प्यारी तुमको याद है सब से पहिले तुम्हीं ने यह कम्बख्त बला मेरे सर लगाई थी और मैं बार बार यह कहता था कि :—

ऐ ज़ौक देख दुख्तरे रज़ को न मुँह लगा ॥ छुटती नहीं है मुँह से यह काफ़िर लगी हुई ॥

मगर तुमने मुझे मजबूर किया अब जब मेरी यह हालत हो गई ।

मै से गर्ज़ निशात है किस रूसियाह को ॥ यक्गूना बेखुदी मुझे दिनरात चाहिये ॥

तब मुझसे यह ख़ाहिश कि मैं तर्क मैं कर दूँ किस क़द्र जुल्म है।

बीबी — बेशक पहिले मैं शराब खानाखराब को अच्छा समझती थी लेकिन तजरबे ने मुझे सिखला दिया कि यह निहायत ख़राब चीज़ है, हज़ारहा नौजवान इसी के बदौलत आग़ाज़ शबाब में मर गये सदहा ख़ान्दान इसी के बदौलत तबाह हो गये। ऐ प्यारे ऐसी ख़राब चीज़ मैं तुम्हारे लिये कभी जायज़ नहीं रख सकती।

शौहर — अच्छा एक यह हुई, अब दूसरी वह कौन चीज़ है जो तुम फ़ज़ूल समझती हो ?।

बीबी — तुम्हारे यहां नौकर ज्यादा हैं और बिलकुल बे ज़रूरत हैं इन सब को आजही जवाब दे दो। एक खिदमतगार जो पका भी ले और खिला भी सके बहुत काफ़ी है और किसी की ज़रूरत नहीं। मैं कपड़ा अपने हाथ से पहिन लिया करूँगी मुझे आया की ज़रूरत नहीं। तुम्हारा सब काम चपरासी कर दिया करेगा तुमको इस फ़ौज की कुछ एहतियाज नहीं जो अब नाहक भरती हुई है। प्यारे मेरी राय यह है कि सब नौकर आजही बरतरफ़ कर दिये जायँ और हिदायतरसूल भी रुख़सत कर दिये जायँ महज़ फ़ज़ूल पड़े हुये हैं आख़िर वह किस मर्ज़ की दवा हैं ?।

शौहर — मगर एक खिदमतगार से कैसे काम चलेगा ?।

बीबी — अच्छी तरह, बहुत से काम मैं खुद कर लिया करूँगी और जिस तरह मुमकिन होगा तुम्हें तकलीफ़ न होने दूंगी।

शौहर — हिदायतरसूल भी तुम्हारी राय में फ़ज़ूल हैं ?।

बीबी — महज़, तुम्हीं इन्साफ़ करो कि उसके कयाम से क्या फ़ायदा ? जब तुम तनहा थे उस वक़्त ऐसे बेफ़िकरों का रहना कुछ नाज़ेबा न था मगर मेरी मौजूदगी में ऐसे लोग तुम्हारे साथ नहीं रह सकते। तुम्हीं बतलाओ किसी अँगरेज़ के यहां इस किस्म के मसारफ़ तुमने कभी देखे हैं ? मैं समझती हूं यूरोपियन लोग इस बात को अगर सुनेंगे तो सख़्त नफ़रत करेंगे।

शौहर — प्यारी मुझे तुम प्यारी हो, हिदायतरसूल प्यारा नहीं, मुझसे नाहक पूंछती हो जिसको चाहो रक्खो जिसको चाहो निकाल दो।

बीबी — इसके इलावा मेरी राय है गाड़ी और घोड़े भी तुम्हारे पास बेकार हैं उनको भी फरोख्त कर डालो। साईसों की तनखाह बचेगी और जो कीमत नगद वसूल होगी उससे कर्ज़ अदा होगा।

शौहर — मैं कचहरी कैसे जाया करूंगा और तुम हवा खाने कैसे चला करोगी ?।

बीबी — तुम्हारे पास बाइसिकल है कचहरी उस पर जा सकते हो। रहा मेरे हवाखोरी का ख्याल। प्यारे यह तुम्हारी मोहब्बत है जो मेरे आराम का ख्याल हर वक्त मद्दे नज़र रखते हो मगर अब अपने आराम को बालाय ताक रख कर गिरस्ती का इन्तज़ाम करना चाहिये मैं हवा खोरी की औव्वल तो आदी नहीं दूसरे टहलने से बेहतर कोई खुश आयन्द तफ़रीह नहीं।

शौहर — खैर राजी हूँ मैं उसी में जिसमें तेरी रज़ा हो।

बीबी — मेरी राय एक और है अगर खफ़ा न हो।

शौहर — शौक से कहो भला मैं तुम्हारी बात पर खफ़ा हो सकता हूँ।

बीबी — मेरे नज़दीक यह बँगला भी छोड़ देना चाहिये इसका किराया बहुत गिरां है और कचहरी से भी दूर है। वह छोटा बँगला जो मिस्टर मावेल ने तुम्हारे लिये तजवीज़ किया था उसी को फिर किराये पर ले लो, हम तुम बहुत आराम से उसमें बसर कर सकेंगे मैं समझती हूँ वह बँगला शायद दस रुपए किराये पर मिल जायगा और जो फर्नीचर तुम्हारे पास बेकार है वह भी फ़रोख्त कर डालो। ज़रूरी सामान छोटे बँगले के लायक रख लें और सब निकाल डालें इससे भी अदाय कर्ज़ में मदद मिलेगी। प्यारे जितना कर्ज़ दोगे उसी कद्र आराम मिलेगा और सूद का भार कम होगा।

शौहर — मगर तुमने तो गज़ब ही कर दिया एक दम से यही क्यों नहीं कह देतीं कि हम तुम दोनों संखिया खा लें कुल बखेड़ा ही तमाम हो जाय। जब मैं तनहा उस ज़लील बँगले में न रह सका तो अब हम तुम दोनों उसमें क्योंकर रह सकेंगे ?।

बीबी — बहुत आराम से और बहुत अच्छी तरह।

शौहर – तुमने वह बँगला देखा

भी है भला वह किसी भले आदमी के रहने के लायक है सूअर बाड़ा मालूम होता है ।

बीबी — मैंने अच्छी तरह देखा है उसमें तीन कमरे हैं दो गुसलखाने हैं और क्या चाहिये एक में तुम रहना और उसको अपना दफ्तर बनाना दूसरे में खाने की मेज़ रहेगी तीसरे में हमारे तुम्हारे पलँग रहेंगे ।

औहर — और जो कभी कोई जेन्टिलमेन मिलने आवे या किसी की दावत करनी हो ।

बीबी — प्यारे दावत और मेहमान निवाज़ी का ख्याल अभी चन्दे मुल्तवी रक्खो अभी न कोई दावत खानेवाला है और न किसी के बुलाने की ज़रूरत है । यह सब बातें उस वक्त भली मालूम होती हैं जब इन्सान फ़ारिगुलबाल हो जब आदमी के पास उसको एहतयाज़ से ज्यादा रुपया हो इफ़लास में यह सब खेल तमाशे अच्छे नहीं मालूम होते हम लोग मुफ़लिस हैं मोहताज हैं ।

औहर — तुम आज कैसी बातें कर रही हो हम काहे को मुफ़लिस और मोहताज होने लगे हमारे दुश्मन ग़रीब हों ।

बीबी — बेशक यह अलफाज़ तुम्हें बुरे मालूम होते होंगे जैसा कि हमेशा सच्ची बात का कायदा है लेकिन क्या हमारे मुफलिस होने में कुछ कलाम है ? तुम्हीं बतलाओ तुम्हारा किस कद्र रुपया बंक में जमा है आज तुम्हारे बक्स में कितने नोट बन्द हैं ? तुम्हारे पास कितनी आमदनी का इलाका है ? जब महज़ नौकरी पर भरोसा है और वह भी ऐसी कलील तनख्वाह की तो कौन कह सकता है कि हम मुफ़लिस नहीं हैं । मगर इफ़लास कोई बुरी चीज़ नहीं है, यह भी खुदा की मर्ज़ी है, इस लिये वह जिस हाल में रक्खे आदमी को शुकरगुज़ार होना चाहिये और शिकवा नहीं करना चाहिये मगर उस के साथ यह लाज़मी है अपना इन्तज़ाम इन्सान को दुरूस्त करना चाहिये जिस क़दर कपड़ा हो उस क़दर लम्बा कोट किता कराना चाहिये चादर के बाहर पैर फैलाना खिलाफ अकल है ।

औहर— मेरी फिलास्फर डार्लिंग ! मेरी रिफामर डारलिंग ! —प्यारी जिसके पास तेरी सी बीबी हो वह मुफ़लिस कहा नहीं जा सकता ।

बीबी — मैं फ़िलासफ़र या रिफ़ार्मर नहीं हूं लेकिन जो हालत आज कल तुम्हारी है वह बहुत दिन नहीं चल सकती और उसको देख २ कर मुझे सख्त वहशत हो रही है।

शौहर — मुझे इन मामलात में ज़रा दखल नहीं और न मैंने आजतक कभी ख्याल किया कि इस कर्ज़दारी का अंजाम क्या होगा। सच यों है कि मैं आज तक कर्ज़ को भी एक किस्म का फ़ैशन समझता था लेकिन अब तुमने इधर तवज्जह की मैं भी तुम्हारे तामील हुक्म को मौजूद हूं मगर एक शर्त है मुझे खाने कपड़े की तकलीफ न देना और जो चाहना करना बकौल शख्से खाओ पिओ और खुश रहो अगर मैं इसी तरह हर वक्त इन बातों को सोचता रहता तो शायद अब तक कब का पागल होगया होता हर वक्त हँसी खुशी से दिन काटना बहुत उमदी बात है।

ज़िन्दगी ज़िन्दादिली का है नाम।
मुर्दादिल खाक जिया करते हैं ?॥

बीबी — मैं वाकिफ़ हूं मर्द अकसर ऐसे बेपर्वाह होते हैं मगर औरतों को खबर्दार रहना चाहिये। खुदा बख्शे कप्तान कोल भी ऐसा ही फज़ूल खर्च और बेपर्वाह था। मिसेज़ अमीरहसन ने उस रोज़ से इन्तज़ाम पर कमर बांधी और दूसरे रोज़ पहला काम यह किया कि एक छोटा बँगला लेलिया वह बड़ा बँगला छोड़ दिया और ज़रूरी असबाब मुन्तखिब करके छोटे बँगले में भेज दिया और बाकी कुल सामान घोड़े गाड़ी फर्नीचर नीलाम कर दिये और इस होशयारी से यह सब काम किया कि देखनेवाले तारीफ करते थे कुल असबाब के फरोख्त से करीब ढाई हज़ार रुपया वसूल हुआ जिसे मिसेज़ अमीरहसन ने अपने कबज़े में किया। अमीरहसन इस कार्रवाई से बदिल नाराज़ थे और मारे शर्म के कमरे से बाहर नहीं निकलें, मगर अपनी मेमसाहबा के खौफ से कुछ न बोल सके। नौकरों में जुदा खिचड़ी पक रही थी कि क्या होनेवाला है मगर किसी को असली वाका से कानों कान ख़बर न थी। कोई कहता था कि साहब की बदली होने वाली है इस से सब चीज़ें नीलाम हो रही हैं कोई कुछ कहता था कोई कुछ कहता था मगर किसी को यह जुर्रत न होती थी कि साहब या मेम

साहब से दर्याफ्त करता हिदायतरसूल से ज़ब्त नहीं होसका और उन्हों ने अमीरहसन से दर्याफ्त किया कि यह क्या हो रहा है अमीरहसन ने कोई साफ़ जवाब न दिया और कहा कि मेम साहब जानें वह मालिक व मुख्तार हैं।

हिदायतरसूल को मेम साहबा की यह हर्कत ऐसी बुरी लगी कि उस ने मिसेज़ अमीरहसन से इस बारे में गुफ्तगू करना भी नामुनासिब समझा। वह भी कुल नौकरों की तरह दिल बरदाश्ता था।

खान्सामा — कहिये हुज़ूर! क्या हालात हैं कुछ समझ में नहीं आता।

हिदायतरसूल — हालात क्या हैं।

हर एक चीज़ पै वन् टू की हो रही है पुकार। अवध से चीफ़ कमिश्नर चले मुबारकबाद॥

खान्सामा — बँगला भी छोड़ दिया गाड़ी घोड़े भी फरोख्त हो गये अब हम लोग अपनी भी खैर नहीं देखते; रँग बेरंग नज़र आते हैं।

हिदायतरसूल हां मुझे भी कुछ आसार अच्छे नहीं मालूम होते। मेम साहब ने तर्कीब अच्छी निकाली और मियां के पास था ही क्या, काठ कबार था वह भी बेचकर कीमत गुल्लक में धर ली।

खान्सामा — हम लोगों की तनखाहें भी कई महीने से बाकी हैं। बनिये का हिसाब तीन महीने से चढ़ रहा है इसी में सब अदा कर दीजिये वर्ना जब रुपये खर्च हो जायगे तो फिर दिक्कत होगी।

हिदायतरसूल — मांगते क्यों नहीं, मैं मनाकरता हूं। मुझे मेमसाहब की इस हर्कत पर खान्सामांजी सख्त गुस्सा आरहा है। ग़ज़ब खुदा का हम लोगों से मश्विरा तक न किया और हज़ारहा रुपये की चीज़ें कौड़ियों के मोल बेच डालो। भई अब मेरा भी इरादा यहां रहने का नहीं है अब इस घर में गुज़र दुश्वार है।

मिसेज़ अमीरहसन सब चीज़ें फरोख्त कर चुकीं और कीमत वसूल हो गई, नये बँगले में उठगईं, उस रोज़ सब नौकरों को बुलवाया और एक दम से बर्खास्तगी का हुक्म सुना दिया।

मेम साहब — मैं तुम लोगों से बहुत खुश थी लेकिन चन्द वजूह से अब इतने नौकर मैं नहीं रख सकती सिर्फ़

बिदेसी चमार बतौर खिदमतगार के रहेगा वही खाना पकायेगा और खाना खिलायेगा; अगर उसको दोनों काम करना हो रहे वर्ना मैं दूसरा नौकर बुला लूंगी उसके सिवा और सब बर्खास्त ।

खानसामा — भिश्ती और मेहतर भी बर्खास्त होंगे या रहेंगे ? ।

मेमसाहब — भिश्ती की कुछ ज़रूरत नहीं एक पङ्खाकुली रहेगा वह सब काम कर लेगा, मेहतर बर्खास्त नहीं हो सकता वह बदस्तूर रहेगा ।

सब नौकर — हुज़ूर हम लोगों की तनखाह दिलवायें हम लोग रुखसत हों, खाना आबाद दौलत ज्यादा ।

मेम साहबा — तुम लोग पहिली तारीख को तनखाह के लिये हाज़िर होना, मै सबका हिसाब कर दूंगी ।

खानसामा — असबाब की कीमत का रुपया हुज़ूर के पास मौजूद है हम सबको रुखसत कर दीजिये, दौड़ाने से कुछ फ़ायदा नहीं । हम लोग ग़रीब आदमी है दूसरी जगह नौकरी ढूंढे ।

मेम साहब— नौकरों की तनखाह साहब की तनखाह से मिल सकती है और किसी रकम से नहीं मिल सकती । अच्छा तुम लोग सब रुखसत हो बेल बिदेसी तुमको नौकरी मँजूर है या नहीं ?।

बिदेसी — हुज़ूर जानती है मेरे लड़के बाले सब यहां है मै कभी नौकरी छोड़ सकता हूँ, मुझे मंज़ूर है ।

मेमसाहब बहुत बेहतर ।

मिसेज़ अमीरहसन ने सब इन्तज़ाम कर लिये मगर हिदायतरसूल अब तक धरना दिये हुये मौजूद है । न साहब की जुर्रत पड़ती है कि उनको जवाब दे और न मेम साहबा की । दो रोज़ गुज़रे चार रोज़ गुज़रे और कोई हिदायतरसूल से खबर नहीं होता आखिर एक रोज़ मिसेज़ अमीरहसन ने जी मज़बूत करके हिदायतरसूल को बुलाया ।

मेम — मिस्टर हिदायतरसूल मैं जानती हूँ आप मेरे शौहर के दिली दोस्त है और हर तरह उनके खैरतलब है ।

हिदायतरसूल — मैं खैरख़ाह हूँ या बदख़ाह, आप अपना मतलब फ़र्माइये ।

मेम — आप जानते हैं कि मेरे

शौहर ने बेवकूफ़ी से किस कद्र कर्ज़ अपने जिम्मे कर लिया है और किस कद्र फ़ज़ूलखर्ची की।

हिदायतरसूल — मेमसाहब आप के मुँह से यह बातें मुझे अच्छी नहीं मालूम होतीं, ज़रा इन्साफ़ कीजिये बेचारे को तबाह किसने किया बर्बाद किसने किया अब चूहे को मार के गोबर सुँघाने से जिन्दा करने की कोशिश करती हैं! और मुझे हंसी आती है पिछले हालात का तो ज़िक्रही फ़ज़ूल है और आप नाहक गड़े मुर्दे उखाड़ती हैं।

मेम — मिस्टर हिदायतरसूल तुम मुझ पर नाहक इलज़ाम लगाते हो मैंने अपने शौहर को किसी तरह नुकसान नहीं पहुंचाया। बहरहाल इन बातों से कुछ वास्ता नहीं अब मेरे शौहर की हालत अच्छी नहीं और इस वजह से हर किस्म के अख़िराजात में मुझे तखफ़ीफ़ करनी पड़ी मेरे शौहर की यह मर्ज़ी है कि चन्दे आप भी अपने वतन को चले जायँ और मेरे शौहर को तनहा छोड़ दीजिये जब उनकी हालत दुरुस्त हो ले आप वापस आइये, शौक से रहिये आप का घर है मैं और मेरे शौहर दोनों आपकी मेहमाननिवाज़ी को हमेशा तयार रहेंगे।

हिदायतरसूल — यह आपकी मर्ज़ी है या आपके शौहर की कि मैं यहां से चला जाऊं?।

मेम — मेरी और मेरे शौहर की भी।

हिदायतरसूल — बहुत बेहतर मैं आजही चला जाऊँगा मगर मेमसाहब इतना याद रखिये कि—

समझकर हड्डियां मेरी चबाना॥
छुमां तेरी भी आख़िर उस्तख्वां हैं॥

मेम — आप मुझको क्या धमकाते हैं मैंने आपके साथ कोई बुराई नहीं की? आप इन्साफ करें कि मुझे अपने शौहर की खैरख्वाही मुकद्दम है या आप की?।

हिदायतरसूल — ख़ैर मुझे इन बातों से कुछ मतलब नहीं मैं इस वक्त आपके यहां से जाकर बाज़ार में रहूंगा ख़ुदा हाफ़िज़।

बाब छत्तीसवां।

नालिश की तैयारियां।

इधर मिस्टर अमीरहसन के यहां के

मौकूफ़शुदा मुलाज़िम शहर में और जमानड मियां हिदायतरसूल साहब सरा में मुकीम थे और तरह२ की बात से अमीरहसन और उनकी बीबी को बदनाम कररहे थे, उधर मिस्टर जान्स और उनके साथियों का काफ़ला वारिद इटावा हुआ और खान्सामा की मार्फत भूतवाला बँगला उनके कयाम के लिये तय होगया। बँगला किराया करने के बाद मिस्टर जान्स को मुलाज़िमों की फ़िक्र हुई।

जान्स—खान्सामा! तुमने अब तक नौकर नहीं बुलाये? तुम जाओ और डिप्टीसाहब के नौकरों को बुला लाओ हम सबको नौकर रख लेगा और बहुत अच्छा तनखाह देगा।

खान्सामा—साहब हम गया था सब नौकर लोग तैयार हैं थोड़ी देर में आता होगा, मौलवी हिदायतरसूल डिप्टी साहब का बड़ा भारी दोस्त था और शादी के पेश्तर उसका हुक्म चलता था मेम साहब ने उसको भी निकाल दिया वह भी अब नौकरों के साथ है।

गर्नर—जान्स! हिदायतरसूल बड़ा होशियार आदमी है उससे हमारे काम में बहुत मदद मिलेगी उसको भी बुलाओ।

जान्स—खान्सामा! तुम मौलवी साहब को भी बुला लाओ वह नौकरी करेगा तो हम उसको भी रख लेगा।

खान्सामा—मगर वह हुज़ूर का काम कैसे कर सकेंगे अंगरेज़ी नहीं जानते।

जान्स—तुम इसका फ़िक्र न करो हम उसके लिये काम तजवीज़ कर लिया है।

खान्सामा उस वक्त फिर गया और मौलवी हिदायतरसूल व जुमला मुलाज़मान मौकूफ़शुदा को डांकबँगले में बुलालाया; हिदायतरसूलने गर्नर और ऐटकिन्स को पहिचाना और निहायत अदब से सलाम किया।

हिदायतरसूल — अहाहा! हुज़ूर कहां?।

गर्नर—वेल मौलवी साहब हम भी यहां आगया मगर खबर्दार किसी से इसका ज़िक्र न करना।

हिदायतरसूल— मुझसे इस क़िस्म का खौफ़ आप न करें।

आपकी बात मुँह से गर निकले।
यह निमक फूट २ कर निकले॥

गर्नर — तुम को भी मेमसाहब ने जवाब दे दिया ?।

हिदायतरसूल — क्या अर्ज़ करूँ कहते डर मालूम होता है शायद हुज़ूर नाराज़ हों।

गर्नर — श्रो तुम साफ २ बोलो कुछ रंज न करो मेम साहब ने सब के साथ बदसलूकी किया। देखो ऐटकिन्स साहब को बिलावजह जवाब दिया हम को भी बहुत खर्चा नहीं दिया, और मुसल्मान से ब्याह किया और यह साहब तुम जानते हो कौन हैं ? यह जान्स साहब है इन्हीं के साथ पहिला शादी मेमसाहब का हुआ था।

हिदायतरसूल — अहाहा हुज़ूर का नाम जान्स है बखुदा वह इख़्लयाक मुलाज़मत था कि बयान नहीं कर सकता और जो खुशी इस वक्त आप सब साहबों को देख कर हुई है।

दिलेमन् दानद व मन दानम् व दानद् दिलेमन्॥

गर्नर—आप मौजूद था जब ब्याह हुआ ?।

हिदायतरसूल — क्या अर्ज़ करूँ ज़बर्दस्ती मुझी को पकड़ के निकाह पढ़वाया। आप जानते हैं मैंने डिप्टी साहब के साथ क्या२ सलूक किये हैं उन सब सलूकों के एवज़ में यह एहसान कि दूध की मक्खी की तरह निकाल बाहर करदिया। मेरी मुद्दत की दोस्ती डिप्टी साहब से तर्क करा दी सब नौकर चाकर बर्खास्त कर दिये और एक छोटे से बँगला में कूंजड़ो की तरह कयाम किया है तमाम ज़माना थूक रहा है।

गर्नर — डिप्टी साहब इस तरह मेम साहब के कहने में है कि आप को भी निकाल दिया ?।

हिदायतरसूल — डिप्टीसाहब को मालूम होता है कि उल्लू का गोश्त खिला दिया है मोम की नाक हो रहे हैं।

गर्नर — फिर क्या इरादा है ?।

हिदायतरसूल — हुज़ूर चन्दही रोज़ में देखेंगे कि इसका क्या अंजाम होता है यह बेड़ा पार होनेवाला नहीं।

जान्स—वेल मौलवी साहब आपसे कोई पर्दा नहीं हमलोग भी इसवास्ते आया है कि इस बेवफ़ा औरत से बदला लें जिसने हमारा नाम हमारी इज्ज़त और हमारी आबरू सब ख़ाक में मिला दी आप अगर मदद करें तो

हम बहुत शुकरगुज़ार होगा और अब तक हम लोग यहां हैं आप हमारे साथ रहिये और सब नौकरों को आज की तारीख़ से हम नौकर रख लेगा और बहुत ख़ुश करेगा।

हिदायतरसूल — अगर हुज़ूर कुल मुलाज़मान मौकूफ़शुदा को भर्ती करलें तो मैं भी तनख़्वाह ख़िदमत को हाज़िर हूं और इस वक़्त मैं भी नहीं बतला सकता थोड़े दिनों में कहूंगा जो काम मैं कर सकता हूं। मेम साहब को हुज़ूर चाहें तो आज जेलख़ाना भिजवा सकता हूं मगर डर यही है कि मुझको दुनिया निमकहराम कहेगी कि जिस रईस के साथ इतने दिन ऐश किया उसकी बीबी को कैद करा दिया।

जान्स — कोई आपको इलज़ाम नहीं दे सकता बल्कि तमाम दुनिया आपकी शुकरगुज़ार होगी। दरअसल आपके दोस्त के साथ यह सलूक होगा क्योंकि अव्वल तो मेरी ब्याहता बीबी के साथ उसने शादी करली और यह बात ख़िलाफ़ कानून है और दूसरे ऐसी बदज़ात और बेवफ़ा औरत को उसके किरदार की सज़ा देना तमाम दुनिया की औरतों को ख़बरदार करना है कि वह अपने शौहरों से ऐसी बदसलूकी न करें जैसी उसने मेरे साथ की।

गर्नर — जान्स ! इस दर्जा बेरहम न हो मुझको इस वक़्त तक उमेद बाकी है कि एक दिन एलिस फिर तुम्हारे पास आ जायगी।

हिदायतरसूल — यह उमेद शायद क़यामत में पूरी होने की भी तवक्का न रखिये। आप मेमसाहब के मिजाज से शायद वाकिफ़ नहीं वह एक ज़िद्दी बेरहम और चालाक औरत है।

जान्स—मौलवी साहब ! आप साहबकी बातों पर न जाइये साहब उनके वालिद हैं इस वजह से पूरी मोहब्बत उनके साथ है और बावजूद इन सब बदसलूकियों के वह कुल ख़ताओं से चश्मपोशी कर रहे हैं आप हमारी मदद कीजिये और हम आपकी मदद करें।

हिदायतरसूल – मेरे पास जो नुसख़ा है उसमें किसी इमदाद की एहतियाज नहीं उसको तीर हदफ़ समझिये मगर उसमें थोड़ासा मुझको भी ख़तरा है मैं कुल नतायज पर ग़ौर कर लूं तब आप से इस बारे में मश्विरा करूंगा।

जान्स — मगर मैं इस वक्त तन्हाई में मिल सकता हूं आप मुझ पर पूरा भरोसा कीजिये मैं कोई दग़ाबाज़ या ऐय्यार शख्स नहीं हूं । मैं अंजील पर हाथ रखकर इस वक्त आप से वादा करता हूं कि ताज़ीस्त आपका दोस्त और मददगार रहूंगा और जो कुछ आपको इस काम में ख़र्च की ज़रूरत हो वह भी दूंगा ।

हिदायतरसूल — बहुत बेहतर मैं इस बारे में कल आपसे गुफ्तगू करूंगा ।

गर्नर — अगर तुम्हारी राय हो तो मैं आज एलिस से मिलने जाऊं और देखूं उसके अब क्या इरादे हैं एक मौका उसको देना चाहिये अगर अब भी राह रास्त पर आजाय तो क्यों बेचारी को ज़लील करूं । देखो एलिस वही एलिस है जिसको बहुत दिन नहीं हुये तुम दिलसे मोहब्बत करते थे । और हिन्दुओं की तरह उसकी परस्तिश करते थे ।

जान्स — पापा मैं अब भी उसकी परस्तिश करने को मौजूद हूं मैं उस को पहले से भी ज्यादा चाहने को तयार हूं मैं जानता हूं अगर वह मेरी मोहब्बत कबूल करने को रज़ामन्द हो तो मैं उस की तमाम खतायें माफ करदूं ऐ काश वह एक मर्तबा भी निगाह हुब्ब से मेरी तरफ देखलेती मगर अफसोस हज़ार अफसोस उसको तो कुछ ख्यालही नहीं ।

हिदायतरसूल — गर्नर साहब आप कैसी बातें कररहे हैं । मिसेज़ अमीरहसन बाज़ाबता शादी होजाने के बाद अब अमीरहसन को छोड़ कर मिस्टर जान्स से मिलने आवेगी । अस्तग़फरुल्ला ई ख्याल अस्त व महाल अस्त व जनूं ।

गर्नर — हां शायद तुम्हारी राय सच है बेशक वह अब राह रास्त पर नहीं आ सकती ।

हिदायतरसूल — जनाब मुझे शुबहा है कि शायद आप से मुलाकात भी न करे ।

गर्नर — क्या ऐसी बेरहम होजायेगी कि बुढ़े बाप से मिलना भी गवारा न करेगी ?।

हिदायतरसूल — अगर आपका इरादा हो तो आज शाम को तशरीफ ले चलिये मैं भी आपके हमराह हूंगा देखें वह आप से मिलती हैं या नहीं ।

जान्स — अगर मौलवी साहब

आपके साथ जांय तो मुझको इसमें कुछ उज़्र नहीं आप मिल आइये मगर मेरे यहां आने का तज़किरा न कीजियेगा।

उस वक़्त यह राय करार पा गई कि गर्नर साहब मिसेज़ अमीरहसन से मिलने जायँ और वहां के रंग ढंग देखें मगर हिदायतरसूल ज़रूर हमराह हों। सब को हिदायत कर दी गई कि शहर में जान्स साहब का नाम मुतलक़ ज़ाहिर न किया जाये बल्कि जदीद सौदागर के लक़ब से सब मशहूर किये जांय।

जान्स — मौलवी साहब ! हमको यहां के सब साहब लोगों से मिलना ज़रूर होगा।

हिदायतरसूल — बेशक आपको सब साहब लोगों से मिल लेना चाहिये और ख़ासकर कलक्टर साहब व जज साहब व कप्तानसाहब पुलिस से और इन सबसे आप ज़ाहिर कर दीजिये कि वह मेम साहब जो अमीरहसन के घर में हैं आपकी मनकूहा ज़ौजा हैं अब तक बेचारा अमीरहसन इसराज़ से वाकिफ़ नहीं। उसका धोखा है कोई खुशामद की बात नहीं अमीरहसन ऐसा नेक और साफ़दिल इन्सान मेरी नज़र से नहीं गुज़रा उसी औरत ने बेचारे को बर्बाद कर दिया बाप का छोड़ा हुआ रुपया ख़ाक में मिलवा दिया भाई मां जोरू सब से जुदाई करा दी और हाय आख़िर में हिदायतरसूल से भी लड़ाई करादी।

जान्स — क्या आप को खूब मालूम है कि अमीरहसन इस राज़ से वाकिफ़ नहीं।

हिदायतरसूल — मैं हलफ़ उठा सकता हूं कि अमीरहसन अब तक यह भी नहीं जानते कि इस औरत के क्या २ अफ़साने हैं। वह बेचारा इस ख़्याल में है कि विलायत में कोई बड़ा रईस उसका बाप है और मील उसका शौहर था जो खुदागंज में हुकूमत कर रहा है वह क्या जाने कि मिस्टर मर्नर उनके वालिद बुज़ुर्गवार हैं और हुज़ूर उनके शौहर नामदार।

जान्स — और अगर आप वाकिफ़ होते तो क्या तुम्हारे ख़्याल में शादी न करते ?।

हिदायतरसूल—हर्गिज़ नहीं।

जान्स— और अगर अब वाकिफ़ हों तो क्या करें ?।

हिदायतरसूल — अगर उन्हें यक़ी-

न हो जाय तो मैं समझता हूं कि आप हो उसको निकाल दें।

जान्स — फिर तुम्हारी क्या राय है मैं पहले अमीरहसन ही से मुलाकत न करूं।

हिदायतरसूल निहायत उमदा, बहुत मुनासिब।

जान्स — उनसे कुल किस्सा बयान करूं और कुल कागज़ात जो मेरे पास है दिखाऊं, अगर अमीरहसन अपनी हर्कत पर मुनफेल हों और उस हरामज़ादी को निकाल दें तो मैं उनके साथ कोई बुराई न करूं। किसी नावाकिफ़ और अनजान आदमी को सज़ा दिलाना या उसको बला में फँसाना शरीफ़ का काम नहीं जब उस औरत ने उन्हें यकीन दिला दिया कि वह आज़ाद और बेवा है उसमें अमीरहसन का क्या कसूर ?।

हिदायतरसूल — इसकी निसबत मैं हलफ़ कर सकता हूं कि अमीरहसन ने जान बूझ कर यह शादी नहीं की वह बेचारा धोखे में मारा गया चाहे अमीरहसन में कोई ऐब हो लेकिन वह झूठा व दगाबाज़ या मुफसिद शख्स नहीं है, उससे ज्यादा रईसमिजाज आदमी मुश्किल से पैदा हो सकता है जान्स साहब आप खुदा के लिये उनके खिलाफ कोई कार्रवाई न कीजिये मैं भी इतना कानून जानता हूं कि अमीरहसन अज़ दावाविज़ मुकर्रर की इल्लत में माखूज़ हो सकते हैं और खुदा और कानून दोनों के नजदीक आप के गुनहगार हैं मगर ला-इलमी का कसूर खुदा भी माफ करता है।

हिदायतरसूल गो कैसाही चालाक और लालची शख्स हो लेकिन अमीर हसन का इन अमूर में बदख्वाह नहीं था वह किसी तरह उनकी बदनामी या ज़िल्लत नहीं चाहता था, जान्स की गुफ्तगू सुनकर उनके होश उड़ गये और उनकी आंखों में मालूम नहीं कितने २ समा घूमने लगे। वह खूब जान्ता था कि अमीरहसन इस शादी की बदौलत अपने पैरों में कुल्हाड़ी मार चुके वह यह भी जान्ता था कि इस तकरीब में खुद उसका बहुत कुछ क्या धरा है वह उस वक्त सख्त घबरा गया और ज़रा भी उसके समझ में नहीं आता था कि अमीरहसन के बचाने की क्या तदबीर करनी चाहिये। उसे यह उम्मेद न थी कि वह इन सब हालात

के सुबे के बाद उस औरत को निकाल देंगे क्योंकि अमीरहसन पर उसका फ़सूँ कारगर हो चुका था उसको यह भी तवक्का न थी कि मौजूदा हालात में अमीरहसन का कोई दोस्त या अज़ीज़ मददगार होगा और उनको इस आफ़त से बचाने की कोशिश करेगा यह सब ख़तरात ख्याल करके हिदायतरसूल सख़्त परेशान होगया।

हिदायतरसूल—जान्ससाहब! आप ज़रूर मिस्टर अमीरहसन से मिलिये और ख़ुदा के लिये बग़ैर बतलाये उनपर हमला न कीजिये ग़ाफ़िल पाकर मारना सख़्त नामर्दी की बात है मेरे नज़दीक गर्नर साहब का भेजना महज़ फ़ज़ूल है, हुज़ूर चलें और अमीरहसन से मिलें।

जान्स — हां अगर अमीरहसन उसको निकाल दें तो सब मामले तै हो सकते हैं और बावजूद इनसब ख़ताओं के मैं उसको फिर ज़ौजियत में कबूल कर लूंगा और पुराने किस्से सब भुला दूंगा।

हिदायतरसूल—फिर क्या है गर्नर साहब को मना कर दीजिये और आप मेरे साथ चलने की तैयारीकीजिये।

हिदायतरसूल — आज अमीरहसन कचहरी भी न गये होंगे ख़ूब मौके से मुलाकात होगी इस वक़्त तशरीफ़ ले चलिये।

जान्स ने हिदायतरसूल की यह राय बहुत पसन्द की और फ़ौरन् मिस्टर एटकिन्स और मिस्टर गर्नर दोनों से मशविरा किया उन दोनों साहबों ने भी इत्तफ़ाक किया। हिदायतरसूल ने फ़ौरन् शहर से गाड़ी मँगवाई और मिस्टर जान्स को मैं साज़ व सामान हमराह ले कर रवाना हुये।

ऐटकिन्स — पहिले तुम अपना नाम न ज़ाहिर करना बल्कि कोई फ़र्ज़ी नाम कार्ड पर दूसरे ख़त में लिख कर भेज देना, वर्ना शायद मिसेज़ अमीरहसन उनको मना कर दें और तुमसे मुलाकात भी दुश्वार हो।

गर्नर — हां यह राय भी बहुत उमदा है।

जान्स — अच्छा मैं साहब को मना किये देता हूँ एक किराया की गाड़ी मँगवाओ हम तुम दोनों चलें।

हिदायतरसूल — मैं पहिले जाऊँगा और कहूँगा कि एक बैंकर बम्बई से आया हुआ है और हुज़ूर को क़र्ज़

देना चाहता है। अमीरहसनको हमेशा ऐसे आदमियों की तलाश रहती है, वह बहुत खुश होंगे और फ़ौरन् मुलाकात करेंगे इसका मैं बन्दोबस्त कर दूंगा कि मिस्टर अमीरहसन से अलहदा मुलाकात हो, और अलहदा मुलाकात ज़रूरही होगी मैंने आज सुबह को सुना था खुदा जाने कौन कहता था कि अब मेमसाहब ने पर्दा शुरू कर दिया है किसी के सामने नहीं आतीं।

बाब सैंतीसवां।

सौतिया डाह।

मिस्टर अमीरहसन की शादी से जो बम चख़ इटावे में मचा हुआ था वह नाज़रीन सुन चुके हैं इटावा के बाहर इस शादी ने जो२ मुसीबतें डालीं उससे कोई अभी वाकिफ नहीं। आगरे में सबसे पहले यह खबर तहसीलदार साहाब इटावा के खत से मालूम हुई और उसके दूसरे रोज़ पायोनियर ने उसकी तस्दीक की। नज़ीरहसन को इस खबर से गो बहुत ताज्जुब नहीं हुआ मगर अफसोस हदसे ज़्यादा हुआ। आज उनकी तमाम उमेंदें कि उनका भाई किसी न किसी दिन अपने पिछले तग़ाफुल पर नादिम होकर फिर आ मिलेगा बिल्कुल मुनकिता होगईं उन्होंने पहले इरादा किया कि फौरन घर में जाकर अपनी मां को यह खबर सुनायें और यूरोपियन बहूकी मुबारक बाद दें लेकिन यह ख्याल करके कि इस खबर वहशत-असर से सारे कुनबे में कोहराम मच जायगा सकूत किया। चन्द मिन्ट भी न गुज़रने पाये थे कि कोतवाल शेर खां घोड़ा दौड़ाते हुये एक बदहवासी की हालत में नज़ीरहसन के पास पहुँचे।

शेरखां — ताज़ा खबर आपने सुनी मैं अभी कप्तानसाहब के पास गया था उनके पास किसी अंगरेज़ की इटावा से चिट्ठी आई है।

नज़ीरहसन — हां मैं सुन चुका खुद मेरे पास तहसीलदार साहब का खत आया है। अफसोस!

शेरखां — मुझे अफसोस उस बेचारी के हाल पर है कि जिसकी तमाम उम्र की उमेदें और खुशियां आज मटियामेट होगईं। हाय सैयद साहब मर्हूम आज कब्र में कैसी बेचैनी के साथ तड़प रहे होंगे।

नज़ीरहसन — मैंने अब तक अम्मां जान और भाभीजान से इस अम्र को

इसला नहीं दी।

शेरखां—अच्छा किया, लेकिन कब तक आप चुप रह सकते हैं। खबर बद कहीं पोशीदा रह सकती है ?

नजीरहसन — मुझे उस दिन से इसका खौफ था जब वह अमीरहसन की तरफ़ से मुख्तार बनकर हिसाब फ़हमी को आई थी।

शेरखां — और तमाशा भी आपने सुना उस औरत का शौहर ज़िन्दा मौजूद है।

नजीरहसन — शौहर ज़िन्दा मौजूद है ! इस ग़ज़ब का कहीं ठिकाना है।

शेरखां —मैंने तहकीक सुना है कि वह आगरे आया था और उस औरत से मिला, औरत ने सख्त कजअदाई की और निकलवा दिया। वह बेचारा मायूस होकर लौट गया उसके दूसरे ही रोज़ मिसेज़ होल ने अपना असबाब और अंगड़ खङ्गड़ बेचबांच इटावा की राह ली।

नजीरहसन — यह और भी तरहुदअंगेज बात आपने सुनाई अगर वह नालिश कर दे तो बड़ा ग़ज़ब हो जायगा।

शेरखां — कौन कह सकता है कि वह चुपचाप इस मुसीबत को बर्दाश्त कर लेगा।

नजीरहसन — अगर वह यहां आया था तो इसमें कोई न कोई फिसाद जरूर शुदनी है।

शेरखां — मैं इस वक्त जाता हूं फिर आउँगा आपको अगर कोई जरूरी हालात मालूम हों तो मुझे फ़ौरन बुलवा लीजियेगा अमीरहसन हम लोगों को खुदाजाने क्या क्या रंज देंगे।

शेरखां के जातेही अमीरहसन अन्दर गये और अपनी मां से कुल किस्सा बयान किया। बेगम साहब ने ज़ार ज़ार रोना शुरू किया और रफ्ता २ यह खबर कुल घर में मुश्तहर होगई और चन्द मिनिट में कयामत मच गई। अमीरहसन की बीबी को यह हाल सुन्तेही ग़श पर ग़श आनी शुरू हुई और इस तरह बेचैन होकर वह बेचारी रोती थी कि देखनेवालों के दिल हिले जाते थे उसके समझ में तमाम दुनिया की दौलत लुट गई। उसका फला फूला बाग़ उजड़ गया और उसकेआरजूओं का खून होगया उसकी उमेदें खाक में मिल गईं।

अमीरहसन की बीबी—हाय मुझे

हर तरह तबाह कर गये मुझ बेवकूफ को दम दिलासे देकर सब ज़ेवर भी उठा ले गये वह भी उस हरामजादी के नज़र होगये । अरे मेरे मालिक मैं अपने बाप को कैसे मुंह दिखाऊंगी ।

अमीरहसन की मां इस वक्त तक ज़ेवर के किस्से से लाइल्म थीं । नज़ीर-हसन ने ज़ेवरवाली कहानी आजतक किसी से नहीं कही थी यहां तक कि अपनी बीबी से भी यह राज़ माख़फ़ी रक्खा था । अमीरहसन की बीबी की ज़बानी यह अलफ़ाज़ सुनकर सारा घर सकते के आलम में होगया ।

अमीरहसन की मां — बेटी ज़ेवर कैसा ? मेरे बेटे ने और कौनसी हर्कतें की हैं ! जो तुम जेवर के लेजाने का भी इलज़ाम लगा रही हो ।

अमीरहसन की बीबी — अम्मां मैं किसी पर इलज़ाम क्यों लगाने लगी अपनी हिमाक़त और अपनी क़िस्मत पर अलबत्ता इलज़ाम लगा रही हूं मुझे ऐसे झांसे दिये कि मैं उनके कहने में आगई और जो कुछ अम्मांजान का दिया हुआ ज़ेवर था मैंने सब उस रोज़ उनके हवाले कर दिया हाय अब मैं समझी वह ज़ेवर ही लेने आये थे ।

अमीरहसन की मा — और तुमने सब ज़ेवर हवाले करदिये और आज तक किसी से इस की ख़बर न की ? ।

अमीरहसन की बीबी — कौन ऐसी ख़ुश ख़बरी थी जो मैं सब से कहने बैठती माल सदका जानका हुआ करता है मुझे उस निगोड़े ज़ेवर की परवाह नहीं मगर रंज यह है कि मुझे धोखा दे गये ।

अमीरहसन की मां को उस रोज़ एक दम से दो दो सदमे पहुंचे एक तो अपने बेटे की हिमाक़त दूसरे बहू के ज़ेवर का ज़ाया होना इन दोनों बातों ने बुढ़ी बेगम साहबा के खर्मने-सब्र व करार पर बिजलियां गिरादीं नज़ीरहसन यह हालत देखकर सख्त परेशान थे वह लाख चाहते थे कि समझायें और गिरिया व ज़ारी बन्द करायें लेकिन उस कोहराम में उनकी सुन्ताकौन था । नक्कारखाना में तूती कीआवाज़ ।

नज़ीरहसन को ज्यादा अफसोस अपनी भावज के हाल पर था वह बेचारी इस दर्जा सितमरसीदा थी कि उसके लिये यह सदमा वाकई बहुत सख्त था ।

नज़ीरहसन — भावज आप क्यों रोती हैं ज़रा रंज न कीजिये आपका ज़ेवर मैं ले आया मेरे पास मौजूद हैं।

अमीरहसन की बीबी — मैं जेवर पहन कर क्या करूंगी हाय अब मुझे जेवर से क्या ताल्लुक रह गया भैया अब मुझे तुम भावज न कहो तुम्हारी भावज वह है जो तुम्हारे भाई के साथ है मुझे मेरे अब्बा के घर जाने दो खुदा के लिये आप मेरी मुश्किल आसान करो और मुझे मेरे घर जाने दो मैं यहां अब कैसे रहूं और किसकी हो कर रहूं।

नज़ीरहसन — आप ऐसे फ़हमीदा और समझदार आदमी से यह बातें ताज्जुब खेज़ हैं आपही इन्साफ कीजिये को इस शादी में आपका क्या नुक़सान हुआ जो आपकी हालत पहले थी वही अब है उसमें क्या फ़र्क़ आगया जो आप इस दर्जा रंजीदा हैं हां अगर मुझसे कोई आप की अतायत में तकसीर हुई हो तो बेशक आप नाराज हो सकती हैं।

अम्मांजान भाभी को समझाइये देखिये अपनी कैसी बुरी हालत बना रखी है।

अमीरहसन की मां — बेटा यह ज़ेवर वाला क्या किस्सा है ज़रा मुझसे भी बतलाओ वाह भैया अमीरहसन वाह! अच्छे २ गुल रोज खिलाया करते हो अल्ला उम्र दराज़ करे और कुछ न कहूंगी।

नज़ीरहसन — अम्मांजान ज़ेवर सब मेरे पास मौजूद हैं उसका ज़िकर इस वक्त नाहक किया जाता है।

मां — फिर क्यों इलजाम लगाते हो कि अमीरहसन ले गया था।

नज़ीरहसन — हाल यह है कि जब अमीरहसन उस रोज आये भावज का कुल ज़ेवर धोखा दे के ले भागे और इटावे में दस हज़ार रुपये को एक महाजन के हाथ बेच डाला। इटावा के तहसीलदार वालिद मर्हूम के बड़े दोस्त हैं उन्होंने फ़ौरन् मुझे तार दिया और मैं उस रोज़ इटावा गया महाजन को दस हज़ार रुपये देकर सब जेवर वापस लाया मेरे बक्स में बन्द हैं भावज ने यह हाल किसी से बतलाया नहीं इस वजा से मैंने भी अपनी तरफ से इसका तज़्किरा करके उन्हें रंजीदा करना नहीं चाहा जेवर मौजूद है और उन्हीं का

है उन्हीं के लिये मैं लाया वर्ना मुझे क्या गर्ज पड़ी थी जो इतनी दिक़्क़त और तकलीफ गवारा करके इटावा से वापस लाता ।

मां — सब ज़ेवर बेच डाला था ! वाह २ अच्छे गैरतदार पैदा हुये जिसे बीबी का ज़ेवर बेंचते शर्म न आई ।

अमीरहसन की बीबी — अब यह ज़ेवर मेरे काम का नहीं रहा मैं इसको हरगिज़ न लूंगी ।

मां — बेटी कैसी लड़कपन की बात कर रही हो क्या इस ज़ेवर में मैला भर गया जो तुम्हारे काम का न रहा ।

अमीरहसन की बीबी—अम्मां आप समझती नहीं यह ज़ेवर उस मेम ने ज़रूर पहना होगा उसका जूठा ज़ेवर मैं हरगिज हरगिज २ न पहनूंगी चाहे इसमें कोई मुझसे खफा हो या खुश ।

नज़ीरहसन—मेम उस वक़्त तक वहां थी ही नहीं और न ज़ेवर मेम के लिये गया था कहता तो हूं कि महाजन के हाथ ज़ेवरफ़रोख्त हुआ जिस रोज यहां से अमीरहसन भाई गये उसी रोज़ ज़ेवर बेचा गया और दूसरे ही दिन मुझे खबर हुई मैं रुपया देकर सब चीज़ वापस लाया मेम बेचारी से ज़ेवर से कुछ वास्ता नहीं ।

अमीरहसन की बीबी — अल्लाहरे कुल्क ! मेम बेचारी ! एक वह बेचारी एक आप के भाई बेचारे, अरे यह सब फिसाद उसी हरामज़ादी के हैं ।

अमीरहसन की बीबी इस सदमें से किसी तरह न पनप्ती थी न पनपी खाना पीना मुतलक़ तर्क कर दिया घर बार के काम काज को एक लख़्त छोड़ दिया अपने कमरे में हरवक़्त तनहा बैठना और रोना यही उनकी दो शगल थे ।

लख़्त दिल खाने को और खून जिगर पीने को । यह गिज़ा मिलती है जाना तेरे दीवाने को ॥

नज़ीरहसन और उनकी मा ने हर तरह अपनी प्यारी बहू को बहलाना चाहा मगर कोई तदबीर असर पज़ीर न होती थी और रोज़ बरोज़ उनकी हालत बुरी होती जाती थी एक दिन अमीरहसन की मां ने देखा कि उनकी प्यारी बहू बहुत ही लट गई और किसी तरह गिर्येवज़ारी से बाज नहीं आती उसवक़्त नज़ीरहसन को बुलवाया ।

मां — बैटा नज़ीरहसन, तुम्हारी भावज कुछ बीमार हैं उनकी हालत रोज बरोज़ ख़राब हो रही है किसी हकीम या डाक्टर को बुलवा कर दिखलाओ।

नज़ीरहसन — उन्हें इस सदमे ने हलाक कर रक्खा है, और कोई बीमारी नहीं है मैं अभी भावज के पास जाता हूं अगर हुक्म देंगी तो डाक्टर साहब को बुलवा भेजूंगा।

नज़ीरहसन अपनी भावज के पास गये देखा कि वाक़ई उनकी हालत बहुत ख़राब हो गई है न वह सूरत बाकी है और न वह शिगुफ़्तगी रोते २ आंखें सुफेद हो गई हैं और ऐसा मालूम होता हैं कि गोया बर्सों से बीमार है।

नज़ीरहसन भावज तुम्हारी क्या हालत हो रही है ख़ुदा के लिये अपनी जान पर रहम करो और अपनी तबियत को सम्हालो।

भावज — अब यात।

मरती हूं आरज़ू में मरने के।
मौत आती है पर नहीं आती॥
है कुछ ऐसीही बात जो चुप हूं।
वरना क्या बात कर नही आती॥
आगे आती थी हाल दिल प हँसी।
अब किसी बात पर नहीं आती॥

नज़ीरहसन — भाभी ख़ुदा के लिये अपना रंज दफ़ा करो और जिस तरह मुमकिन हो अपना दिल बहलाओ। यह सब मुसीबतें चन्द रोज़ा हैं और जो अमीरहसन के तरीके से वाकिफ़ है वह कह सकता है।

शैर।

चुना न मांद चुनीं नीज़ हम न ख़ाहद मांद॥

भावज — मुझे इसका कुछ रंज नहीं, मालूम नहीं आपही आप क्यों मेरी तबीयत बैठी जाती है मेरा दिल अपने अब्बाजान के देखने को बहुत चाहता है अगर इसी हालत में मरगई तो यह तमन्ना मेरे साथ क़ब्र में जायगी इस वास्ते अगर तुम मुझे चन्द रोज़ के लिये मेरे घर जाने दो तो मैं समझती हूं कि मेरी तबीयत भी बहल जायेगी और यह रंज भी भूल जायगा।

नज़ीरहसन — भाभीजान मुझे आपकी तामील इरशाद में ज़रा भी उज्र नहीं मगर आपही ख्याल कीजिये कि ज़माना मुझे क्या कहेगा सब यही कहेंगे कि भाई का दूसरा व्याह होते ही भावज को एक दिन रहना दुश-

वार कर दिया यह कोई न कहेगा कि आप खुद जी बहलाने गई सब मुझी-को इलज़ाम देंगे और मैं दुनियां में मुंह दिखाने के लायक न रहूंगा।

भावज — अगर तुम इस को ना मुनासिब समझते हो तो एक खत मेरे अब्बाजान को लिख दो कि वही दो एक रोज़ के लिये चलेआवें और मुझे अपनी दीदार दिखा जायें ज़िन्दगी का कोई एतबार नहीं सांस आई आई न आई न आई।

नज़ीरहसन — हां यह मैं खुशी से करूंगा आजही तार भेजता हूं और लिख दूंगा कि आप अलील हैं जिस्में जल्द आवें।

भावज — मेरे भाई ज़रूर तार दे दो मैं बेचारी किस काबिल हूं मगर ज़िन्दगी भर तुम्हारा एहसान मानूंगी।

नज़ीरहसन ने भावज के इरशाद की तामील में एक मिन्ट का भी तवक़ुफ नहीं किया और फौरन् मौलवी सैयद मुहमदअकरमखां बहादुर वज़ीर आज़म रियासत जूनागढ़ के नाम अरजेन्ट तार भेजा। मौलवी अकरमखां बहादुर एक निहायत बावज़ा आलीं मिनश और खान्दानी रईस थे। अपने दामाद के हालात गो मुफस्सिल उन्हें मालूम न थे मगर जिस क़दर उन्हों ने सुने थे उनके मलूल और मग़मूम करने को बहुत काफी थे अपनी बेटी से सैयद साहब को अज़हद मोहब्बत थी और सैयद काज़िम हुसेन खां बहादुर मरहूम के इन्तकाल के बाद बराबर अपनी बेटी के लिये सदहा तोहफा और ज़ेवर हमेशा भेजा करते थे उन्हे उसका बहुत ख्याल था कि अमीरहसन की नालायकी से कलसूमउलनिसा को कोई सदमा न पहुँचने पाये और बेचारी का दिल न टूटे।

नज़ीरहसन की सादत और नवाब सिकन्दरज़मा बेगम की मोहब्बत पर सैयद महम्मद अकरम को पूरा भरोसा था और यही सबब था कि बावजूद अमीरहसन के किता ताल्लुक के अपनी साहबज़ादी को आज तक ससूराल में रहने दिया था। जूनागढ़ एक ऐसा मुकाम है कि जहां आम तौर पर इस जवार व अतराफ़ के हालात वगैरह नहीं पहुँचते चुनान्चे सैयद अमीरहसन साहब की जदीद शादी की खबर भी उनकी मोअज़ज़िज़ खुसुरके कानों तक अभी नहीं पहुँची थी दफ़तन

सैयद नज़ीरहसन का तार अलालत अ-हलखाना अमीरहसन पहुँचतेही मौ-लवी साहब परेशान होगये इस दर्जा घबराये कि उनके होश हवास दुरुस्त न रहे फ़ौरन् नवाब साहब बहादुर से रुख़सत हासिल की और चार रोज़ ब-राबर शब व रोज़ सफ़र करके आगरे पहुँचे और सोधे सैयद काज़िमहुसेन खां साहब मरहूम के दौलतख़ाना पर तशरीफ़ ले गये । सैयद नज़ीरहसन मकान पर मौजूद थे जब मौलवी साह-ब पहुँचे नज़ीरहसन ने निहायत अद ब व ताज़ीम से अपने मोअज़्ज़िज़ मेह-मान को लिया ।

महम्मद अकरम — लड़की कैसी है पहले यह फ़र्माइये ।

नज़ीरहसन — आप घबरायें नहीं सब ख़ैरियत है अभी तक गो तबियत पूरी सहीह नहीं है लेकिन कोई ख़ौफ़-नाक हालत नहीं है ।

महम्मद अकरम — अलालत क्या है और किस का इलाज होता है ? ।

नज़ीरहसन — मुझे अलालत का हाल सुनाते हुये सख़्त रंज होता है स-च यह है कि अलालत कुछ भी नहीं सिर्फ़ रंज और ग़म की शिद्दत ने भावज की यह हालत कर दी ।

महम्मद अकरम — मियां अमीर-हसन के क़िस्से तो अब पुराने हो चुके यह अज़सरनौ रंज व ग़म पैदा होने के क्या असबाब हुये ? ।

नज़ीरहसन — क्या अर्ज़ करूं ।

महम्मद अकरम—फ़र्माइये इसमें कोई मुज़ायका नहीं मुझे सख़्त तरद्दुद हो रहा है ।

नज़ीरहसन — उन्हों ने हाल में एक मेम से शादी कर ली है ।

महम्मद अकरम — मेम से शादी करली ! ख़ूब ।

शेर ।

तो कारे ज़मीरांनिको साख़्ती ।
कि बर आस्मां नेज़ परदाख़्ती ॥

नज़ीरहसन — क्या अर्ज़ किया जाय यह भी मर्ज़ी इलाही है इन्सान का क्या दख़ल ।

महम्मद अकरम — हज़रत इसमें ख़ुदा की मरज़ी का क्या ताल्लुक़ अपे ने २ आफ़ाल अपने २ हरकात ।

आप बद कारी करें नाम लें अ-ल्लाह का । एकही ज़ात बाबरकात आदमज़ादकी ॥

अच्छा घर में ख़बर कर दीजिये

और पर्दा करा दीजिये मैं कुलसूम के पास जाना चाहता हूं।

नज़ीरहसन ने घर में जाकर पर्दा का इन्तज़ाम कर दिया और सैयदसाहब अपनी साहबजादी के कमरा में तशरीफ ले गये।

बाप—बेटी तुम्हारी क्या हालत हो गई अरे तू तो बिलकुल गुज़र गई।

बेटी — क्या कहूं अब्बाजान आज कल जैसी मेरी ज़िन्दगी के दिन कट रहे हैं इससे मौत बेहतर। अब्बा मैं अब बहुत दिन न ज़िन्दा रहूंगी, मुझे सिर्फ आपकी ज़्यारत की तमन्ना बाकी थी ख़ुदा का लाख २ एहसान है कि उसने मुझे आपको दिखलाया बस अब मैं ख़ुशी से मर जाऊंगी।

बाप —बेटी तू क्यों मुफ्त जान खो रही है, तू ज़रा रंज न कर ख़ुदा तेरी कुल मुसीबत को रफ़ा करेगा मैं इन मामलात को सुनकर अब इन्तज़ार नहीं कर सकता कलही इटावे जाकर हज़रत सलामत से मुलाकात करूंगा और सब बातों का रूबरू जवाब लूंगा मेरी बेटी को इस तरह जलाना और उसकी ज़िन्दगी बर्बाद करना हँसी खेल नहीं है।

बेटी — आप के जाने से कुछ फ़ायदा न होगा सिवा इसके कि आप को गुस्सा हो और रंज हो।

बाप तुम नादान हो यह बातें नहीं समझ सकती हो मैं जाकर कुल क़िस्से की एकसूई किये लाता हूं।

सैयद महम्मद अकरम साहब अपनी बेटी की लाग़री और अलालत देख कर बहुत घबरा गये और गो मुंह से कुछ नहीं बोले मगर उनके दिल में एक किस्म का यास सा पैदा होगयो वह बख़ूबी समझ गये कि मरज़दिल लाइलाज हुआ करता है।

यह हैं आज़ें तीनोंही जां गुसल।
मोहब्बत हुई दिक हुई सल हुई॥

सैयद साहब अपने दामाद की फैहमाइश के इरादे से आजम इटावा हुये, नज़ीरहसन ने मना भी किया कि आप का जाना बेमौका है शायद आपकी मुलाकात भी न हो सके लेकिन वह भला कब किसी की मानने वाले थे मुलाकात न होने के मज़मून पर बहुत हँसे और कहा कि भला यह भी मुमकिन है कि मैं जाऊं और मुझसे मुलाकात न करें।

नज़ीरहसन — मैं गया था मुझसे

मुलाकात नहीं की और साफ जवाब दिया।

महम्मद अकरम—अजी अगर मुझ से मुलाकात न करें तो वल्ला उस वक्त बँगले में घुस कर इतना मारूं कि मियां साहबज़ादे भी याद करें वह चपरासी जो मुझे बाहर रोके उसको तो शायद जानही बचे, चाहे पीछे को कत्ल के इलज़ाम में मुझे फांसी ही क्यों न हो जाय।

नज़ीरहसन — ख़ुदा नखास्ता इसकी नौबत क्यों आने लगी।

महम्मद अकरम—भाई तुम लोग अंगरेज़ी में रहते हो तुम्हारी हिम्मतें सर्द हो गई हैं हम लोग रयासत के बाशिन्दे अब तक ख़ून ख़राबा से ज़रा नहीं डरते।

नज़ीरहसन की तक़रीर से सैयद महम्मद अकरम के इरादे में कि अपने दामाद को समझावें और राह रास्त पर लायें कुछ फ़र्क़ न आया।

सिर्फ एक शब सैयद साहब आगरा में रहे नज़ीरहसन ने कोई दक़ीक़ा तवाज़ा तकरीम और मेहमानदारी का उठा नहीं रक्खा शेरखां कोतवाल व दीगर रऊसा व हुक्काम शहर सैयद साहब से मिलने आये और सब ने अमीरहसन के हालात का तज़किरा कर के तास्सुफ किया।

बाब अड़तीसवां।

ख़ूब गुज़रेगी जो मिल
बैठेंगे दीवाने दो।

सैयद महम्मद अकरम साहब बहादुर दूसरे दिन सुबह को आगरा से रुख़सत हुये और दस बजते २ इटावा पहुँच गये उन्हों ने तहसीलदार साहब इटावा को पहले से अपनी आमद की इतला बज़रिये तार दे दी थी इसलिये मौलवी मुकरम हुसेन निहायत उम्दा जोड़ी और फ़िटिन लिये हुये अपने मोअज़्ज़िज़ मेहमान की पेशवाई को स्टेशन पर मौजूद थे सैयद साहब ट्रेन में से उतरतेही तहसीलदार साहब से बग़लगीर हुये और बाद दर्याफ्त मामूली हालात ख़ैरवाफ़ियत मिज़ाज, किराया की गाड़ी में असबाब रखवा कर ख़ुद तहसीलदार साहब के साथ फ़िटिन में बैठे और तहसीलदार साहब ही के दौलतख़ाने पर फरोकश हुये रास्ता भर सैयदसाहब ने अमीरहसन का तज़किरा नहीं किया और न तहसील-

दार साहब ने उनका ज़िक्र छेड़ा—।

तहसीलदार साहब यह तो जान्ते ही थे कि अमीरहसन उनके दामाद हैं और इटावा आने का सबब सिवा उनकी मुलाकात के दूसरा नहीं हो सकता मगर चन्द मसलहतों से ख़ुद इसका ज़िक्र छेड़ना मुनासिब नहीं समझा सैयदसाहब ने मकान पर पहुँचकर दोकश हुक्का के खींचे एक गिलौरी पान खाई किसी क़दर कसल राह रफा हुआ।

महम्मद अकरम — क्यों जनाब तहसीलदार साहब आप जान्ते हैं कि हमारे नूर चश्म कहां मुकीम हैं

तहसीलदार — जी हां वाकिफ़ हूं पहले एक बड़ी कोठी में रहा करते थे मगर अब थोड़े दिन से तख़फ़ीफ़ पर कमर बांधी गई है इस लिये कचेहरी के करीब एक छोटासा बँगला किराया पर लिया है उस्में रहते हैं।

महम्मद अकरम — क्यों हज़रत इस ख़बर की कहां तक असलियत है कि उन्हों ने किसी फिरँगिन को घर में डाल लिया!

तहसीलदार — क्या जनाब को इसमें अब तक शुबहा है।

महम्मद अकरम — आख़िर इस लौंडे को क्या सूझी जो इस तरह इसने अपने बाप दादा के नाम को मट्टी में मिला दिया और ख़ुद ज़लील व ख्वार हो रहा है।

तहसीलदार — कुछ न पूछिये जनाब तमाम हिन्दुस्तानी अंगरेज़ अफ़सर और अमला उनके शाकी हैं यह नहीं कि ख़ुदानख़ास्ता राशी या बेइमान हों मगर इस दर्जा फरउन बेसामान होगये हैं और साहब लोग बने का ऐसा शौक आगया है कि इलाही तोबा, उसीने यह सब दिन दिखलाये देखिये आगे ख़ुदा क्या करता है।

महम्मद अकरम — मैं आज उनसे मिलने आया हूं।

नज़ीरहसन कहते थे कि तुम न जाओ मुलाकात न होगी मगर मैंने कहा मैं बेमिले न रहूंगा चलिये आप मुझे उन से मिला लाईये।

तहसीलदार — मुझे हमराह चलने में क्या उज्र हो सकता है लेकिन मुझे भी यह उमेद नहीं है कि वह डाइन हुजूर को उनसे मुलाकात करने दे।

महम्मद अकरम — लौंडे की म-

जाल है कि मुझ से मिलने में इनकार करे।

तहसीलदार — लड़का तो वाक़ई बहुत ठीक था मगर सोहबत बदने खराब कर रक्खा है।

महम्मद अकरम—फिर इस जनून का कोई इलाज भी मुमकिन है या नहीं। कुल सूम सख्त अलील है और इन मुतवहिश अखबार ने और भी उसको बीमार कर रक्खा है।

तहसीलदार—जनाब हम लोगों को भी उस बेचारी के हाल पर अफसोस है सच यह है कि नविश्ता तकदीर की किसी को खबर नहीं होती।

सैयद काज़िमहुसेन मरहुम ने लड़कों को कैसी अच्छी तालीम दिलाई बुरी सोहबत में एक लहज़ा बैठने नहीं दिया मगर उनके मरते ही तख्ता उलट गया।

सैयद महम्मदअकरम के इसरार से तहसीलदार साहब हमराह हुये और दोनों मुलाकाती अमीरहसन के नये फरोदगाह में पहुँचे, क्या देखते हैं कि हाता के बाहर एक और गाड़ी खड़ी है और मियां हिदायतरसूल और मिस्टर जान्स उसमें बैठे हुये हैं। तहसीलदार साहब को भी गाड़ी बाहर रूकी।

तहसीलदार—देखिये यही मियां हिदायतरसूल हैं जिन्होंने लड़के को खराब किया, मगर सुना निकाले गये।

निकलना खुल्द से आदम का सुन्ते आये थे लेकिन। बहुत बे आबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले॥

हिदायतरसूल ने भी सैयद महम्मद अकरम को फौरन पहचान लिया और जान्स से बतलाया कि अमीरहसन के खुसर नामदार यही बुजुर्ग हैं।

जान्स और हिदायतरसूल गाड़ी में से उतरे और सैयद महम्मद अकरम-साहब की गाड़ी के नजदीक गये।

हिदायतरसूल — आदाब बजा लाता हूं खुदा बन्द न्यामत।

महम्मदअकरम — बंदगी मिज़ाज शरीफ कहिये आप के सरकार बहादुर किस शग़ल में हैं।

हिदायतरसूल— हजूर मुझसे अब कोई तालुक नही और न मैं यहां रहता हूं।

तोड़ बैठे जबकि हम जामो सबू फिर हम से क्या। बादये गुलफाम

गर आठों पहर बरसा करे ॥

मुहम्मद अकरम — माशाअल्ला आप शायर भी हैं यह फर्माइये कि आप इस बज़्म से क्यों निकाले गये।

हिदायतरसूल — दो बादशाह दर अकलो में न गन जनद, जब एक लेडी साहबा दखिल दफ्तर हो गईं तो मुझ गरीब काले आदमी को कौन पूछता है इन हजरत से (जान्स की तर्फ इशारा करके) हजूर वाकिफ़ हैं यह उन मेम साहबा के बद नसीब शौहर हैं।

मुहम्मदअकरम—शौहर हैं! इसके क्या माने, क्या आप ने तिलाक दे दिया।

जान्स — नहीं जनाब मैंने तिलाक नहीं दिया जबर्दस्ती मेरी बीबी से शादी कर ले गये मैं उसकी चारा जोई करने आया हूं लेकिन अगर मैं अपना नाम और पता बतला कर मुलाकात करना चाहता तो शायद दुशवारी होती इस लिये एक बहाने से इतला करादी है साहब हाजरी पर हैं साढ़े ग्यारह बजे मिलने को हुक्म हुआ है खैरियत है आज तातील से मुलाकात हो जायगी।.

तहसीलदार— तो आप यहां चारा जोई के लिये तशरीफ़ लाये हैं।

जान्स—शायद आप भी इस शादी के बारे में गुफ्तगू करते आये हों।

मुहम्मदअकरम — भाई मुझे गुफ्त व शनूद से कुछ मतलब नहीं मेरी लड़की मुफ्त में हलाक हो रही है उसी के बारे में चन्द बातें करने आया हूं।

तहसीलदार — हाजरी के बाद इतला कराई जाय तो बेहतर होगा, सैयद साहब आप भी इन्तज़ार करें।

मुहम्मदअकरम — इतलाकी कुछ ज़रूरत नहीं चलिये अभी मुलाकात होती है।

मुहम्मदअकरम फौरन गाड़ी से उतरे और तहसीदार साहब को हमराह लिये हुये अन्दर बँगले के घुस गये सामनेवाले कमरे में मेज़ खाने का बिछा हुआ था उसी पर मेमसाहब और अमीरहसन दोनों बैठे हाज़री खा रहे थे।

मुहम्मदअकरम — अस्सलाम अलेकुम। यह सदाये बेहंगाम सुनतेही अमीरहसन ने आंख उठा कर देखा और एक सकते के आलम में हो गये।

मेम — (आहिस्ता) प्यारे यह कौन शख्स अन्दर घुस आया।

अमीरहसन — मेरी बीबी के वालिद।

महम्मदअकरम और तहसीलदार साहब दोनों कुर्सियों पर बैठ गये और अमीरहसन ने छूरी कांटे हाथ से छोड़ दिये और अपनी कुर्सी ज़रा खिसकाई अमीरहसन गो सुनग्गिस थे और हज़ार चाहते थे कि रुखाई से पेश आवें मगर सैयद महम्मद अकरम खां बहादुर की वजाहत और उनका रोआब ऐसा न था कि अमीरहसन मूंह से कोई खिलाफ़ बात निकाल सके अलावा इसके सैयदसाहब एक मज़बूत डण्डा भी हांथ में लिये हुये थे अमीरहसन पर इसका भी असर पड़ा।

अमीरहसन — जनाब कब तशरीफ़ लाये। और मैं क्यों सर्फराज़ किया गया।

महम्मदअकरम — तुमको मुझसे यह पूछते शर्म भी नहीं आती तुम्हारी हर्कतें इस काबिल नहीं कि मैं उनको सुनता और खामोश रहता।

अमीरहसन — मैंने अपने हिसाब कोई ऐसी हर्कत नहीं की जो आप के अताब का मस्तौजिब हूं।

महम्मदअकरम—तुमको गैरत नहीं आती कि इस कहबा को बग़ल में बिठलाये हो और यह कहते हो कि मैंने कोई हरकत नहीं की, मुझको इससे कुछ ग़र्ज़ नही तुम एक नही दस कुस्तियां पालो मगर यह बतलावो कुलसूम के लिये क्या कहते हो उसकी पर्वरिश कौन करेगा और उसकी ज़िन्दगी का कौन ज़िम्मेदार है।

अमीरहसन — मैं नही समझता कि आप एक लेडी की शान में किस हक़ से खिलाफ़ तहज़ीब अलफाज़ इस्तैमाल फर्मा रहे हैं, आप बुज़ुर्ग हैं और मैं आपका अदब करता हूं, बेहतर है आप उस अदब को क़ायम रखने में मुझे मदद दें और मुझे गुस्ताख़ न बनायें।

महम्मदअकरम — लेडी का अदब व ताज़ीम आप करें या आप के भाईसाहब करें मेरी जूती की नोक को किसी के अदब व ताज़ीम की गर्ज़ नहीं मेरे सवाल का जवाब दीजिये यह याद रखिये कि मेरी लड़की किसी ऐसे वैसे की नहीं है जिसको आप जिस्तरह चाहें रक्खें और जिस से जैसा चाहे सलूक करें अब तक आप सख्त ग़लती

पर थे जो आपने मेरी और मेरी लड़की की कदर न जानी।

अमीरहसन — मैं ज़रा वाक़िफ़ नहीं हूं कि आप का इन सवालात से क्या मतलब है।

महम्मदअकरम — मेरे सवाल ऐसे दकीक नहीं हैं जो आपके ख्याल शरीफ में न आवें यह बतलाईये मेरी लड़की की परवरिश और उसकी तन्दुरस्ती का कौन ज़िम्मादार है।

अमीरहसन — नज़ीरहसन उनकी उसी तरह परवरिश करेंगे जैसे पहले करते थे।

महम्मदअकरम—ज़ोफ है तुम्हारी औकात पर नज़ीरहसन पर तुम्हारा क्या हक़ है और तुम अपने बाप की कमाई भाई से अलग कर चुके जो कुछ माल का तरका मिला इन बीबीसाहब की नज़र हो चुका अब मेरी लड़की नज़ीरहसनकी खैरात पर नहीं रह सकती उसको आपके साथ रहना चाहिये आप की तनख्वाह से पर्वरिश पाना चाहिये या यहां रहेगी और अपना दर्जा लेगी जो खुदा ने और खुदा के कानून ने उसे दिया है और या आप से और आप के भाई से कुछ सरोकार नहीं जो निकाह के वक्त महर ते हुआ था हवाला कीजिये और हसब ज़ाबता तिलाक दीजिये वह समझेगी कि जीते जी आप मर गये और उसको तसकीन हो जायगी यह रोज २ का सदमा और नित नया रंज मैं अपनी बेटी को न बर्दाश्त करने दूंगा।

अमीरहसन — आप समझते हैं कि मेरा तर्ज़माशरत बिलकुल अँगरेज़ी है इस लिये उसका मेरे साथ रहना बिलकुल खारिज अज़बहस है।

महम्मदअकरम — आप का तर्ज़ माशरत आपको मुबारक और खुदा रोज़ बरोज़ उसमें तरक्की करे मुझे इस से कुछ बहस नहीं अगर वह आपके साथ नहीं रह सकती तो आप इसी वक्त बा ज़ाबता तिलाक दीजिये और महर हवाला कीजिये यह याद रखिये कि इतना महर नहीं है जो आप या आप के खान्दान की कुल जायदाद भी उसके अदा के लिये काफी हो।

अमीरहसन — मैं न तिलाक देता हूं और न महर अदा कर सकता हूं मेरे पास क्या है।

महम्मदअकरम — यह मनतिक आप की नहीं चल सकती दो में से ए-

क काम ज़रूर करना पड़ेगा अगर यों न कीजियेगा तो अदालत में करना पड़ेगा खुदा के सामने करना पड़ेगा ।

अमीरहसन — मुझे अफसोस है कि आप इस छोटी सी बात के लिये इस दर्जा बर्हम हैं हिन्दुस्तान में दूसरी शादी मायूब नहीं और मैं समझता हूं कि फी सदी नब्बे औरतें अपने शौहर से जुदा रहती हैं कोई सबब नहीं कि आप खाहमखाह मेरी मर्जी के खिलाफ़ मुझे अपनी बीबी के साथ रहने पर मजबूर करें आप माफ कीजिये मुझे साफ २ कहना पड़ा कि मेरी बीबी मेरे मज़ाक के मुताबिक नहीं पोलटीकल एकानोमी उनको नहीं मालूम सोशल अमूर में उनको अदराक नहीं अङ्गरेज़ी वह नहीं जान्ती मिवज़िक से वह बेबहरा, जब इस दरजा इख्तलाफ तावै हों तो क्यों कर इतबात मुमकिन है।

और।

मुमकिन नहीं इजतमाय ज़िद्दैं ।
तू बुत है मैं बन्दये खुदा हूं ॥

महम्मद्अकरम — एक अम्र और मैं आपसे बतलाये देता हूं यह नेकबख्त भी बहुत दिन आप को पोलटीकल एकानोमी में लेकचर नहीं दे सकती इनके शौहर साहब भी तशरीफ लाये हैं और दोही चार रोज़ में दस्तबदस्त दीगर व पायेबदस्त दीगरे बज़िल्लत व ख्वारी बिसयार इनको आपके यहां से जाना होगा ।

मिसेज़ अमीरहसन इस कुल तकरीर को निहायत ज़ब्त और सकूत से सुनती रहीं बूढ़े सैयदसाहब की हैबत इस दर्जा उसपर तारीं होगई कि एक लफ्ज़ भी मुंहसे न निकालसकी लेकिन शौहर वाला मज़मून सुनतेही उसके होश बिगड़ गये और इस मौके पर खामोशी उसने मुनासिब नहीं समझी ।

अमीरहसन — झूठ महज़ झूठ ।

मेम — इत्तिहाम । इत्तिहाम । झूठ । बिलकुल झूठ मेरा शौहर कब्र से वापस नहीं आ सकता ।

महम्मद अकरम — लानत अल्ला अलेउलकाज़बीन तुम दोनों को कुछ जनूं हो गया है मैं झूठ बोलने वाला आदमी हूं ? इस्तग़फर अल्ला ।

अमीरहसन — जनाब आप से जिसने यह किस्सा बयान किया महज़ झूठ कहा और झख मारा मेरी बीबी एक बेवा लेडी थी उसका शौहर मुद्दत हुई मर गया ।

महम्मद अकरम — आप की बीबी बेवा औरत नहीं है यह उसका मकर व फरेब था उसका शौहर जिन्दा मौजूद है और इस अहाता में मौजूद है। तहसीलदार साहब आप बुला क्यों नहीं लाते।

अमीरहसन — आपको मेरे मकान में आकर इस तरह हुल्लड़ मचाने का कुछ हक नहीं है।

महम्मद अकरम — मियां साहबज़ादे आप जिस तरह चुपचाप रहे हैं वैसेही बैठे रहिये और जो मैं कहूं सुनिये जो हुक्म दूं तामील कीजिये वर्ना यह डन्डा है और आप, मुझे क्या, इस ज़िल्लत से बढ़कर जो आपने दे रक्खी है कोई और बेआबरूई नहीं हो सकती मुझे अपनी ज़िन्दगी जान व माल या किसी की परवाह नहीं ख़बरदार आप मुंह से कुछ न बोलिये (तहसीलदार की तरफ मुख़ातिब होकर) जाइये साहब आप बुला क्यों नहीं लाते —

तहसीलदार साहब बाहर गये और चन्द मिनट में मय हिदायतरसूल और मिस्टर जान्स के लौटे।

मेम — प्यारे शौहर इन सब लोगों ने तुम्हारा दिल मेरी तरफ से फीका करने को यह सब मज़ामीन अफ्तरा किये हैं और सब झूठ है।

महम्मद अकरम — मिस्टर जान्स तुम्हीं अपने खुदा और ईसामसीह को दरमियान देकर ईमान से कहो कि यह औरत तुम्हारी जोरू है या नहीं।

जान्स — यह औरत जिसका नाम एलिस गर्नर है मेरी जोरू है और चुनार में पादरी साहब ने इसका अक्द मेरे साथ किया इसका बाप गर्नर और पादरी जिसने निकाह पढ़ा और वह तमाम लोग जो शादी में शरीक थे इस बात के गवाह हैं यह ख़तूत हैं जो शादी के पेश्तर इसने मुझे लिखे थे यह तसवीर है जो शादी के बाद इसकी और मेरी खींची गई थी।

अमीरहसन — मैं इन सब बातों की असलियत को हर्गिज़ यकीन नहीं कर सकता मेरी बीबी ने कभी मुझसे आपका ज़िक्र नहीं किया और अगर इसकी कुछ असलियत होती तो वह कभी मुझसे न छिपाती।

हिदायतरसूल - जनाब इस कदर जल्दी से काम न लीजिये बड़ी मुशकिलों से मैं जान्स साहब को लाया हूं अक्ल से काम लीजिये।

मेम — (रोकर) प्यारे यह सब इलज़ामात फ़र्ज़ी और बेबुनियाद हैं मैंने इस शख़्स की तमाम उम्र कभी सूरत नहीं देखी और न मैं जानती हूं कि यह कौन है ।

जान्स — एलिस अपने साथ इस बेखता और बेअक़्ल जेन्टिलमैन को मत डुबोओ, देखो यह वही तस्वीर है या नहीं जो चुनार के फ़ोटोग्राफ़र ने शादी के रोज़ खींचा था और जिसको ख़ुद तुमने एक दोस्त को चुनार में दिया था।

मेम—मैं ख़्वाब में भी चुनार कभी नहीं गई और न मेरा कोई ग्रूप चुनार में खिंचा था झूठ है झूट है और बिलकुल झूठ है (रोकर) प्यारे यह सामान सब लोग तुमको मुझसे जुदा कराने के लिये कर रहे हैं क्या तुम इन सब के बहकाने में आजाओगे और मुझे छोड़ दोगे हाय वग़ैर तुम्हारे मैं कैसे जीऊंगी क्योंकर जिन्दा रहसकूंगी।

अमीरहसन — प्यारी तुम मत रंज करो मैं ख़ूब समझता हूं कि यह सब बनाई हुई बातें हैं।

शेर।

चर्ख़ को कब यह सलीका था सितमगारी में। कोई माशूक़ है इस परदए ज़नगारी में ॥

महम्मदअकरम — तुम इन काग़ज़ात को अपनी आंख से देखकर उस की निसबत राय कायम करो देखो हूबहू तस्वीर मिलती है या नहीं।

जान्स — यह देखिये ग़लत कहदेना आसान है मगर कोई शख़्स जिसको ख़ुदाने ज़रा भी अक़्ल दी है वह इन ख़तूत की असलियत से इन्कार नहीं कर सकता।

मेम — प्यारे अब इन सब को रुख़सत करो मैं बीमार से बदतर हो रही हूं क्या तुम्हारे साथ व्याह करने का मुझे यही फल मिलेगा क्या तुम्हारी मुहब्बत का मुझे यही इनाम है।

अमीरहसन — अब बराह इनायत आप लोग तशरीफ़ लेजाय और मेरी बीबी की तबियत सम्हलने दें।

जान्स — मुझे रूख़सत होने में क्या उज़्र है लेकिन मैं आपको आगाह किये देता हूं कि मैं आपके ऊपर भी फ़ौजदारी में नालिश करूंगा और आपकी लेडी साहबा पर भी।

अमीरहसन — शौक से —

शेर। तुमको वस्वाह है कोई ज़ुल्म

न बाक़ी रह जाय। हौसले दिल के निकालो कि न अर्मान रहे॥

मिस्टर जान्स अगर हम लोग ऐसी-ही गीदड़ भबकियों में आजाया करें तो फ़िर उस वक्त जिसका जी चाहे पराई लेडियों को अपनी जोरू बतला दिया करे। हुज़ मैं ऐसी बातें यक़ीन नहीं कर सकता।

मुहम्मदअकरम — (जान्स से) साहब आप मेरे साथ चलिये मैं इसमें आपकी मदद करूंगा और इस नेक बख़्त को इस बेवफ़ाई की सज़ा दिलाऊंगा।

सैयद मुहम्मदअकरम, तहसीलदार साहब, जान्स और हिदायतरसूल बग़ैर किसी दूसरे लफ़्ज़ के बँगले से बाहर निकले।

सैयद मुहम्मदअकरम — (हिदायतरसूल और जान्स से) आप लोगों को अगर तकलीफ़ नहो तो मेरे साथ चलिये इस मामले में मश्विरा किया जाय कि अब क्या कार्रवाई करनी चाहिये मैं हर तरह आपका शरीक हूं रुपये पैसे की पर्वाह न कीजिये ख़ुदा का दिया मेरे पास बहुत है मगर इस बदज़ात को बग़ैर सज़ा दिलाये न छोड़िये। अख़ारी कहवा॥ किस तरह आपसे तजाहुल आर्फ़ाना कर रही है।

हिदायतरसूल — जनाब मेरे पास वह समान मौजूद है कि यह औरत आजही जेलख़ाने न जाये तो मेरा ज़िम्मा।

तहसीलदार — फिर क्या है चलिये मश्विरा करके कोई तदबीर निकाली जाय।

सैयद मुहम्मदअकरम — मियां हिदायतरसूल अगर इस काम में आप मेरी मदद करेंगे तो मैं आपको हर तरह ख़ुश करूंगा हज़ार दो हज़ार की मुझे पर्वाह नहीं, अलबत्ता इस नालायक़ और नादान छोकरे को इस बलासे अलग करने की मुझे फ़िक्र है, और जब तक यह डाइन जेलख़ाना न जायगी इस छोकरे की अक़्ल दुरुस्त न होगी।

———ooo———

बाब उन्तालीसवां।

इस्तग़ासा।

मिस्टर अमीरहसन के पास से वापस आकर तहसीलदार साहब के मकान पर सब लोग बैठे किवाड़े बन्द हुये और तख़लिये में मश्विरा शुरू हुआ, जान्स के

पास जिसक़दर सबूत इस बात के मौजूद थे कि मिसेज़ अमीरहसन इसकी व्याहता जोरू है सब ने कमाल ग़ौर और इस्तक़लाल से मुलाहज़ा किये।

तहसीलदार — जनाब इसमें कुछ शक नहीं कि यह औरत जान्स साहब की बीबी है इसका इनकार महज़ वाहियात है और इस मज़बूत शहादत के मुक़ाबले में कोई अदालत उसको क़बूल नहीं कर सकती।

सैयद महम्मद अकरम — आप शौक से नालिश दायर कीजिये यक़ीनी कामयाब हूजियेगा।

हिदायतरसूल — मगर अमीरहसन बेक़सूर है हर्गिज़ इस राज़ से वाकिफ़ नहीं।

सैयद महम्मदअकरम — बेक़सूर सही लेकिन जब उनको वाकिफ़ करने की कोशिश कीजाय और वह उससे फ़ायदा न उठायें तो इलज़ाम से क्योंकर बरी हो सकते हैं।

हिदायतरसूल— क़िबला व काबा इस वक़्त आप गुस्से में हैं ज़रा ग़ौर फ़र्माइये आप क्या कह रहे हैं और उसका नतीजा क्या होगा।

तहसीलदार — मेरे नज़दीक भी अमीरहसन को इस बला में मुबतिला न कीजिये सिर्फ़ मिसेज़ अमीरहसन पर नालिश होनी चाहिये।

सैयद महम्मदअकरम — अच्छा वह आप वाला मज़मून तो बतलाइये, हिदायतरसूल ने पहिले सब से क़स्में लीं कि किसी से राज़ अफ़शा हो। और उसके बाद कलकत्ते के पार्सी जौहरी के यहां से ज़ेवरात की चूड़ी वाला अफ़साना मुफ़स्सिल बयान किया और कहा कि वह सब ज़ेवर मिसेज़ अमीरहसन के क़ब्ज़े में मौजूद हैं।

सैयद महम्मदअकरम — मगर यारमन इसमें तुम भी फंसे हो।

हिदायतरसूल — इसी वजह से मैंने अबतक इसका तज़किरा नहीं किया अब हुज़ूर की कारीगरी इसीमें है कि मुझे बचाइये और उस बदज़ात को फँसाइये।

तहसीलदार — एक तरह हिदायतरसूल बच सकता है। चलिये हम सब लोग इस वक़्त कलेक्टर साहब के यहां चलें और उन से मुफ़स्सिल हाल बयान करके हिदायतरसूल को सरकारी गवाह बनवादें और अदाय शहादत के वादे पर उसकी ख़ता माफ़ करादें।

सैयद मुहम्मदअकरम — आपको यक़ीन है कि कलेक्टर साहब मान जायंगे।

तहसीलदार — मुझको पूरा यक़ीन है कि कलेक्टर साहब यह तजवीज़ खुशी से क़ुबूल करेंगे वह खुद मिसेज़ अमीरहसन से नाराज़ हैं और अमीरहसन के सर से यह बला छोड़ाना चाहते हैं वह मुझ से कई मर्तबा इसका तज़किरा फ़र्मा चुके हैं लेकिन कोई तदबीर कारगर नहीं हुई है।

सैयद मुहम्मदअकरम — और अगर न माना तो हिदायतरसूल की आबरू मुफ़्त गई।

जान्स — अगर साहब न मानेंगे तो हम हिदायतरसूल को एक हज़ार रुपया देंगे वह सजा भुगत कर चले आवेंगे।

सैयद मुहम्मदअकरम — मैं दो हज़ार देने को तयार हूं।

हिदायतरसूल — जनाब सुनिये आबरू बड़ी चीज़ है मैं आप लोगों के लिये अपनी इज़्ज़त व आबरू को खाक में मिला रहा हूं पांच हज़ार रुपये मुझे मिलने चाहियें अगर मैं क़ैद हो जाऊं तो पांचो हज़ार मेरे, अगर आप लोगों की सिफ़ारिश के मुताबिक़ मेरी माफ़ी होजाय तो सिर्फ़ दो हज़ार मैं लूंगा तीन हज़ार देने को मौजूद हूं बहालत सज़ा तुम सब लेलेना वर्ना दो हज़ार वापस देना और एक हज़ार रख लेना।

जान्स — दो हज़ार मैं दूंगा बहालत सज़ा सब तुम्हारा, वर्ना निस्फ़ वापस करना।

मौलवी हिदायतरसूल पांच हज़ार पर अफ़शा राज़ को मुस्तैद थे, तहसीलदार और सैयद मुहम्मदअकरम को पूरा यक़ीन था कि मिस्टर माबेल उनकी सिफारिश पर अमल फ़र्मावेंगे तहसीलदार साहब उस वक़्त ज़ामिन हो जावेंगे हमारे दोस्त हिदायतरसूल पराई बदशगूनी को अपनी नाक कटाने को मुस्तैद।

सैयद मुहम्मदअकरम — फिर देर क्या है बिस्मिल्ला, किराया की गाड़िया मँगवाइये और कलेक्टर साहब के यहां तशरीफ़ ले चलिये।

तहसीलदार — खाना तो खा लीजिये, आज सुबह से सिवा एक प्याली चाय के और कुछ आपने मुंह में नहीं दिया।

सैयद महम्मदअकरम — हज़रत तरद्दुद में खाना पीना कुछ नहीं सूझता लौट कर इतमीनान से खाना खायेंगे।

जान्स — मैं भी सख्त भूखा हूं दो चार बिसकुट हो तो मुझे दीजिये और ऐक प्याली चाय।

तहसीलदार—खाना तयार है खा लीजिये कुछ देर न होगी।

चपरासी जब तक बज़ार से गाड़ी लाये तब तक हमलोग खा पी कर तैयार रहेंगे। तहसीलदार के इसरार से खाना मँगवाया गया सैयद महम्मदअकरम, मौलवी मकरमहुसैन, और हिदायतरसूल ने एक साथ और मिस्टर जान्स ने मेज़ पर अलहदा खाना तनावल किया एक २ गिलोरी पान खाये हुक्का पिया इतने में किराये की गाड़ियां भी आ मौजूद हुई और यह काफ़िला फिर रवाना हुआ तहसीलदार साहब पहले चपरासीसे मिले और चार रुपया उसके नज़र करके दर्खास्त की कि साहब से सिर्फ मेरी इत्तला करदो मिस्टर माविल उस वख्त दफ्तर के कमरे में बैठे कुछ काम कर रहे थे।

चपरासी — तहसीलदार साहब हाज़िर हैं, कुछ ज़रूरी काम है।

मिस्टर मावेल — आने दो।

तहसीलदार ने झुक कर तसलीम अर्ज़ की और कुर्सी पर बैठ गये।

मिस्टर मावेल — वेल तहसीलदार खैरियत है ? इस वक्त आप कहां चले ?

तहसीलदार —सैयद महम्मदअकरम खां बहादुर वज़ीरआज़म रियासत जूनागढ़ और मिस्टर जान्स हुज़ूर को सलाम को आये हैं और बाहर खड़े हैं सैयद महम्मदअकरम को हुज़ूर जानते होंगे।

मिस्टर मावेल — वही महम्मदअकरम जिसकी लड़की अमीरहसन को ब्याही है।

तहसीलदार — हां खुदावन्द न्यामत।

मिस्टरमावेल — और जान्स कौन शख्स है।

तहसीलदार — उस मेम का खाविन्द जो अमीरहसन को ब्याही गई है।

मिस्टर मावेल— उसका खाविन्द ! नहीं साहब आप कैसी बातें करता है।

तहसीलदार — हुजूर को मुफस्सिल हालात उन्हीं की ज़बानी मालूम होंगे मेरा अर्ज़ करना फजूल है।

मिष्टरमावेल — अच्छा बुला लाइये हम खुशी से मिलेगा।

तहसीलदार सैयद महम्मदअकरम और मिष्टरजान्स को अंदर ले गये हिदायतरसूल अभी बाहर खड़े हैं, साहब कलेक्टर ने दोनों साहबों से हाथ मिलाया और बहुत इखलाक से बैठाया।

मिष्टर मावेल— वेल सैयद साहब बहादुर, हमको आपके दामाद के हाल पर बहुत अफ़सोस है मगर वह हमारा कहना कुछ नहीं मानता न अब तक इम्तिहान पास किया और न काम अपना अच्छा करता है कमिश्नर साहब उससे बहुत नाराज़ है।

सैयद महम्मदअकरम — हुजूर उस नालायक ने तमाम खान्दान का नाम डुबो दिया, यह देखिये मिष्टर जान्स साहब हैं इन्हीं की बीबी से हाल में शादी की है, डूब मरने की बात है।

मिष्टर मावेल मिष्टरजान्स क्या यह वाकई बात है।

जान्स — हां साहब बिलकुल सच बात है।

जांसने अपने कुल कागज़ात सार्टिफ़िकेट शादी के और जो कुछ सबूत उन के पास थे और गवाहान की फिहरिस्त सब दिखलाई साहब ने एक घंटा कामिल किसी से कोई बात न की वही कागज़ात देखते रहे।

मिष्टर मावेल — मुझको आप के साथ निहायत हमदर्दी है और आपकी हालत पर सख्त अफ़सोस है आप की बीबी ने आपके साथ बड़ी बदसलूकी की।

जान्स— मैं आपके सामने मुस्तग़ीस की हैसियत से हाज़िर हुआ हूं और चाहता हूं कि आप मेरा बयान तहरीर फर्मा कर बाजाब्ता कार्रवाई कीजिये।

मिष्टर मावेल—आप मिष्टर अमीरहसन को मुद्दालह करना चाहते हैं।

जान्स — बेशक वह भी मेरे मुद्दालेह हैं मैं आज इन सब जेन्टिलमेनों के साथ उनके पास गया था और चाहता था कि उनको कुल कागज़ात दिखला कर उनकी ग़लती से आगाह

करूं मगर उन्होंने मेरी बात तक नहीं सुनी और मुझसे बहुत बुरी तरह पेश आये।

मिष्टर मावेल—वेल मैं कोई वजह नहीं देखता कि आप क्यों उनका नाम न शामिल करें, बेशक मेरे लिये यह निहायत अफसोसनाक मुकद्दमा होगा क्योंकि अमीरहसन से मुझको बवजा उनके बाप के निहायत मुहब्बत है मगर मजबूरी है।

सैयद महम्मद्अकरम—अमीरहसन की मेम के पास वह मसरूका जेवर भी मौजूद है जो आपको ख्याल होगा कलकत्ते से एक शख्स ने पार्सी जौहरी को धोखा देकर साल डेढ़ साल हुआ चुराया था और जिसका किस्सा अखबारों में भी छपा था।

मिष्टर मावेल—आप का मतलब उस चोरी से है जिसमें एक शहजादी पालकी में बैठ कर दूकान पर गई थी और पीछे को मालूम हुआ कि वह तवायफ थी।

सैयद महम्मद्अकरम—जी हां मगर हजूर से एक इनायत मैं चाहता हूं, देखिये बुड्ढे आदमी की दर्खास्त है नामञ्जूर न कीजियेगा।

मिष्टर मावेल—वेल सैयद साहब मैं हर तरह आप की दर्खास्त मंजूर करने को तैयार हूं।

सैयद महम्मद्अकरम—जिस शख्स ने यह चोरी की उसको हजूर सर्कारी गवाह करार देदें और उसकी खतामाफ करदें तब मुकद्दमें में शहादत कामिल दस्तयाब हो सके गी और माल भी बरआमद हो जायगा।

मिष्टर मावेल—क्या ऐसे जबर्दस्त चोर को माफ करना आप के नजदीक मुनासिब होगा।

सैयद महम्मद्अकरम—मैं उससे वादा कर चुका हूं और हुजूर मेरे वादे को बेइज्जत न करें दर असल वह शख्स चोरीपेशा भी नहीं है इसी मेम की फर्माइश से उसने चोरी की थी।

मिष्टर मावेल—अच्छा वह शख्स कहां है आप बुलवाइये अगर सही २ और सच २ सब हालात बतला देगा तो हम उसको जरूर माफी देदेंगे और सर्कारी गवाह बना देंगे हिदायतरसूल अन्दर बुलाये गये।

मिष्टर मावेल—वेल तुम चोरी किया है?।

हिदायतरसूल—खुदावन्द न्यामत

हां मगर मिसेज़ अमीरहसन जो पहिले अपने को मिसेज़ स्टील कहती थी उसके सिखलाने से ।

मिष्टर मावेल — तुम कलकत्ते गया ।

हिदायतरसूल — हुजूर पहले मिसेज़ स्टील मुझे पटना ले गईं वहां मुझे सब तदबीरें बतलाईं मैं फिर उसके हमराह कलकत्ते गया चोरी की और कुल ज़ेवर मेम साहबा के हवाले करदिया, उसमें का एकपैसा भी अगर मैंने लिया हो तो सुअरके बराबर है।

मिष्टर मावेल — और वह सब ज़ेवर कहां है ?

हिदायतरसूल — सब मेम साहबा के पास हैं इस वक्त बरामद हो सकता है ।

मिष्टर मावेलने मुफस्सिल में इज़हार हिदायतरसूल का तहरीर करके हस्ब जाबता उसको माफ़ी का वादा तहरीर फ़र्माया और मिष्टर जान्स का भी इज़हार कलमबन्द किया और उसीवक्त दो मुकद्दमे कायम किये एक मिसेज़ अमीरहसन पर हस्ब दफा (४११) पिनल कोर्ड याने दाख़ल माल मसरूक़, और दूसरा मिष्टर व मिसेज़ अमीरहसन दोनों पर हस्ब दफा (४८४) व $\left(\frac{१०८}{४८४}\right)$ पिनल कोर्ड याने अज़्दवाज मुकर्रर ।

मिष्टर मावेल — अच्छा अब आप लोग तशरीफ़ ले जायं हिदायतरसूल तुम यहां रह जाओ हम तुम से कुछ और काम लेगे । तुम बड़ा खुशनसीब है जो सैयद साहब की सिफ़ारश लाया वर्ना तुम बहुत सख्त सज़ा पाता ।

हिदायतरसूल — हुजूर अगर सैयदसाहब न आते तो इस मुकद्दमें की इत्तला भी फिरिश्ते खां को न होती इसपर ज़ोरसे कहकहा पड़ा और सैयद साहब व तहसीलदार साहब दोनों रुख़सत हुये ।

मिष्टर मावेल – वेल सैयद साहब हमको उमेद है कि आप रहें और आप से फिर मुलाकात होगी ।

सैयद महम्मदअकरम — हां जब तक यह सब मरहले न तय हों मैं यहां मुकीम हूं और हुजूर में सलाम को हाज़िर होता रहूंगा । बशर्ते कि नागवार ख़ातिर न हो ।

मिष्टर मावेल — हर्गिज़ नागवार नहीं होगा बल्कि निहायत खुशी होगी (जान्स से मिष्टर जान्स आप कहां ठहरे हैं ? ।

जान्स — भूतवाले बँगले में।

मिष्टर मावेल — ओ भूतवाले बँगले में ! आप भूत से नहीं डरते, अच्छा आप कल कचहरी में ग्यारह बजे आइयेगा अगर मिष्टर गर्नर यहां आप के साथ हों तो उन्हें भी लेते आइयेगा और गवाहों की तलबी का हुकुम पीछे से जारी कर दूंगा।

जान्स मैं यहां बिलकुल अजनबी हूं और किसी वकील या बैरिष्टर को भी नहीं जानता अगर इजाज़त दीजिये तो मैं इलाहाबाद से कोई बैरिष्टर बुलवा लूं।

मिष्टर मावेल — कल रोबकारी नहीं होगी सिर्फ़ इब्तदाई तहकीकात है, उस के बाद हम एक तारीख़ मुकर्रर कर देंगे तब आप ज़रूर बैरिष्टर लाइयेगा कल किसी वकील या बैरिष्टर की एहतियाज नहीं है।

जान्स रुख़सत हुये और सब अपने २ घर गये।

मिष्टर मावेल उस वक्त हिदायतरसूल को साथ लिये हुये सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस के बँगले पर पहुँचे और उनसे कुल हालात बयान किये-- सुपरिन्टेन्डेन्ट को भी जवाहरात की चोरी वाला मज़मून सुन कर बहुत खुशी हुई उनने हिदायतरसूल से मुफस्सिल हालात दोबारा सुने।

सुपरिन्टेन्डेन्ट — तुमको खूब यकीन है कि वह सब ज़ेवर इस वक्त तक मिसेज़ अमीरहसन के कब्ज़े में मौजूद हैं ?।

हिदायतरसूल — आज दस बजे तक उसके कब्ज़े में थे और इस वक्त भी है मगर हुजूर को फ़ौरन् तलाशी ले लेना चाहिये वर्ना फिर मिसेज़ अमीरहसन मय ज़ेवरात ग़ायब हो जायगी।

मिष्टर मावेल — ग़ायब हो जायँगी ! यह क्या कहते हो।

हिदायतरसूल — हुजूर बात यह है कि आज उनको मलूम हो गया कि जान्स शहर में मौजूद है और मुकद्दमा दायर करने वाला है रात को जब अमीरहसन सो जायेंगे आजही वह कहीं भाग जाँयेगी इस लिये बेहतर यह है कि हुजूर उनकी निगरानी का इन्तज़ाम कर दें।

सुपरिन्टेन्डेन्ट — यह शख्स बड़ा होशियार और अक्लमन्द है बहुत अक्ल की बात इसने कही।

मिष्टर मार्वेल — अभी तो इतनी होशियारी से कलकत्ते में चोरी कर लाया और आज तक किसी को पता न चला।

सुपरिन्टेन्डेन्ट — तुम कितने रोज़ मिसेज़ अमीरहसन के साथ रहा।

हिदायतरसूल— मैं उसको बहुत दिनों से जानता हूं जब वह पहले पहल आगरे में आई उस वक्त मुझ से मुलाकात हुई थी।

सुपरिन्टेन्डेन्ट - तुम जानते हो यह किसकी लड़की है?

हिदायतरसूल— मुझे खूब मालूम है, गर्नर की लड़की है और इसी जान्स की जोरू है जो अब दावीदार हुआ है लेकिन मियां अमीरहसन जानते हैं कि सरजान गार्डन की बेटी है और होलकी बेवा है। गर्नर का नाम चंदे मेमसाहब ने बर्सफर्ड बतलाया और रिश्तेदारी से इन्कार किया मगर मुझको पहलेही मालूम हो गया था, गो अमीरहसन आज तक नहीं जानते। हुजूर अमीरहसन इतने सीधे आदमी हैं कि यह औरत अगर उनसे दिन को रात कह देती है तो वह रात यकीन कर लेते हैं और रात को दिन कहे तो दिन मान लेते हैं।

साहब सुपरिन्टेन्डेन्ट और कलेक्टर साहब दोनों सर जान की बेटी वाले मजमून पर बहुत हँसे।

कलेक्टर — मेरे नज़दीक यह शख्स सच कहता है, शायद मिसेज़ अमीरहसन रात को भाग जाय इसलिये आजही तलाशी होनी चाहिये।

सुपरिन्टेन्डेन्ट— हां मुझे इस राय से इत्तफ़ाक है चलिये अभी तलाशी ले लें और अगर माल बरामद हो जाय तो फ़ौरन् कलकत्ते को तार दे दें जौहरी को मय चन्द गवाहों के वहां से बुलवायें, हिदायतरसूल सब लोगों के नाम जानताही है वेही तलब कर लिये जायँगे।

हिदायतरसूल— हुजूर उस रंडी को ज़रूर बुलवायें जो शहज़ादी बन कर पालकी में बैठी थी।

सुपरिन्टेन्डेन्ट— वह कहां है?

हिदायतरसूल— मैं समझता हूं पटने में है, या शायद कलकत्ते में हो, कुन्दन उसका नाम है।

सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस ने सवार भेज कर कोतवाल शहर, दो हेडकान्स्टिबिल, नवाब महम्मदहुसैन खां और

काज़ी सिकन्दरअली रज़सा को उस वक्त बुलवा भेजा, बीस मिनिट में सब लोग आ गये। नवाब मुहम्मद हुसेनखां और काज़ी सिकन्दरअली सख्त घबराये हुये थे कि क्या होनेवाला है किसी को समझ में न आता था कि यह बेवक्त की तलबी क्यों हुई है, सवार से हर्चन्द दर्यापत किया वह भी कोई काबिल इतमीनान जवाब न दे सका उससे इस कदर ज़रूर दर्याफ्त हुआ कि साहब मैजिस्ट्रेट भी सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब के बँगले पर मौजूद हैं और हिदायतरसूल भी है इस से इज़्तेराब और वहशत में तरक्की हुई, असल मामला खाक भी हल न हुआ। अब सब लोग पहुँच गये उस वक्त साहब कलेक्टर ने मुख्तसर अलफ़ाज़ में कुल हालात बयान किये और यह फ़र्माया कि क़ानून के रू से दो तीन रईसों का तलाशी के वक्त होना लाजमी है इस वास्ते आप लोगों को तकलीफ़ दी गई है।

मिस्टर मावेल की ज़बानी यह सुन लेने कि सैयद अमीरहसन के घर की तलाशी होनेवाली है सब लोगों को एक सात्रा सा होगया, मगर कोई क्या कर सक्ता था 'हुक्म हाकिम मर्ग मुफ़ाजात' का मज़मून था।

मिस्टर मावेल और सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस अपने टमटम पर सवार हुये। हिदायतरसूल पीछे था, नवाब मुहम्मदहुसेन, और काज़ी सिकन्दरअली, और रज़्ज़बअली व महेशानन्द हेड कान्स्टिबिलान नवाब साहब की गाड़ी में थे और अशादतहुसेन कोतवाल अपने घोड़े पर। सब लोग मिस्टर अमीरहसन के बँगले पर पहुचे।

बाब चालीसवां।

तलाशी।

आज मिस्टर अमीरहसन बहुत खफ़ा हैं जामें से बाहर हुये जाते हैं चपरासी पर अलग अताब है खिदमतगार पर जुदा बला नाज़िल है कि सैयद मुहम्मदअकरम वग़ैर इत्तला कोठी में कैसे घुस आये।

चपरासी— हुज़ूर मैं पेशाब करने बाहर चला गया था इस दर्मियान में वह आ गये।

खिदमतगार — मैं उस वक्त बावर्चीखाने में था मुझे क्या खबर कि कौन आता है कौन जाता है।

मेम — मगर तुम निमकहराम लोग, इन कमीने आदमियों को निकाल क्यों नहीं दिया ।

चपरासी — निकाल कैसे देते हुज़ूर ने उनका डंडा भी देखा था, इतना मारते कि हम भी याद करते ।

खिदमतगार — हुज़ूर मेरा कुछ कसूर नहीं मैं तो यहां थाही नहीं पीछे से आया ।

मिसिज़ अमीरहसन बराबर रो रही थीं, हिचकियां बधी हुई थीं और अमीरहसन बेचारे अपनी रूठी हुई बीबी को मना रहे थे, कभी रूमाल से आंसू पोंछते थे कभी खुद पानी लाकर मुंह धुलाते थे, मगर मेम साहबा के मिज़ाज का थर्मामिटर सिवा चढ़ने के उतरने का नाम ही नहीं लेता था ।

अमीरहसन — आखिर इस हालत में कबतक रहोगी और अपनी जान नाहक क्यों हलाक कर रही हो ।

मेम — प्यारे आखिरकार सब ने मिलकर तुमको मुझसे अलहदा कर दिया ।

अमीरहसन — तुम क्या बक रही हो भला ऐसी बेहूदा और झूठी बातों को मैं यक़ीन कर सकता हूं यह मुमकिन है कि इन चालाकों की चालाकियां मुझ पर असरपज़ीर हो सकें ? लाहौल विलाकूवत अल्ला बिला, मैं दूधपीता बच्चा नहीं हूं मेरे भी अक्ल है कहां जान्स भिखमंगा कहां तुम अमीरज़ादी ! प्यारी मुझे ज़रा भी इन लग़वीयात का एतबार नहीं हुआ तुम इसका कुछ ख्याल न करो मुझे सिर्फ रंज इस बात का है कि तुम्हारे सामने ऐसी वाहियात बातें इन पाजियों ने कीं और तुमको रंज दिया ।

मेम — मुझे अपने रंज का कुछ ख्याल नहीं मुझे रह २ कर यही सदमा होता है कि तुम अपने दिल में क्या कहते होगे ।

अमीरहसन — मैं कसम खाता हूं तुम यक़ीन करो कि मैं ज़रा भी इन लग़वियात को बावर नहीं करता और न इनसे मेरी उस मोहब्बत में जो मुझको तुम्हारे साथ है कुछ भी फ़र्क आ सकता है ।

मेम — तुमने देखा निमकहराम हिदायतरसूल भी दुश्मनों की फ़ौज में शामिल होगया ।

अमीरहसन — हां मैंने देखा ।

निमकहरामों से ऐसी हर्कतें सर्ज़द हो-तीही हैं इसका भी ख्याल फ़ज़ूल है ।

मेम — देखिये यह खौफ़ है कि हिदायतरसूल कहीं और फसादात न खड़े करे ।

अमीरहसन — और फसाद वह क्या खड़े कर सकता है? मिसेज़ अमी-रहसन ने इरादा किया कि अपने शौ-हर से ज़ेवरात की चोरी का अफ़साना बयान कर दें मगर फिर ख़ुदा जाने क्या सोचकर चुप रह गईं। दस ग्यारह बजे से तीन बजे तक बराबर मिसेज़ अमीरहसन रोती रहीं और अमीरहसन समझाते रहे लेकिन कुछ भी गिरिया व ज़ारी में फ़र्क न आया। इतने में गा-ड़ियों की गड़गड़ाहट और घोड़ों के टापों की आवाज़ ने ख़बर दी कि कुछ लोग और आ रहे हैं।

अमीरहसन — चपरासी ! देखो हमारी मेम साहब की तबीयत अच्छी नहीं है इस वास्ते हम किसी से मिल-ना नहीं चाहते जो कोई मुलाकाती आवे उसका टिकिट मत लो और साफ़ कह दो कि आज फुर्सत नहीं है दर्वा-ज़ा बन्द है।

चपरासी — साहब कलेक्टर और कप्तान साहब आ रहे हैं।

अमीरहसन — साहब कलेक्टर और कप्तान साहब !!

चपरासी — हुज़ूर हां, और बहुत आदमी उनके साथ है।

अमीरहसन घबरा कर बाहर नि-कल आये और कलेक्टर साहब के ह-मराहियों में हिदायतरसूल को देख कर घबराये कि कोई न कोई ताज़ा मुसीबत नाज़िल हुआ चाहती है।

मिस्टर मावेल — गुड आफ़टर नून।

मि॰ अमीरहसन — हाउ डू यू डू।

सुपरिण्टेण्डेण्ट — गुड मार्निङ्ग ।

अमीरहसन — मुझे अफसोस है कि आज मेरी बीबी की तबीयत बहुत नासाज़ है इस वजह से मैं आप लोगों को घर में नहीं ले जा सकता।

मिस्टर मावेल — (हँस कर) माफ़ कीजिये हम लोग मिसेज़ अमीरहसन से शौकिया मिलने नहीं आये हैं बल्कि एक सर्कारी काम में उनकी मुलाकात दर्कार है, वह किसी हालत में हों हम लोग मिलने से बाज़ नहीं रह सकते।

अमीरहसन — अच्छा मैं अपनी बीबी से इत्तिला करता हूं।

मिस्टर मावेल — मैं आपको उनके

पास तनहा इत्तिला करने न जाने दूंगा बल्कि हम सब लोग साथ चलेंगे।

अमीरहसन—मगर यह निहायत सख्ती और बेरहमी की बात है मेरी बीबी ने कोई क़ुसूर नहीं किया जो इस सलूक की सज़ावार हो।

मिस्टर मावेल—शायद अभी आप को मालूम नहीं जो जो हर्कतें आपकी बीबी ने कर रक्खी हैं, चन्द मिनिट में आपको मालूम हो जायँगी और उस वक्त आप इसका फ़ैसला करेंगे कि हम लोगों का बर्ताव मुनासिब था या ग़ैर मुनासिब। मिस्टर मावेल और सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस मय जुमला हमराहियों के अन्दर बँगले के चले गये। मिसेज़ अमीरहसन इन सब आदमियों को देखतेही सख्त परेशान होगई और ताज़ा मुसीबत के ख़ौफ़ ने पिछली मुसीबतों को बिल्कुल भुला दिया हिदायतरसूल पर निगाह पड़तेही मिसेज़ अमीरहसन के दिल में कुल पर्दा फ़ाश होगया और वह यह जान गई कि हो न हो यही चूड़ियां पैरों में बेड़ियां डलवावेंगी।

अमीरहसन मिस्टर मावेल तुमसे कुछ सर्कारी तौर पर बातें करना चाहते हैं देखो जो दर्याफ्त करें जवाब दो मुझे मुतलक मालूम नहीं कि वह कौन बात है।

मिसेज़ अमीरहसन—मगर मैं इस वक्त सख्त बीमार हूं और मेरे हवास ठिकाने नहीं, क्या मिस्टर मावेल कल नहीं आ सकते?।

मिस्टर मावेल—नहीं मैडम, हम लोग आजही वह ख़िदमत अंजाम देना चाहते हैं चाहे आपको कैसाही नागवार हो, आप हिदायतरसूल को जानती हैं?।

मिसेज़ अमीरहसन—हां मैं खूब जानती हूं मेरे शौहर का एक निमकहराम मुलाज़िम था मैंने उसको मौकूफ़ कर दिया मिस्टर मावेल मौकूफ़शुदा नौकरों की बात पर एतबार नहीं होना चाहिये।

मिस्टर मावेल—आपके पास कुछ हीरे की अँगूठियां और चूड़ियां हैं?।

मिसेज़ अमीरहसन—हां मेरे बाप की दी हुई अँगूठियां और चूड़ियां हीरे की मेरे पास मौजूद हैं।

मिस्टर मावेल — मैं आपके साथ चलूं बराह मेहर्बानी वह चूड़ियां और अँगूठियां निकाल लाइये।

नवाब मुहम्मदहुसेन ख़ां और क़ाज़ी